मज़हब ए अहले सुन्नत यानी

मस्लके आला हज़रत का बेबाक तर्जुमान

नोव्हेम्बर-दिसम्बर 2014
जिल्द नं. : 1, शुमारा: 6-7

हुज्जतुलइस्लामबनामे

माहनामा सुन्नी आवाज़
नागपूर

चीफ़ ऐडिटर
मौलाना सैय्यद मुहम्मद हुसैनी
अशरफ़ी मिस्बाही

: ऐडिटर :
सैय्यद मुहम्मद अज़ीज़ुल्लाह हुसैनी ताहिर अशरफ़ी

: कमपोज़र :
मुहम्मद सलाहउद्दीन वास्ती

मस्लके आला हज़रत अकाबिरीने अहले सुन्नत की नज़र में

* मेरा मस्लक शरीअत व तरीक़त में वही है जो आला हज़रत मौलाना शाह अहमद रज़ा बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह का है।
(सैय्यद शाह अली हुसैन अशरफ़ी मियां)
* दीने इस्लाम व मज़हबे इस्लाम का सच्चा खुलासा मस्लके आला हज़रत है।
(शेरे बेशए अहले सुन्नत मौलाना मुफ़्ती हशमत अली ख़ान)
* मैं मस्लके अहले सुन्नत पर जिन्दा रहा और मस्लके अहले सुन्नत वही है जो मस्लके आला हज़रत है।
(मुबल्लिगे इस्लाम मौलाना अब्दुल अलीम मेरठी)
* इस में शक नहीं कि आला हज़रत का मस्लक बिल्कुल हक़ है और जो उनके तरीक़े पर है वही ठीक है।
(मलेकुल उलमा मुफ़्ती ज़फ़रुद्दीन बिहारी)
* फ़क़ीर का और फ़क़ीर के आबाओ अजदाद का वही मस्लक है जो मस्लके आला हज़रत कुद्दसिर्रहु का है।
(अल-बरकात मौलाना मुफ़्ती सैय्यद अहमद क़ादरी)
* आला हज़रत के मस्लक व तहक़ीक़ात में किस का ज़ेहरा है जो जुरात लब कुशाई कर सके।
(मुफ़्तीए आज़म दहली मौलाना मज़हरुल्लाह नक़्शबंदी)
* वो मेरा मुरीद नहीं जो मस्लके आला हज़रत के ख़िलाफ़ है।
(मौलाना मुफ़्ती अहमद सईद काज़मी)
* मेरा जो मुरीद मस्लके आला हज़रत से ज़रा भी हट जाए तो मैं उसकी बैत से बेज़ार हूं।
(एहसानुल उलमा मौलाना मुफ़्ती सैय्यद शाह मुस्तफ़ा हैदर हसन)

प्रिंटर, पबलीशर, प्रोपराईटर मौलाना मुहम्मद सैय्यद हुसैनी अशरफ़ी मिस्बाही ने शम्सिया प्रिंटिंग प्रेस, गांजाखेत, नागपूर से छपवा कर दफ़्तर ''माहनामा सुन्नी आवाज़'', मुहल्ला गांजाखेत, नागपूर से शाए किया।
e_mail : mail@sunniawaz.com Contact No. : 09422146796

नोट : कानूनी चाराजोई की सूरत में सिर्फ़ नागपूर कोर्ट को ही हक़ हासिल होगा। अहले क़लम के बाज़ मज़ामीन से इदारे का इत्तेफ़ाक़ ज़रूरी नहीं।

بسم اللہ الرحمن الرحیم

الصلوٰۃ والسلام علیک یا رسول اللہ ﷺ

नंबर	मज़ामीन	मज़ामीन निगार	पेज
1	मस्लके अहले सुन्नत की सनद	मौलाना सैय्यद मुहम्मद हुसैनी अशरफ़ी मिस्बाही	3
2	तौहीद व शिर्क	मुफ़्ती सरदार अहमद रज़वी, मेलसी, पाकिस्तान	12
3	पच्चीस सवालात	सैय्यद फ़रीदुलहसन चिश्ती, अजमेर शरीफ़	16
4	मुश्रिक कौन? (किस्त नं. 4)	मुहम्मद आक़िब ख़रबे क़ादरी सक़्क़ाफ़ी (शाफ़ई) मालेगांव	37

अल्लाह के करम से ''सुन्नी आवाज़'' को ख़ालिस ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की ख़ुशनूदी और मस्लके आला हज़रत की तरवीज व इशाअ़त के लिए जारी किया जाता है। जिसने अपनी इशाअ़त के 30 साल मुकम्मिल कर लिए हैं।

जो हज़रात माहनामा ''सून्नी आवाज़'' (उर्दु)या(हिन्दी) हासिल करना चाहते है वह अपना पूरा पता पिनकोड के साथ इस नम्बर (**09561080392**) पर (**S.M.S**) करे या ऑफिस के पते पर भेजदे। अपने पते के आगे (उर्दु)या(हिन्दी) जारूर लिखें।

Sunni Awaz Nagpur
Old Bhandara Road, Ganjakhet,
Nagpur-440018. (Maharashtra)
Cell : 09561080392

www.sunniawaz.com mail@sunniawaz.com

मस्लके आ़ला हज़रत

मस्लके अहले सुन्नत की सनद

अज़ : मौलाना सैय्यद मुहम्मद हुसैनी अशरफ़ी मिस्बाही, चीफ़ एडिटर : माहनामा सुन्नी आवाज़, नागपूर

"दीने इस्लाम व मज़हबे अहले सुन्नत का सच्चा व मुख़्तसर खुलासा मस्लके आ़ला हज़रत है। यही वो मूजमअ़ अल-बहार है, जो आज हंफ़ियत व शाफ़िअ़त, मालकियत व हंबलियत और क़ादरियत, चिश्तीयत व सोहरवरदियत व नक़्शबंदियत व मुजद्दिदीयत व बरकातियत व अशरफ़ियत वग़ैरहूम सब समुन्दरों का संगम है।" (इरशाद—मज़हरे आ़लाहज़रत शेर बेशए अहलेसुन्नत अलैहिर्रहमा)

ईमामुल मुनाज़िरीन, मज़हरे आ़ला हज़रत,शेरे बेशए अहले सुन्नत हज़रत अ़ल्लामा मौलाना हश्मत अ़ली ख़ान साहब क़ादरी रज़वी ने जो इरशाद फ़रमाया, वो बिल्कुल सही और हक़ है। अब उनके बाद मेरा मज़मून शेरे बेशए अहले सुन्नत अलैहिर्रहमा के मज़कूरा बाला इरशादे गिरामी की तफसील व तश्रीह है। बरैलवी मस्लक या मस्लके आला हज़रत की इस्तेलाह गुमराह मूरतद फिरक़ो और उनके नामनेहाद अद्दूआए हंफ़ियत व सुन्नीयत से मुम्ताज़ करने के लिए 125 साल से ज़ाईद अर्से से राईज है। अब तक हज़ारों अ़रब व अ़जम के अकाबिर व मोअ़तमद व मुस्तनद, मरजअ़ आ़लिम, उलमाए किराम और करोड़ों अ़व्वाम व ख़्वासे अहले सुन्नत में राईज है। सभों ने इसको हक़ जाना और सुन्नीयत व हंफियत बल्कि सही इस्लाम व दीने हक़ की पहचान के लिए इसी मस्लक को माना और जाना और वो इसी पर क़ायम हैं।

हंफ़ियत के नाम पर मस्लके वहाबियत व देवबंदियत और इसी हंफ़ियत के नाम पर क़ादयानियत व नेचरीयत व सुलह कुल्लीयत जैसे मुर्तद व बेदीन मसालिक वजूद मं आचुके थे। हंफ़ियत व सुन्नीयत के ख़द व ख़ाम को मिटा कर रख दिया था। बनामे हंफ़ियत सैलाबे कुफ़्र व इरतेदाद इतना तेज़ था कि हक़ीक़ी हंफ़ीयत व सुन्नीयत को ख़त्म करके रख दिया था और अपने खुदसाख़्ता अ़क़ाईद व नज़रयात को जारी कर दिया था। डर था कि मस्लके हंफ़ियत बल्कि चारों बरहक़ मस्लक को ही यह काफ़िर व मुर्तद ख़त्म ना करदें। आ़ला हज़रत मुजद्दिदे आ़ज़म सैय्यदना ईमाम अहमद रज़ा बरेलवी क़ुद्दसिर्रहु का एहसान है कि अ़क़ाईदे इस्लाम और चारों मस्लक पर कुफ़्र व इल्हाद व बेदीनियत की तेज़ आंधी के ज़रिए बिगाड़ पैदा करने की जो कोशिश की गई थी, जो ग़ुबार उड़ाया गया था, उसे साफ़ करके खरा—निखरा, चमकदार दीन और मस्लके हंफ़ियत व सुन्नीयत

को पेश किया। इसी लिए ज़मानए दराज़ से ना सिर्फ़ हिन्द बल्कि दुनिया के मरजअ़ व मोअ़तमद अकाबिर उलमाए अहले सुन्नत ने गुमराह, मुर्तद मस्लको के मुक़ाबिल चारों बरहक़ मस्लकों और अहले सुन्नत के तशख़्ख़ुस को बरक़रार रखने के लिए इसे मस्लके आ़ला हज़रत से मअ़रूफ़ कर दिया। अब यहां चारों मस्लकों का तशख़्ख़ुस मस्लके आ़ला हज़रत से बरक़रार है। हंफ़ियत,शाफ़िअ़त, मालकियत, हंबलीयत के नाम पर जितने गुमराह मुर्तद फ़िरक़े उठे थे, बरेलवी मस्लक या मस्लके आ़ला हज़रत कहने से वो फ़ना हो गए और इसी नाम से मस्लके हक़ की शिनाख़्त हो गई।

अगर कोई यह कहे कि, हंफ़ी हू। तो यह सवाल बाक़ी रहता है, यह कौनसा मुद्दुअ़ए हंफ़ियत है? देवबंदी, हंफ़ी या क़ादयानी, हंफ़ी, मौदूदी, सुलहकुल्ली व नेचरी वग़ैरह मुद्दुआने हंफ़ीयत व सुन्नीयत ख़ारिज हो गए। दीन व मज़हब में फ़ितने के ज़माने में जिन अईम्मा, उलमा ने ख़िदमते दीन अंजाम दे कर दीन व मज़हब को सैक़ल किया, दीन व मज़हब उनके नाम से मअ़रूफ़ हुआ, उन्हें ईमाम कह क पुकारा गया। जैसे ईमाम ग़ज़ाली, ईमाम राज़ी वग़ैराहुमा। इन हज़रात को ईमाम या उनके दीन व मज़हब की तरफ़ इशारा करके अहले सुन्नत के तशख़्ख़ुस को बरक़रार रखने के लिए अपने आपको उनके मस्लक का हामिल क़रार दे लेना ही ऐन दीने इस्लाम है। आपने अपनी हंफ़ीयत व सुन्नीयत की हिफ़ाज़त करली। इसी लिए शहज़ादए मुहद्दिसे आ़ज़मे हिन्द हज़रत शेख़ूल इसलाम अल्लामा मदनी मिया साहब ने फरमाया : " अब कोई अश्अराह से हो या मातूरीदीयह हनफी है या शाफई मालीकी हो या हम्बली वह सही तौर पर मस्लके अहले सून्नत की रौशनी मे बरेलवी है। (माहनामा सून्नी आवाज़ १९९७)

आप क़रूने अव्वल से लेकर आज तक तारीख़े इस्लाम का मुताल्ला कीजिए तो यह बात रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो जाती है कि हर दौरमें अ़क़ाईदे बातिलाके हामीलीन व आ़मिलीन के ख़िलाफ़ दीन व मज़हब उसूल व अ़क़ाईद में हिफ़ाज़त और अपने ईमान व अ़क़ीदे की सलामती के लिए अपने आपको किसी ज़ात से या किसी शहर की तरफ़ मंसूब किया गया, जो ज़माने में दीन व ईमान की हिफ़ाज़त के ज़ामिन कहलाए। वरना आ़म मुसलमान इन मुद्दईयाने इस्लाम के दावए ईमान व इस्लाम और इनकी ज़ाहिरी चमक व दमक की वजह से गुमराहियत व कुफ़्र व इरतेदाद में मुब्तला हो जाते। अगर यह ज़रूरी ना होता तो चारों मस्लक और अ़क़ाईद में दो मस्लक, मस्लके मातुरीदी और मस्लके अशअ़री वजूद में ना आते। हालांकि इस वक़्त अजल्ला सादातेकिराम व अहले बैते अतहार मौजूद थे। हज़रत सैय्यदना अ़ली बिन मूसा रज़ा 303 हि., सैय्यदना ईमाम मूसा रज़ा बिन हज़रत जाफ़र काज़िम रज़ा 183 हि., हुजूर सैय्यदना ईमाम जाफ़र सादिक़

148 हि., हुज़ूर सैय्यदना ईमाम बाक़र व हुज़ूर सैय्यदना ईमाम ज़ैनुलआबिदीन 94 हि. से बढ़ कर अहले बैत में कौन हो सकता था। इन हज़रात की मौजूदगी में ग़ैर अहले बैत अईम्मा का मस्लक कैसे राईज हुआ? मज़कूरा हज़रात के मरातिब से उम्मत अच्छी तरह वाक़िफ़ है। हिदायत व रहनुमाई के लिए मज़कूरा हज़रात की ज़ाते मुक़द्देसा काफ़ी नहीं हैं। इन्हीं मज़कूरा और अव्वलुल अ़ज़म हज़रात हर तरह की अ़ज़मत के हामिल अहले बैते अतहार की औलादे तैय्यबात बाद में मस्लके हंफ़ीयत की मुक़ल्लिद कहलाई। बल्कि इन हज़रात ने फ़ख़्र फ़रमाया। अगर कोई मस्लक अ़ली बिन मूसा रज़ा या मस्लके काज़मी या मस्लके जाफ़री या मस्लके बाक़री या मस्लके आ़बिदी या मस्लके हुसैनी का मुक़ल्लिद कहलाए तो क्या यह निजात के लिए काफ़ी नहीं था? यक़ीनन इन हज़रात की तरफ़ निस्बत करना निजात के लिए काफ़ी हैं। फीर क्यु सय्यैदना ईमामे आज़म अबू–हनिफ़ा सय्यैदना ईमामे शाफ़ई सय्यैदना ईमाम अहमद बीन हम्बल व सय्यैदना ईमामे मालीक व सय्यैदना ईमामे अबू मनसूर मातूरिदी व सय्यैदना अबूल हसन अशअ़री की तरफ मनसूब करते हुए मस्लके हंफ़ी, मस्लकेशाफ़ई, मस्लके मालकी हम्बली, मस्लके मातरीदी व मस्लके अशअ़री वजूद में आए कि जिन मस्लकों और मज़हबों पर उम्मत के बड़े–बड़े औलियाए किराम, अग़वास व अक़ताब, बदला व नजबा व फुक़हा व मशाईख़े उलमा, आ़मतुल मुस्लिमीन क़ायम हैं और इन मज़हबों और मस्लकों पर फ़ख़्र करते हैं। कोई कह सकता है कि, "**मस्लके जाफ़री व बाक़री वग़ैरह मसालिक हक़ पर नहीं हैं?**" यक़ीनन यह मस्लक हक़ हैं और मदारे निजात हैं। लेकिन इन्हीं हज़रात का नाम ले कर गुमराह मुर्तद फ़िरक़े पैदा हुए। हमारे अईम्मए अरबआ़ व अईम्मए फुक़हा और उलमा का एहसाने अ़ज़ीम है कि सही ख़द व ख़ाल को पेश करने के लिए और अ़क़ाईद की दुरूस्तगी और निजाते आख़ेरत के लिए ख़ूब मेहनतें कीं। उम्मत को हंफ़ी, मालकी,शाफ़ई, हंबली, मातरीदी व अशअ़री मसालिक पर इज्माअ़ हो गया, जिस पर उम्मत के अकाबिर औलियाए किराम समेत बड़े–बड़े फुक़हा, अग़वास, अबदाल, अक़ताब, अईम्मा व उलमा इन्हीं के मस्लकों पर क़ाएम रहे और खुद इस पर चले और उम्मत को इन्हीं पर चलने की तलक़ीन व ताकीद फ़रमाते रहे। हालांकि हमारे अईम्मए अरबआ़ और हज़रत ईमाम अबू मंसूर मातरीदी और हज़रत अबुल हसन अशअ़री वही फ़रमाते जो हुज़ूर सैय्यदना ईमाम हुसैन व सैय्यदना ईमाम ज़ैनुल आ़बिदीन व सैय्यदना ईमाम बाक़र व सैय्यदना ईमाम जाफ़र सादिक़ व सैय्यदना ईमाम ज़ैद मज़लूम इरशाद फ़रमाचुके हैं। इस के बावजूद हुसैनी मस्लक, आ़बिदी मस्लक, बाक़री मस्लक, ज़ैदी मस्लक व जाफ़री मस्लक का नाम उम्मत में राईज नहीं है। क्या मज़कूरा मसालिक नजात के लिए काफ़ी नहीं हैं?

चूंकि इन मसालिक के नाम ले कर गुमराह व बदमज़हबों और मुरतदों ने दीन के अंदर अ़क़ाईदे इस्लामिया के ख़िलाफ़ नए–नए फ़ितने पैदा किए। इस लिए उनसे अपने आप को मुमताज़ करने के लिए तक़लीदे अईम्मए अरबआ़ को वाजिब क़रार दिया गया। इसी तरह जब हन्फ़ीयत व मालेकियत व हंबलीयत वशाफ़ईयत व मातरीदीयत और अशअ़रीयत ने अ़क़ाईदे बातिला को छांट कर गुमराहियत व बे दीनियत से मुमताज़ कर दिया। जिस ज़ात ने यह फ़रीज़ा अंजाम दिया, उस ज़ात की तरफ़ अपने आपको मंसूब करना हंफ़ीयत व शाफ़ईयत, मालेकियत, हंबलियत, मातरीदीयत व अशअ़रीयत पर क़ाएम रहने के लिए ज़रूरी हो गया।

इस सिलसिले की एक कड़ी हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़ेसानी शैख़ अहमद सरहिन्दी हैं। तारीख़ का क़ारी जानता है कि, अकबरी दौरेइलहाद में जब सुन्नियत व हंफ़ीयत के नाम पर दीने इलाही क़ाएम करके दीने मतीन में फ़ितना बरपा किया। उस वक़्त असल मज़हब पर क़ाएम रहने के लिए अपने आपको मस्लके मुजद्दिद का हामिल कहलाना या सिर्फ़ मुजद्दिदी होने का यक़ीन दिलाना काफ़ी था। उस वक़्त किसी ने यह नहीं कहा कि, ''**यह पाँचवां मस्लक है या मुजद्दिदे अल्फ़ेसानी ईमाम हैं या मैं मस्लके ऐतेदाल पर क़ाएम हूं।**'' जिस तरह जामिआ़–निज़ामिया, हैद्राबाद के उलमा का मस्लक है।

मस्लके मुजद्दिदी से मुराद, उस ज़माने में मज़हबे अहले सुनत हंफ़ी व मातरीदी ही मस्लक मुराद लिया जाता था। उससे कोई नया दीन, नया मज़हब मुराद नहीं लिया जाता था। इसी तरह फिर जब मस्लके हंफ़ीयत व सुन्नीयत के नाम पर दीने हंफ़ीयत के ख़िलाफ़ फ़ितना बरपा किए गए। यहां तक कि मुल्के हिन्द में अंग्रेज़ों का तसल्लुत हुआ और उस में वहाबी, देवबंदी, नेचरी, क़ादयानी वग़ैरह मसालिक वजूद में आए ओर सब ने हंफ़ी बन कर अपने मनघड़त बातिल व कुफ़्री अ़क़ाईद से दीन में फ़ितना बरपा किए। उनके अ़क़ाईदे बातिला से बचने, अ़क़ाईदे इस्लामिया पर पाबंद रहने और निजाते आख़ेरत के लिए मज़कूरा गुमराह, मुरतद, बेदीन फ़िरक़ों और मस्लकों से अलग रहने के लिए अ़रब व अ़जम के अकाबिर अईम्मा व मुस्तनद उलमा व फुक़हाए किराम ने मस्लके आ़ला हज़रत या मस्लके बरेलवियत जैसे अलफ़ाज़ सही और इस्लामी तशख़्ख़ुस को बरक़रार रख कर मस्लके हंफ़ीयत को मआ़रूफ़ किया और उसी को मदारे निजात जाना। अब यह अलफ़ाज़ दीन व सुन्नीयत व हंफ़ीयत व शाफ़ईयत व मालेकीयत व हंबलीयत व मातुरीदीयत व अशअ़रीयत के लिए अ़लामती निशान बन गए। एक मरतबा फिर हज़रत अ़ल्लामा मदनी मियां के उसी क़ौल को तफ़्सीलन मुलाहिज़ा कीजिए, ''**अब कोई अशअ़रा से हो या मातुरीदीया से, हंफ़ी हो या शाफ़ई, मालकी हो या हंबली वो**

सहीतौर पर मस्लके अहले सुन्नत की रौशनी में बरेलवी है।''

अब बरेलवी होने के लिए फ़ाज़िले बरेलवी की ज़ाते गिरामी तक किसी सिलसिलए बैत व इरादत का पहुंचना या शहरे बरेली में मुक़ीम रहना ज़रूरी नहीं रह गया है। इस लिए ऐसों को भी बरेलवी कहा जाता है, जिसने उम्र भर कभी बरेलीशरीफ़ को ख़्वाब में भी नहीं देखा। नीज़ जिस का इल्मी या नसबी या किसी दूसरी तरह का कोई सिलसिला फ़ाज़िले बरेलवी तक नहीं पहुंचता बल्कि जहां फ़ाज़िले बरेलवी की आवाज़ तक नहीं पहुंचती, उस इस्तेलाह ने ''बरेलवियत'' को वहॉ तक पहुंचा दिया। अब इस दुनिया का हर फ़र्द ''बरेलवी'' है, जो मस्लके अहले सुन्नत पर गामज़न है।

अ़ल्लामा मदनी मियां साहब ने पूरे इंशेराहे सदर के साथ तमाम आ़लमे इस्लाम के अहले सुन्नत को बरेलवी क़रार दिया। इसी इस्तेलाह को एक सौ पच्चीस साल से ज़ाईद अ़र्से से हज़ारों अ़रब व अ़जम के मोअ़तक़िद व मुस्तनद उलमाए अहले सुन्नत हक़ीक़ी दीने इस्लाम और सुन्नीयत व हंफ़ीयत जानते और मानते रहे और मस्लके आ़ला हज़रत कहने पर फ़ख़्र फ़रमाते रहे।

अब अहले सुन्नत के चन्द अकाबिर व असातीन के मस्लके आ़ला हज़रत पर तास्सुरात और इक़रारे हक़ मुलाहिज़ा कीजिए। ताजदारे किछौछाशरीफ़ हज़रतशैख़ुल मशाईख़ सैय्यदशाह अ़ली हुसैन साहब अशरफ़ी मियां अलैहिर्रहमा, ईमामे अहले सुन्नत आ़ला हज़रत के अेहदे मुबारक में जब रेलगाड़ी से बरेलीशरीफ़ रेलवे स्टेशन से गुज़रते तो एहतेरामन दस्तबस्ता खड़े हो जाते और जब ट्रेन बरेलीशरीफ़ की हुदूद से गुज़रती तो बैठते। किसी ने अ़र्ज़ किया, ''हुज़ूर आप बरेलीशरीफ़ के हुदूद में से गुज़रते हुए खड़े क्यों हो जाते हो?''

हज़रतशैख़ुल मशाईख़ अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया, ''**जब एक नाईबे रसूल एक आले रसूल की ताज़ीम के लिए खड़ा है तो आले रसूल क्यों ना नाईबे रसूल की ताज़ीम के लिए खड़ा हो।'' आगे फ़रमाया, ''मेरा मस्लकशरीअ़त व तरीक़त में वही है, जो हुज़ूर पुरनूर आ़ला हज़रत मौलानाशाह अहमद रज़ा ख़ान साहब बरेलवी का है।**'' (सुन्नी आवाज़, नागपूर)

हुज़ूर मुहद्दिसे आ़ज़मे हिन्द किछौछवी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं, ''**जब तकमीले दर्से निज़ामी व दर्से हदीस के बाद मेरे मुरब्बीयों ने कारे इफ़्ता के लिए आ़ला हज़रत के हवाले किया। ज़िन्दगी की यही घड़ीयॉं मेरे लिए सरमायए हयात हो गई और महसूस करने लगा कि, आज तक जो कुछ पढ़ा था, वो कुछ ना था और अब दरियाए इल्म के साहिल को पा लिया है। इल्म को रासिख़ करना ओर ईमान को रगो पै में उतारना**

और सही इल्म देकर नफ़्स का तज़किया फ़रमा देना, आ़ला हज़रत की वो करामत थी जो हर मिनट, हर लम्हा सादिर होती रहती थी।"

हम को हमारे साथ सारे उलमाए अ़रब व अ़जम को ऐ़तेराफ़ है कि, हज़रतशैख़ मुहक़्क़िक मौलाना अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिसे दहेलवी या हज़रत बहरूल उलूम फ़िरंगी मेहली या फिर आ़ला हज़रत की ज़बान व क़लम नुक़्ता बराबर ख़ता करे, इस को नामुम्किन फ़रमा दिया। आ़ला हज़रत ईमाम अहमद रज़ा की ज़ात और आपके मस्लके हक़ पर हज़रत मुहद्दिसे आ़ज़मे हिन्द अ़लैहिर्रहमा का अ़ज़ीम ऐ़तेराफ़े हक़ हज़रत सदरूलअफ़ाज़िल मौलाना सैय्यद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी अलैहिर्रहमा ज़ात के बारे में हफ़्त रोज़ा सवादे आ़ज़म, लाहौर हयाते सदरूल अफ़ाज़िल में है, "**बिलाशुबा, मस्लके सैय्यदना ईमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीन व मिल्ल्त की तरवीज व इशाअ़त में जो हिस्सा हज़रत सदरूल अफ़ाज़िल अलैहिर्रहमा को हासिल है, वो आपकी तालीफ़ात व तस्नीफ़ात से ज़ाहिर है।**" हमें बावसूक़ व मोअ़तमद अलैह रिवायात पहुंची है कि, हज़रत सदरूल अफ़ाज़िल ने बार–बार फ़रमाया, "हमें मुजद्दिदे आ़ज़म सैय्यदना आ़ला हज़रत क़ुद्दसिर्रहु के आस्तानए क़ुदसिया से हक़ीक़त में ईमान मिला। सैय्यदना आ़ला हज़रत का मुल्क व मिल्ल्त व सवादे आ़ज़म पर एहसाने अ़ज़ीम है कि, आपने हमें ईमान व कलमे की चाशनी से रौशना फ़रमाया।" यह निहायत आबीदा हो कर इरशाद फ़रमाते। तहक़ीक़ाते सैय्यदना आ़ला हज़रत क़ुद्दसिर्रहु पर सदरूल अफ़ाज़िल अलैहिर्रहमा को आपके इरशाद पर इस क़द्र ऐ़तेमाद व सोक़ था। इरशाद फ़रमाते हैं, एक बार सैय्यदना मुजद्दिदे आ़ज़म आ़ला हज़रत ने फ़रमाया, "**फ़िक़ह मुझे अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन से हासिल हुई। तो हमने उसे तवाज़ेअ़ पर महमूल किया। इसलिए कि हमारी निगाह में सैय्यदना आ़ला हज़रत क़ुद्दसिर्रहु की तहक़ीक़ाते आ़लिया अ़ल्लामाशामी की तहक़ीक़ात से आ़ली व बुलंदतर हैं।**"

सुन्नी की तारीफ़ में मस्लके आ़ला हज़रत कीशर्त सुन्नी कॉंफ्रेन्स में क़रारदात की मंज़ूरी : तक़्सीमे मुल्क से क़ब्ल जब ऑल इंडिया सुन्नी कॉंफ़्रेन्स का क़याम अ़मल में आया। जिस में सदरूश्शरीआ़ मौलाना मुहम्मद अमजद अ़ली आ़ज़मी रज़वी साहब, मुसन्निफ़–बहारेशरीअ़त, मुफ़्तीए आ़ज़मे हिन्द मौलानाशाह मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान साहब बरेलवी, सदरूल अफ़ाज़िल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी, रईसुल मुतकलेमीन मौलाना सैय्यद अबुल हामिद सैय्यद मुहम्मद साहब मुहद्दिसे आ़ज़मे हिन्द, अमीरे मिल्लत पीर सैय्यद जमाअ़त अ़लीशाह साहब अ़लीपूरी, मुबल्लिग़े इस्लाम मौलाना अ़ब्दुल अ़लीम साहब मेरठी, मुहद्दिसे आ़ज़म पाकिस्तान मौलाना सरदार अहमद साहब, अ़ल्लामा अबुल हसनात सैय्यद मुहम्मद अहमद क़ादरी, मौलाना अबुलबरकात सैय्यद अहमद क़ादरी,

इफ़्तेख़ारूल उलमा मुफ़्ती मुहम्मद उमर साहब नईमी मुरादाबादी जैसे कसीर तादाद में मशाईख़े तरीक़त शामिल थे। ऑल इंडिया कॉंफ्रेन्स के जलीलुलक़द्र अकाबिर ने सुन्नी की तारीफ़ इसी तरह कि थी। "**सुन्नी वो है जो, ماانا علیہ واصحابی का मिस्दाक़ हो।**" यह वो हैं जो अईम्मए दीन, खुलफ़ाए राशिदीन, मुस्लिम मशाईख़े तरीक़त और मुताख़ेरीन उलमा में से हज़रतशैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी हज़रत बहरूलउलूम फ़िरंगी महेली हज़रत अ़ल्लामा फ़ज़्ले हक़ ख़ैराबादी हज़रत मौलानाशाह फ़ज़्ले रसूल बदायूनी हज़रत मौलाना मुफ़्ती इरशाद हुसैन रामपूरी, आ़ला हज़रत मौलाना मुफ़्तीशाह अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी रहमाहुमुल्लाह तआ़ला अन्हुम के मस्लक पर हो। मुलाहिज़ा हो, इसमें ना सिर्फ़ मस्लके आ़ला हज़रत बल्कि मस्लकेशैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी व मस्लके मौलानाना बहरूलउलूम फ़िरंगी लखनवी, मस्लके मौलाना फ़ज़्ले रसूल बदायूनी वग़ैरहम का भी ज़िक्र है। यह तमाम अकाबिरे अहले सुन्नत का मुत्फ़ेक़्क़ा का इक़रार मर्तबए क़ीरतास रूकनीयत है।

मुबल्लिग़े इस्लाम मौलानाशाह अ़ब्दुल अ़लीम साहब मेरठी : ख़लीफ़ए आ़ला हज़.रत मुबल्लिग़े युरोप व एशिया व अफ़रीक़ा हज़रत मौलाना अश्शाह अ़ब्दुल अ़लीम साहब मेरठी अलैहिर्रहमा के मुतअ़ल्लिक़ उनके फ़रज़न्द मौलाना शाह अहमद नूरानी मियॉ ने 1397 हि. के उर्से अमजदीके मौक़ेपर दारूलउलूम अमजदिया कराची के जलसए आ़म में बताया कि, "**मेरे वालिदे गिरामी मुबल्लिग़े इस्लाम मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़लीम सिद्दीक़ी मेरठी की एक नसीहत मेरे पास मौजूद है।**" फ़रमाया "**الحمدللہ ! मैं मस्लके अहले सुन्नत पर ज़िन्दा रहा और मस्लके अहले सुन्न्त वही है, जो मस्लके आ़ला हज़रत है और वो आ़ला हज़रत की किताबों में मरक़ूम है और الحمدللہ इसी पर मेरी उम्र गुज़री और الحمدللہ आख़री वक़्त इसी मस्लके आ़ला हज़रत पर हुजूर पुरनूर के क़दमे मुबा.रक में ख़ातमा बिलख़ैर हो।**"

अमीरे मिल्लत व नबीरए अमीरे मिल्लत : नबीरए अमीरे मिल्लत पीर सैय्यद जमाअ़त अ़लीशाह साहब मुहद्दिसे अ़ली पूरी हज़रत मौलाना साहबज़ादा पीर सैय्यद अख़तर हुसैन अ़ली पूरी एक मर्तबा हज़रत मौलाना मुफ़्ती ज़फ़र अ़ली साहब नौअ़मानी रज़वी, मोहतमिम–दारूलउलूम अमजदिया, कराची की सांगलाहील के क़ियामगाह पर तशरीफ़ फ़रमा थे और मौलाना मुहम्मद हसन अ़ली रज़वी बरेलवी से गुफ़्तगू के दौरान फ़रमाया, "**मेरे यानी पीर सैय्यद अख़तर हुसैन साहब अ़ली पूरी जद्दे मोहतरम हज़रत मुहद्दिस अ़लीपूरी अलैहिर्रहमा का मस्लक वही है, जो आ़ला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ान साहब बरेलवी का है।**"

हज़रत मुहद्दिसे आज़म पाकिस्तान : फ़ख़्रुल अमासिल हज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद हसन अ़ली साहब मेलसी मद्दज़िल्लाहुल आ़ली तहरीर फ़रमाते हैं, "**हज़रत अ़ल्लामा अबुलफ़ज़्ल मौलानाशाह मुहम्मद सरदार साहब क़ादरी चिश्ती रज़वी मुहद्दिसे आज़म पाकिस्तान कुद्दसिर्रहु ने मौलाना मुहम्मद हसन अ़ली अर्रज़वी के नाम को पेशतर मकातिब में मस्लके आ़ला हज़रत मज़हबे अहले सुन्नत पर मज़बूती से क़ाएम रहने की तलक़ीन फ़रमाई।**" हज़रत ममदूह के एक सौ के क़रीब अहम ख़ुतूत मौलाना मुहम्मद हसन अ़ली के पास महफ़ूज़ हैं, जिन में मज़हबे अहले सुन्नत मस्लके आ़ला हज़रत पर मज़बूती से क़ाएम रहने की दुआ़ फ़रमाई गई है। हज़रत सैय्यदी मुहद्दिसे आ़ज़म पाकिस्तान कुद्दसिर्रहु ने अपने शिजरए क़ादरिया रज़विया चिश्तीया साबरिया में ज़रूरी हिदायात के ज़ैल में फ़रमाया, "**अहले सुन्त मुजद्दिदे दीन व मिल्लत आ़ला हज़रत अ़ज़ीमुल बरकत मौलानाशाह अहमद रज़ा कुद्दसिर्रहुल अ़ज़ीज़ के मस्लक पर मज़बूती से क़ाएम रहें, इनका मस्लक अहले सुन्नत व जमाअ़त है।**"

मुफ़्तीए आ़ज़म दहली : हज़रत अ़ल्लामा अलहाज मुफ़्ती मुहम्मद मज़हरूल्लाह साहब नक़्शबंदी शाही, ईमाम व ख़तीब, जामेअ़ मस्जिद, फ़तेहपूरी, देहली अलैहिर्रहमा मौलाना मुहम्मद हसन अ़ली अर्रज़वी मद्दज़िल्लाहुल आ़ली के नाम अपने एक अहम मक्तूबे गिरामी में अरक़ाम फ़रमाते हैं, "**आ़ला हज़रत कुद्दसिर्रहु के मस्लक व तहक़ीक़ात में किस का ज़ोहरा है कि जुर्रते लब कुशाई कर सके।**"

मुफ़्ती अबुल बरकात : मौलाना सैय्यद अहमद क़ादरी और (अ़ल्लामा हसन अ़ली साहब मेलसी) के एक जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं, "**तअ़ज्जुब है ! कि आ़ला हज़रत ईमामे अहले सुन्नत बरेलवी कुद्दसिर्रहु के फ़तवा होते हुए फ़क़ीर से इस्तफ़सार किया जा रहा है। फ़क़ीर का और फ़क़ीर के आबा व अजदाद का वही मस्लक है, जो आ़ला हज़रत कुद्दसिर्रहु का है।**"

शैख़ुल मशाईख़शोएबुल औलिया : हज़रत अ़ल्लामा सूफ़ीशाह मुहम्मद यार अ़ली साहब कुद्दसिर्रहु, बराऊंशरीफ़, मुद्दतुल अ़म्र मस्लके आ़ला हज़रत ईमामे अहले सुन्त पर क़ाएम थे। तीस साल से ज़ाईद आपके आस्तानए पाक आ़लिया और दारूलउलूम फ़ैज़े रसूल, बराऊंशरीफ़, ज़ि. सिद्धार्थनगर, यू.पी. से रिसाला "**फ़ैज़े रसूल" जारी है। जिनकी पेशानी पर लिखा होता है, "मज़हबे अहले सुन्नत का तर्जुमान मस्लके आ़ला हज़रत का नक़ीब।**"

हज़रत मुहद्दिसे अमरूही काज़मी : अ़ल्लामा क़ारी सैय्यद मुहम्मद ख़लील काज़मी अमरूही पीर व मुर्शिद व उस्तादे मोहतरम हज़रत अ़ल्लामा सैय्यद अहमद सईद काज़मी,

अनवारूल उलूम, मुलतानशरीफ़ फ़रमाते हैं, "**फ़क़ीर का मस्लक इन दोनों मस्अलों में यानी रेडियो के ऐलान को और लाऊडस्पीकर पर नमाज़ ना होने में आ़ला हज़रत कुद्दसिर्रहु के मस्लक के बिल्कुल मुवाफ़िक़ है, तवालत की ज़रूरत नहीं।**"

सदरूल अफ़ाज़िल वशेरे बेशए अहले सुन्नत : हज़रत सदरूल अफ़ाज़िल मौलाना सैय्यद नईमुद्दीन मुरादाबादी और हज़रतशेरे बेशए अहले सुन्नत मौलाना मुहम्मद हशमत अ़ली ख़ान साहब कुद्दसिर्रहुमा ने दारूलउलूम हीज़बुल अहनाफ़, लाहौर में मुंदर्जाज़ैल तह. रीर व दस्तख़त फ़रमा के मस्लके आ़ला हज़रत की ताईद व हिमायत फ़रमाई। वो तहरीर यह है कि, "**अल्लाह के नाम सेशुरू जो बहुत महरबान रहमत वाला نحمده ونصلی علی رسوله الكريم सुन्नी वो है जो مااناعليه واصحابی का मिस्दाक़ हो। यह वो लाग हैं जो अईम्मए दीन, खुलफ़ाए राशिदीन, मुस्लिम मशाईख़े तरीक़त और मुताख़ेरीन उलमा में से हज़. रतशैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिसे दहेलवी हज़रत मलकुल उलमा मौलाना बहरूल उलूम लखनवी हज़रत मौलाना फ़ज़्ले हक़ ख़ैराबादी मौलाना फ़ज़्ले रसूल बदायूनी,शैखुल इस्लाम वल मुस्लिमीन हुज्जतुल्लाह फ़िल अरज़ीन हुज़ूर पुरनूर सैय्यदना आ़ला हज़. रत अज़ीमुल बरकत ईमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत मौलानाशाह अ़ब्दुल मुस्तफ़ा अहमद रज़ा ख़ान क़ादरी बरकाती बरेलवी के मस्लके हक़ पर हो।**"

फ़क़ीहे आ़ज़म मुहद्दिसे कोटलवी : के मूतआलिक़ माहनामा "माहे तैबा" में आख़री वसीयत में मस्लके आ़ला हज़रत से वाबस्तगी ज़ाहिर की गई है और हज़रत मौलाना ईमामुद्दीन साहब कोटलवी अलैहिर्रहमा के मुतअ़ल्लिक़ यह अलफ़ाज़ हैं, फ़रमाया, "**बशीर मुझसे मुसाफ़हा करलो। मैं अब जाने वाला हूं और मेरी तुम्हारे लिए दुआ़ है। देखो ! तुम्हारे वालिद फ़क़ीहे आ़ज़म अलैहिर्रहमा और तुम्हारे ताया हज़रत मौलाना मुहम्मद अ़ब्दुल्लाह क़ादरी रज़वी और मैं उम्र भर आ़ला हज़रत ईमाम अहमद रज़ा के मस्लक की तबलीग़ करते रहे। तुम भी इसी मस्लक (आ़ला हज़रत) पर क़ाएम रहना। खुदा तुम्हारी मदद फ़रमाएगा।** मज़कूरा बाला मुस्ल्लम अकाबिरे उलमाए अहले सुन्नत के अ़लावा और बहुत से अकाबिरे उलमाए किराम ने मस्लके आ़ला हज़रत ईमामे अहले सुन्नत से इत्तेफ़ाक़ फ़रमाया और मस्लके आ़ला हज़रत की इस्तेलाह कोई बच्चों का राईज की हुई नहीं है। بحمده تعالیٰ अकाबिरे अहले सुन्नत की अकसरीयत का इत्तेफ़ाक़ मस्लके आ़ला हज़रत है।" (हफ़्त रोज़ा—सवादे आ़ज़म, लाहौर, माख़ूज़ सहमाही इफ़्कारे रज़ा, मुम्बई)

तौहीद व शिर्क काशरई तहकीकी बयान

अज़ : फ़ाज़िले मुहक़्क़िक़ मुफ़्ती सरदार अहमद रज़ा मुशर्रफुल क़ादरी, मेलसी

शिर्क क्या है? मुश्रिक कौन है? आज तक ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया अज़ अकाबिर ता असाग़िर शिर्क का क़रार वाक़ई हक़ीक़ी असली मानी व मफ़्हूम समझने से आ़जिज़ व क़ासिर नज़र आते हैं। यही वजह है कि ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया शिर्क के खुदसाख़्ता और मनघड़क मानी व मफ़्हूम की बिना पर अपनी किताबे मोअ़तबर्रा और तक़रीर व बयान में अहले हक़, अहले जन्नत, अहले सुन्नत व जमाअ़त पर शिर्क के इंतेहाई संगीन इत्तहामात व इलज़ामात आ़ईद करके अपनी जहालत व बेइल्मी और कुरआन व सुन्नत से दूरी का नक़्द सुबूत फ़राहम कर रहे हैं। उनके चाहने से, समझने से, कहने से, कभी भी कोई सुन्नी मुसलम. ान हरगिज़–हरगिज़ क़तअ़न मुश्रिक नहीं हो सकता। यह उन हज़रात के महज़ ख़ाम–ख़्याली व इफ़्तेरा परदाज़ी है। दरहक़ीक़त यह हज़रात शिर्क–शिर्क और मुश्रिक–मुश्रिक का शोर मचा कर अपनी गुस्ताख़ियों और बेअदबियों पर पर्दा डालना चाहते हैं। आईए ! हम शिर्क का क़रारे वाक़ई मानी व मफ़्हूम हदियए क़ारईन करते हैं। ताकि अहक़ाक़े हक़, अबताले बातिल हो जाए और आ़म्मातुन्नास, ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया की अ़य्यारियों और फ़रेब कारियों से मामून व महफ़ूज़ रहते हुए अपने अ़क़ीदा व मस्लक का तहफ़्फ़ुज़ व दिफ़ाअ़ कर सकें।

तौहीद व शिर्क का लग़वी और शरई मानी व मफ़्हूम :

हज़राते मोहतरम ! शिर्क, तौहीद की ज़िद है। मुनासिब यह है कि शिर्क से पहले तौहीद का मुख़्तसर और जामेअ़ मानी व मफ़्हूम बयान कर दिया जाए। अ़ल्लामा मीर सैय्यद शरीफ़ जरजानी अलैहि. र्रहमा फ़रमाते हैं, "लुग़त में तौहीद का मानी यह है कि, किसी शए को एक जान कर उस पर यह हुक्म लगाना कि वो एक है।" (अत्ताअ़रीफ़ात–स. 51) और इस्तेलाहे शरीअ़त में तौहदी का मानी व मफ़्हूम यह है कि, "अलुहियत और उसके ख़्वास में अल्लाह तआ़ला के साथ किसी के शरीक ना होने का ऐतेक़ाद रखना।" (शरए मक़ासिद–जि. 2, स. 64) "अलुहियत से मुराद, वजूद का वाजिब होना है और ख़्वासे अलुहियत से मुराद व उमूर हैं, जो इस पर मुत्तफ़र्रअ़ होते हैं। यानी अजसाम का ख़ालिक़ होना, जहान का मुदब्बिर होना, इबादत का मुस्तहिक़ होना।" (हाशियए सियालकोटी अ़ललख़्याली) "लुग़त में शिर्क का मानी है, हिस्सा या साझाा। लेहाज़ा शरीक के मानी हैं, हिस्सादार या साझी।" (अलमुंजिद–स-524) शिर्क दो तरह का है

(1) शिर्के असग़र :

इससे मुराद रिया और निफ़ाक़ है। शिर्के असग़र के मुर्तक़ब को शरअ़न मोमिनीन से ख़ारिज नहीं किया जाता और महज़ रिया की वजह से उसे मुश्रिक कहना सही नहीं है।

(2) शिर्के अकबर :

जिसके मुरत्तक़ब को मुश्रिक कहा जाता है। जब मुत्लक़न शिर्क का लफ़्ज़ बोला जाए तो उससे मुराद शिर्के अकबर ही होता है।

इस्तेलाहे शरीअ़त में शिर्के अकबर का मानी है, "अलुहिय्यत या उसके ख़्वास में अल्लाह तआ़ला के साथ किसी के शरीक होने का ऐतेक़ाद रखना।" इस तारीफ़ का मानी व मफ़्हूम यह है कि, "सिर्फ़ अल्लाह ही वाजिबुल वजूद और अपनी ज़ात व कमालात में किसी दूसरे से बेनियाज़ और मुस्तक़िल बिज़्ज़ात है और वही इबादत का मुस्तहिक़ है और कोई नहीं।" लेहाज़ा अगर कोई शख़्स किसी दूसरे को अल्लाह के सिवा वाजिबुल वजूद माने या उस की ज़ात व सिफ़ात में ग़नी बिज़्ज़ात जाने या उसके मुस्तहिक़े इबादत होने का अ़क़ीदा रखे तो यह शिर्क होगा और ऐसा अ़क़ीदा रखने वाला मुश्रिक होगा।

1. फ़ाज़िले अजल अ़ल्लामा सअ़दुद्दीन तफ़ताज़ानी अलैहिर्रहमा, शिर्क की तारीफ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं, "शिर्क यह है कि अलुहिय्यत में वाजिबुल वजूद होने के मानी में (ग़ैरे खुदा को) शरीक मानना। जैसा कि मजूसियों का अ़क़ीदा है। या लाईक़े इबादत होने के मानी में शरीक मानना जैसा कि बुतपरस्तों का अ़क़ीदा है।" (शरहुल अ़क़ाईद अल–नफ़्सीया–स. 77)

हज़रत शैख़ अ़ब्दुलहक़ मुहद्दिसे दहेलवी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं, "शिर्क की तीन क़िस्में हैं (1) ग़ैरे खुदा को जवाबुल वजूद मानना, (२) ग़ैरे खुदा को ख़ालिक़ जानना, (३) ग़ैरे खुदा को लाएक़े इबादत समझना।" (अशअ़तुल लमआ़त–जि. १, स. 72)

मुजद्दिदे आ़ज़मे आ़ला हज़रत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं, "आदमी हक़ीक़तन किसी बात से मुश्रिक नहीं होता, जब तक ग़ैरे खुदा को मअ़बूद या मुस्तक़िल बिज़्ज़ात व वाजिबुल वजूद ना जाने।" (फ़तावए रज़विया–जि. 21, स. 131)

कुतूबे वहाबिया में शिर्क का मानी व मफ़्हूम :

१. रसूले अकरम ﷺ की ताज़ीम करना शिर्क है। (अल–दुरूनज़ीद–स. 36)

२. शाफ़ए महशर ﷺ से इस्तेग़ासा करना शैतानी फ़ेअ़ल है और शिर्क है। (कशफ़ुलशबहात–स. 57)

३. नमाज़ में सरकारे अक़दस ﷺ की तरफ़ ख़्याल ले जाने वाला मुश्रिक है। (सिराते मुस्तक़ीम–स. 86)

४. जो क़ियामत के दिन सरकारे अक़दस ﷺ को अपना वकील व सिफ़ारशी समझे, वो अबूजहल के बराबर मुश्रिक है। (तक़वियतुल ईमान–स. ६)

५. नबीए पाक ﷺ का क़ुबह, शिर्क व इल्हाद का बहुत बड़ा वसीला और इस्लाम को मिटाने का ज़रिआ़ है। (फ़तहुल मजीद, शरह मिताबुल तौहीद–स. 208 व 215)

६. रसूलुल्लाह ﷺ के रौज़े का क़सद करके ज़ियारत करना नाजाईज़ और शिर्क है। (रिसाला–सिमाअ़ मोती–स. ११६, अल–दुरूनज़ीद–स. ६०)

७. सरकारे काएनात ﷺ को पुकारना, शफ़ीउल मुज़नबीन समझना, ख़तम पढ़ना, सूरते मुबारका और क़ब्र शरीफ़ का तसव्वुर करना, हाजत रवा, सहबे तसर्रुफ़े मुख़्तार, जुम्ला सिफ़ात को बाअ़ताए इलाही मानना शिर्क है। शिर्क भी अबूजहल जैसा। (किताबुल तौहीद–स. 175)

८. अ़ली बख़्श, हुसैन बख़्श, पीर बख़्श और ग़ुलाम मुहीउद्दीन व ग़ुलाम मोईनुद्दीन नाम रखना शिर्क। (तक़वियतुल ईमान–स. ३)

९. किसी नबी या वली के मज़ारात की ज़ियारत के लिए सफ़र करना, उनके मज़ार पर शामियाना खड़ा करना, रौशनी करना, फ़र्श बिछाना, झाड़ू देना, लोगों को पानी पिलाना, उनके लिए वज़ू और ग़ुस्ल का इंतेज़ाम करना, शिर्क है। (तकवियतुल ईमान–स. 7)

१०. तक़लीद शिर्क है। (सिराजे मुहम्मदी–स.175)

११. नीज़ अ़ल्लामा शामी क़ुद्दसिर्रहु नाक़िल हैं कि, "बस वही (वहाबिया) मुसलमान हैं और जो उन के मज़हब पर नहीं, सब मुश्रिक हैं।" (रद्दुलमुख़्तार–जि. ३, स. 339)

मुंदर्जाबाला किताब में ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया ने अपने ज़हनी इख़्तेराअ़ की वजह से जिन उमूर को शिर्किया क़रार दिया है, वो यह हैं,

१. सरकारे अक़दस ﷺ की ताज़ीम शिर्क है।

२. सरकारे अक़दस ﷺ से इस्तेग़ासा शिर्क।

३. सरकारे अक़दस ﷺ का क़ुब्बह शिर्क।

४. रोज़ए सरकारे अक़दस ﷺ की क़स्दन ज़ियारत करना शिर्क।

५. सरकारे अक़दस ﷺ को पुकारना शिर्क।

६. सरकारे अक़दस ﷺ को शफ़ीउल मुज़नेबीन समझना शिर्क।

७. सरकारे अक़दस ﷺ की सूरते मुबारका का तसव्वुर करना शिर्क।

८. सरकारे अक़दस ﷺ की क़ब्र शरीफ़ का तसव्वुर करना शिर्क।

९. सरकारे अक़दस ﷺ को हाजतरवा मानना शिर्क।

१०. सरकारे अक़दस ﷺ को साहबे तसर्रुफ़, मुख़्तार मानना शिर्क।

११. अईम्मए अरबअ़ा की तक़लीद शिर्क।

१२. ख़त्म पढ़ना शिर्क। (نعوذباللہ تعالیٰ من ذلک)

क़ारईने किराम ! क़ुरआन व हदीस, सहाबा किराम, ताबईने किराम, तबअ़ ताबईने किराम, अइम्मए दीन, औलियाए कामलीन, मुफ़स्सिरीने किराम, मुहद्दिसीने किराम रज़िअल्लाहो अन्हुम के इरशादात व फ़रमूदात और की रौशनी में शिर्क की जो जामेअ़ व मानेअ़ तारीफ़ और जो क़रारे वाक़ई अस्ली हक़ीक़ी शरई मानी व मफ़्हूम ईमामेअजल अ़ल्लामा सअ़दुद्दीन तफ़्ताज़ानी, शैख़े मुहक़्क़िक़ अ़लल इतलाक़ शैख़ अ़ब्दुलहक़ मुहद्दिसे दहेलवी, मुजद्दिदे आ़ज़म आ़ला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी वग़ैरहुम रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हुम ने मुतअ़ईय्यन फ़रमाया है, उनकी रौशनी में मअ़मूलाते अहले सुन्नत व जमाअ़त को हरगिज़–हरगिज़ शिर्क

क़रार नहीं दिया जा सकता। अहले हक़, अहले सुन्नत व जमाअ़त पर शिर्क के इलज़ामात महज़ जहालत व बेइल्मी, ख़ाम ख़्याली व इफ़्तेरा पर्दाज़ी के साथ–साथ लोगों में इंतेहाई तशद्दुद और तअ़स्सुब और फ़ितना व शर फैलाने की नाकाम कोशिश हैं।

अकाबिरे वहाबिया का इक़रार व ऐतेराफ़े जुर्म :

१. ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया के मुस्तनद मौलवी अ़ताउल्लाह हनीफ़ भोजयानी नाक़िल हैं कि, मौलवी इस्माईल क़तील ने तक़वियतुल ईमान लिखने के बाद कहा, "इसमें बअ़ज़ जगह तेज़ लफ़्ज़ आ गए हैं, बअ़ज़ जगह तशद्दुद भी। इशाअ़त से शोरिश ज़रूर होगी। मगर लड़–भिड़ कर खुद ही ठीक हो जाएंगे।" (अकमलुलबयान–स. 14)

२. ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबी मौलवी व वहीदुज़्ज़मां लिखता है कि, "हमारे बअ़ज़ मुतअख़्ख़ेरीन, इस्माईल दहेलवी, महुम्मद बिन अ़ब्दुल वहाब नजदी ने शिर्क के मआ़मले में बहुत तशद्दुद किया है। इस्लाम के दाएरे को बहुत तंग कर दिया है। मकरूह व हराम उमूर को भी शिर्क क़रार दे दिया है। वो दीन में सख़्त ग़ाली और तशद्दुद करने वाले थे।" (हदियतुल महदी–स. 26)

३. ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया के मौलवी मीर इब्राहीम सियालकोटी लिखते हैं कि, "जमाअ़ते अहले हदीस, अपने नाक़िसुल क़लम और ग़ैर मोहतात नाम. नेहाद उलमा की तहरीरों और तक़रीरों से धोका ना खाए। क्योंकि बअ़ज़ तो पुराने ख़ारजी और बेइल्म महज़ और पुराने काँग्रेसी हैं। मुसलमानों में खुसूसन अहले हदीस में तअ़स्सुब पैदा करना चाहते हैं।" (अहीय्याउल मईय्यत–स. 36)

लीजिए जनाब ! ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया ने अपनी ज़हनी इख़्तेराअ़ और जहालत व लाइल्मी की वजह से और लोगों में तशद्दुद व तअ़स्सुब और फ़ितना व शर फैलाने और लोगों को आपस में लड़ाने के लिए जिन उमूर को शिर्किया क़रार दे कर अहले हक़, अहले सुन्नत व जमाअ़त को मुश्रिक ठहराया था, क़ब्ल उससे कि हम उन जुम्ला उमूर को कुरआन व हदीसे सहाबा किराम, ताबईने किराम, तबए ताबईने किराम, अईम्मए दीने मतीन, औलियाए कामलीन, मुफ़. स्सिरीन व मुहद्दिसीन के अक़वाल व इरशादात व फ़. रमूदात पर मुश्तमिल दलाईल व शवाहिद व बराहीन के मजमअ़ अल–बहरीन से साबित करते, ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया बक़लम खुद ही इक़रार व ऐतेराफ़ जुर्म कर गए। नम्बरदार मुलाहिज़ा हों।

१. बअ़ज़ जगह तेज़ लफ़्ज़ आगए हैं।

२. बअ़ज़ जगह तशद्दुद भी।

३. इशाअ़त से सोरिश ज़रूर होगी।

४. लड़–भिड़ कर खुद ठीक हो जाएंगे।

५. इस्माईल दहेलवी, मुहम्मद बिन अ़ब्दुल वहाब नजदी ने शिर्क के मआ़मले में बहुत तशद्दुद किया।

६. इस्लाम के दाएरे को बहुत तंग कर दिया है।

७. मकरूह व हराम उमूर को भी शिर्क क़रार दे दिया।

८. वो (यानी मौलवी इस्माईल दहेलवी और मुहम्मद बिन अ़ब्दुल वहाब) दीन में सख़्त ग़ाली और तशद्दुद करने वाले थे।

९. ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया में नाक़िसुल इल्म हैं।

१०. ग़ैर मोहतात भी हैं।

११. बज़ोअ़म खुद आ़लिम बन कर तहरीर व तक़रीर से धोका देते हैं।

१२. ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया में ख़ारजी काँग्रेसी महज़ बेइल्म, बज़ोअ़म खुद भी आ़लिम हैं।

१३. ऐसे बज़ोअ़म खुद आ़लिम मुसलमानों में ख़ासकर ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया में तअअ़स्सुब पैदा करना चाहते हैं।

सुन्नी मुश्रिक नहीं हो सकता :

पिछली गुफ़्तगू से साबित हो गया कि, अगर ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया अपनी जहालत व लाइल्मी ख़ाम–ख़्याली व इफ़्तेरा परदाज़ी से शिर्क के खुदसाख़्ता व तराशीदा मानी व मफ़्हूम के ऐतेबार से अहले सुन्नत व जमाअ़त को मुश्रिक क़रार देते हैं तो ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया के ऐसा चाहने या कहने या लिखने से दरहक़ीक़त सुन्नी मुसलमान का कुछ नहीं बिग. ड़ता। بفضلہ تعالیٰ सुन्नी मुसलमान शिर्क के क़. रार, वाक़ई अस्ली हक़ीक़ी शरई मानी व मफ़्हूम के ऐतेबार से हरगिज़–हरगिज़ मुश्रिक नहीं हो सकता। क्योंकि सरकारे अक़दस ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं, "मेरी उम्मत, उम्मते मर्हुमा है। यह अपनी क़ब्रों में गुनाह ले कर जाती है और क़ब्रों से निकलेगी तो उन पर कोई गुनाह ना होगा। क्योंकि मोमिनीन के अस्तग़फ़ार की वजह से उनके गुनाह मिट जाएंगे।" (शरए सुदूर) और एक दूसरी रिवायत में है, "मेरी यह उम्मत, उम्मते मर्हुमा है।" (मिश्कातशरीफ़–स. 460, अबू–दाऊद–जि.

२, स. 232) (इब्ने माजा–स. 317, सुनन दारमी–जि. १, स. 42, तोहफ़्तुल अहूज़ी–जि. ६, स323)

बताया जाए कि, अगर उम्मते मुस्तफ़ूईया में शिर्क करने वाले तो मर्हूमा का क्या मानी? क्या मुश्रिक मर्हूम व मग़फ़ूर होता है? हरगिज़ नहीं, जिन्हें सरकारे अक़्दस ﷺ मुर्हूमा फ़रमा चुके, तुम उन्हें मुश्रिक क़रार दे रहे हो। बल्कि तहक़ीक़े हक़ यह है कि, सरकारे अक़्दस ﷺ तो शिर्क और उसके ख़ौफ़ की भी नफ़ी फ़रमा चुके हैं।

शिर्क की तोहमत लगाने वाले शिर्क के हक़्दार :

सहीउलअक़ीदा सुन्नी मुसलमानों पर शिर्क के इत्तेहामात व इल्ज़ामात लगाने वाले ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया खुद शिर्क के हक़दार बन गए। चुनांचे एक सही हदीस मुलाहिज़ा हो। हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो से रिवायत है कि, सरकारे अक़्दस ﷺ ने फ़रमाया कि, "मुझे तुम पर उस शख़्स का डर है, जो क़ुरआन पढ़ेगा। जब उस पर क़ुरआन की रौनक़ आजाएगी और इस्लाम की चादर उसने ओढ़ ली होगी। फिर वो इस्लाम की चादर से बिल्कुल साफ़ निकल जाएगा और उसे पसेपुश्त डाल देगा और अपने पड़ोसी पर तलवार चलाना शुरू कर देगा और उसे शिर्क से मुत्हम व मंसूब कर देगा (यानी मुश्रिक ठहराएगा)।" हज़रत हुज़ैफ़ा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो फ़रमाते हैं कि, मैंने पूछा, "ऐ अल्लाह के नबी ﷺ ! शिर्क का ज़्यादा हक़दार कौन है? शिर्क की तोहमत लगाया हुआ या शिर्क की तोहमत लगाने वाला?" आप ﷺ ने फ़रमाया, "शिर्क की तोहमत लगाने वाला शिर्क का ज़्यादा हक़दार है।" यह सनदे जैय्यद है।

अब भी अगर कोई शिर्क का फ़तवा लगाता है तो वो अपनी आ़दत से मजबूर है। बल्कि उससे सरकारे अक़्दस ﷺ के मोअजज़े का इज़्हार होता है कि, आप ﷺ ने सदियों पहले ऐसे लोगों की ख़बर दी थी।

ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया के लिए लम्हए फ़िक्रिया :

जिन उमूरे ख़ैर (अ़क़ाईद व मामूलाते अहले सुन्नत व जमाअ़त) को ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया खुदसाख़्ता व तराशीदा मानी व मफ़्हूम की बिना पर शिर्किया क़रार दे कर अहले सुन्न्त व जमाअ़त को मुश्रिक क़रार देते हैं। **بفضلہٖتعالیٰ** वहाबिया के चाहने या कहने, लिखने से सुन्नी मुसलमान तो मुश्रिक हो नहीं सकता। अलबत्ता ! ग़ैरमुक़ल्लिदीन वहाबिया उन उमूरे ख़ैर को शिर्किया क़रार देने की वजह से खुद गुस्ताख़ व बेअदब ज़रूर ठहरेंगे। तअ़ज्जुब है ! ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया को खुदसाख़्सता व तराशीदा शिर्क की फ़िक्र तो है, मगर अपनी गुस्ताख़ियों और बेअदबियों की क़तअ़न फ़िक्र नहीं है।

रिया की दो सूरतें

कामिल नाक़िस

रिया की दो सूरतें हैं। कभी तो असल इबादत ही रिया के साथ करता है कि मस्लन लोगों के सामने नमाज़ पढ़ता है और कोई देखने वाला ना होतो पढ़ता ही नहीं। यह रियाए कामिल है कि ऐसी इबादत का बिल्कुल सवाब नहीं। दूसरी सूरत यह है कि असल इबादत में रिया नहीं, कोई होता या ना होता। बहरहाल ! नमाज़ पढ़ता, मगर वस्फ़ में रिया है कि कोई देखने वाला ना होता। जब पढ़ता मगर इस ख़ूबी के साथ ना पढ़ता। यह दूसरी पहली से कम दर्जे की है। इस में असल नमाज़ का सवाब है और ख़ूबी के साथ अदा करने का जो सवाब है, वो यहां नहीं कि यह रिया से है, इख़्लास से नहीं। (रद्दुलमुख़्तार)

मस्अला :

रोज़ेदार से पूछा, "क्या तुम्हारा रोज़ा है?" उसे कह देना चाहिए कि, "हां ! है।" कि रोज़े में रिया को दख़ल नहीं। यह ना कहे कि, "देखता हूं क्या होता है।" यानी ऐसे अलफ़ाज़ ना कहे कि, जिनसे मालूम होता हो कि, यह अपने रोज़े को छुपाता है कि यह बेवक़ूफ़ी की बात है कि छुपाता है। मगर इस तरह जिस से इज़्हार हो जाता है या यह मुनाफ़िक़ीन का तरीक़ा है कि लोगों के सामने वो बताना चाहता है कि अपने अ़मल को छुपाता है। (दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुख़्तार)

इलयासी गुमराहियत पर

पच्चीस सवालात

अज़ : गद्दीनशीन, सरकारे आ़ज़म, अजमेरशरीफ़, राजस्थान

رب انی اعوذبک من ھمزات الشیطین واعوذبک رب ان یحضرون باسمہٖ تعالیٰ ھو القادر المعین. نحمدہٗ ونصلی ونسلم علیٰ رسولہٖ الکریم وعلیٰ آلہ واصحابہٖ وحزبہٖ وعترتہٖ اجمعین

क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन व मुफ़्तीयाने शरए मतीन दर्ज ज़ैल मसाईल में कि :

ज़ैद सुन्नी कहता है, ''पाकिस्तान से निकली हुई एक जमाअ़त जिसके बानी ने अपनी तंज़ीम व जमाअ़त का नाम '**दावते इस्लामी**' रखा। जो कि अपने मख़्सूस नज़रियात, मुतनाज़आ़ उसूल व ज़्वाबित और खुदसाख़्ता अग़राज़ व मक़ासिद के पेशे नज़र फ़िलहक़ीक़त 'दावते ग़ैर इस्लामी' साबित हो कर रही।'' ज़ैद सुन्नी अपने मौक़िफ़ की ताईद में आ़ला हज़रत सरकार की कुतुब व रसाईले मुबारका से दलाईल व बराहीन (जिनका ज़िक्र आईंदा औराक़ में किया जाएगा) पेश करता है। जबकि बकर दावती का कहना है कि दावते इस्लमी आज की तारीख़ तक वाक़ेअ़तन दावते इस्लामी है और सही मानी में मस्लके आ़ला हज़रत कुद्दसिर्रहु की मुबल्लिग़ है। हिदायत वशरीअ़त की एकशाहराह और रौशन मिनार है। दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, आने वाले औराक़ में अपने–अपने मौक़फ़ के तअ़ल्लुक़ से किस का क़ौल सही है? या ज़ैद सुन्नी का? या बकर दावती का?

सवाल नं. १ :

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, इस दावते इस्लामी को दावते इस्लामी ना कह कर दावते ग़ैर इस्लामी, दावते इलयासी, दावते अ़त्तारी, दावते पाकिस्तानी वग़ैरा कहना चाहिए। इसलिए कि इस जमाअ़त व तंज़ीम के ज़रिए हुज़ूर आ़ला हज़रत अ़ज़ीमुल बरकत कुद्दस्सीर्रहु के सरीह फ़तावा मुबारका के ख़िलाफ़ वरज़ियां अ़मलन व क़ौलन करवाई जा रही हैं। मस्लन मदीना तैय्यबा, मदीना मुनव्वरा, मदीना मुक़द्दसा, मदीना मुतहरा, तैय्यबा की जगह सिर्फ़ 'मदीना–मदीना' की रट लगवाकर अ़व्वाम व ख़्वास को सिर्फ़ मदीना कहने का आ़दी बना दिया गया है। जो सख़्त बेअदबी है और इस बेअदबी के लिए सैय्यदना सरकार आ़ला हज़रत कुद्दस्सीर्रहु यूं फ़रमाते हैं। ''**ताज़ीम के लिए ना यक़ीन दरकार है, ना कोई ख़ास सनद बल्कि सिर्फ़ नामे पाक से उस शए का इश्तेहार काफ़ी है। ऐसी जगह बे इदराक सनदे ता. ज़ीम से बाज़ ना रहेगा। मगर बीमार दिल, पुर आ. ज़ार दिल, जिसमें ना अ़ज़मतेशाने मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह** ﷺ **बरावजा काफ़ी ना ईमाने कामिल।'' अल्लाह** ﷻ **फ़रमाता है, तर्जुमा : ''अगर यह झूटा है तो उसके झूट का वबाल उस पर और अगर सच्चा है तो तुम्हें पहुंच जाएंगे। बअ़ज़ वो अ़ज़ाब जिनका वो तुम्हें वादा देता है।''**

''और ख़ुसूसन जहां सनद भी मौजूद हो, फिर तो ताज़ीम व एज़ाज़ व तकरीम से बाज़ नहीं रह सकता। मगर कोई खुला काफ़िर या छुपा मुनाफ़िक़।'' والعیاذباللہ تعالیٰ (फ़तावए रज़विया मुतर्ज. म–स. 415,416, जि. 21)

आ़ला हज़रत सरकार एक सवाल के जवाब में तहरीर फ़रमाते हैं :

अल-जवाब : ''जब कोई गुमराह, बद्दीन राफ़ज़ी हो या मिर्ज़ाई, वहाबी हो या देवबंदी वग़ैरहम خذلھم اللہ تعالیٰ اجمعین **मुसलमानों को बहकाए फ़ितना व फ़िसाद पैदा करे तो उसका दफ़अ़ और कुलूबे मुस्लिमीन से शबहातेश्यातीन का रद फ़र्ज़े आ़ज़म है। जो उससे रोकता है** یسدون عن سبیل اللہ ویبعونھا عوجا **में दाख़िल है। कि अल्लाह की राह से रोकते हैं, इस में कुजी चाहते हैं और ख़िलाफ़त कमेटी का हीला, अल्लाह** ﷻ **के फ़र्ज़ को बातिल नहीं करता, ना शैतान के मक्र को दफ़अ़ करने से राकता, शैतान के सिवा किसी मुसलमान का काम हो सकता है, जो ऐसा कहते हैं, अल्लाह** ﷻ **और शरिअ़ते**

मुतहरा पर इफ़तरा करते हैं। मुस्तहिब अ़ज़ाबे नार व ग़ज़बे जब्बार होते हैं और हर हिन्दु से वदाद व इत्तेहाद मनाया, उधर रवाफ़िज़ व मिर्ज़ाईया वग़ैरहम मलाअ़ना का सद फ़ितना नाजाईज़ ठहराया, ग़र्ज़ यह है, हर तरफ़ से हर तरह से इस्लाम को बेछुरी हलाल करदें और खुद मुसलमान बल्कि लीडर बने रहें। واللہ لایھدی القوم الظلمین मुसलमानों पर फ़र्ज़ है कि ऐसे गुमराहों, गुमराहगिरों, बेदीनों की बात पर कान ना रखें। उन पर फ़र्ज़ है कि रवाफ़िज़ व मिर्ज़ाईया और खुद उन बेदीनों या जिस का फ़ितना उठता देखें सद्देबाब करें। वअ़्ज़े उलमा की ज़रूरत हो वअ़्ज़ कहलवाएं। इशाअ़ते रसाईल की हाजत हो, इशाअ़त कराएं। हस्बे इस्तेताअ़त इस फ़र्ज़े अ़ज़ीम में रूपया सर्फ़ करना, मुसलमानों पर फ़र्ज़ है। हदीस में है, रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं, जब ज़ाहिर हो, फ़ितने या फ़साद या बदमज़हबियां और आ़लिम अपना इल्म उस वक़्त ज़ाहिर ना करे, तो उस पर अल्लाह और फ़रिश्तों और आदमियों सब की लअ़नत है। अल्लाह ﷻ ना उस का फ़र्ज़ क़ुबूल करे ना नफ़्लि। जब बदमज़हबों के दफ़अ़ ना करने वाले पर यह लानतियां हैं, तो जो ख़बीस उनके दफ़अ़ करने से रोके। उस पर किस क़द्र अशद ग़ज़ब व लअ़नते अकबर होगी।''

وسیعلم الذین ظلموا ای منقلب ینقلبون۔ واللہ تعالٰی اعلم

(फ़तावए रज़विया ग़ैर मुतर्जम–स. 286, जि. 9)

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, आपकी जमाअ़त की सब से मोअ़तबर और मुस्तनद किताब बनामे 'फ़ैज़ाने सुन्नत' है। जिसमें रद्दे वहाबियत व फ़िरकहाए बातिला व कुफ़्फ़ार व मुर्तदीन व मुब्तदईन से मुतअ़ल्लिक़ कोई बाब नहीं क़ायम किया गया है। इस में कहीं भी इस्लाहे अ़क़ाईद से मुतअ़ल्लिक़ कोई तज़करा नहीं है। जब कि होना यह चाहिए था कि, फ़राईज़ व वाजिबात, सुन्नत व नवाफ़िल के फ़ज़ाईल से पहले इस्लाहे अ़क़ाईद बिल–खुसूस वहाबियों, देवबंदियों, ग़ैर मुक़ल्लिदों वग़ैरहम मलाउना के बारे में अपने क़ारेईन व मुतबईन को आगाह करना चाहिए और उनके अ़क़ाईदे बातिला के बारे में खुल्लम–खुल्ला बताकर अहले सुन्नत व जमाअ़त को उनसे हर हाल, हर आन बचने की अशद ताकीद करना चाहिए। अब ज़ैद सुन्नत अपने मौक़फ़ की ताईद में आ़ला हज़रत कुद्दसिर्रहु का यह फ़रमाने आ़लीशान पेश करता है। जिसको पढ़ कर हर सुन्नी का दिल बाग़–बाग़ हो जाएगा। इबारत मुलाहिज़ा फ़रमाएं ....

१. ''मेरे वो फ़ुनून, जिनके साथ मुझे पूरी दिलचस्पी हासिल है, जिनकी मुहब्बत, इश्क़ वशगुफ़्तगी की हद तक नसीब हुई है, वो तीन हैं और तीनों बहुत अच्छे हैं। सब से पहला, सब से बेहतर, सब से आ़ला, सब से क़ीमती फ़न यह है कि, रसूलों के सरदार (ﷺ) की जनाबे पाक की हिमायत के लिए उस वक़्त कमरबस्ता हो जाता हूं, जब कोई कमीना वहाबी गुस्तख़ाना कलाम के साथ आपकीशन में ज़बान दराज़ करता है। मेरे परवरदिगार ने उसे क़ुबूल फ़रमा लिया तो वो मेरे लिए काफ़ी है। मुझे अपने रब की रहमत से उम्मीद है कि, वो क़ुबूल फ़रमाएगा। क्योंकि उस का इरशाद है कि, मेरा बंदा मेरी बाबत जो गुमान रखता है, मैं उसके मुताबिक़ मुआ़मला फ़रमाता हूं।

२. फिर दूसरे नम्बर पर वहाबियों के अ़लावा उन तमाम बिदअ़तियों के अ़क़ाईदे बातिला का रद करके उन्हें गुज़ंद पहुंचाता रहता हूं। जो दीन के मुद्दई होने के बावजूद दीन में फ़िसाद डालते रहते हैं।

३. फिर तीसरे नम्बर पर बक़द्रे ताक़त मज़हबे हंफ़ी के मुताबिक़ फ़तवे तहरीर करता हूं। वो मज़हब जो मज़बूत भी है और वाज़ेह भी है, तो तीनों मेरी पनाहगाह की हैसियत रखते हैं, उन्हीं पर मेरा भरोसा है। मेरा उनके लिए मुस्तअ़द रहना और उनका मेरे लिए मख़्सूस होना, मेरे सीने को ख़ूब ठंडा करता है। अल्लाह ﷻ हमारे लिए काफ़ी है। वो बेहतरीन कारसाज़, बेहतरीन मौला, बेहतरीन वाली है।''

(माख़ूज़े अज़ : अल–इजाज़ातुल मतीना)

बकर दावती का इस सिलसिले में कहना है कि, आ़ला हज़रत का जो फ़रमान है, उनके ज़माने के ऐतेबार से है। इस ज़माने में वहाबियत ने जनम लिया था और वहाबियत बहुत ज़ोर पकड़ रही थी और हर ज़माने की शख़्सीयतों ने अपने ज़माने के ऐतेबार से काम क्या है। उसी तरहा इस ज़माने के अमिरे अहले सुन्नत अपने ज़माने के एतेबार से सुन्नतों की तरग़ीब व तबलीग़ कर रहे हैं और करवा रहे हैं।

मदीना तैय्यबा को हुजूर ﷺ से निस्बते सहीया और हक़ीक़िया मशहूरा मअ़रूफ़ा में ज़ाहिरी अ़हदे रिसालत ﷺ से आज तक किस को कलाम हैं? बकर दावती कहता है के मदीना मदीना की रट में इश्क़ शमिल है जब तक वह मुक़द्दासा, मुनव्वारा, मुत्हहारा, कहेगा दस मर्ताबा मदीना, मदीना, कहलेगा। दरयाफ़्त तलब अमर ये है के ज़ेद सून्नी का क़ोल

सही है या बकर दावति का? بینواتوجروا!

सवाल नं. २ :

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, अल्लाह तबारक व तआला का प्यारा फ़रमान दिल का तक़वा परखने के लिए इस तरह है कि, سبحان الله फ़रमाया अल्लाह ﷻ ने, श्आएरुल्लाह (अल्लाह की निशानीया) में सफ़ा–मर्वा, बदना को बतौरे ख़ास शुमार फ़रमाया है। तो मदीना तैय्यबा की अ़ज़मत, जलालत, शराफ़त व रिफ़अ़त का क्या कहना।'' سبحان الله इस शहरे पाक की क़द्र व मंज़िलत एक ईमान वाला ही जान सकता है।

बकर दावती का कहना है कि, जिस तरह अल्लाह–अल्लाह की तकरार से बेअदबी मफ़्हूम नहीं होती, ठीक उसी तरह मदीना–मदीना की तकरार से बेअदबी मफ़्हूम नहीं हो सकती। ज़ैद सुन्नी कहता है कि, अल्लाह इस्मे ज़ात व जलालत है। यक़ीनन अल्लाह–अल्लाह की तकरार से बेअदबी मफ़्हूम नहीं हो सकती। मगर मदीना तैय्यबा को सिर्फ़ मदीना कहना व कहलवाना यक़ीनन बेअदबी है कि क़ुरआन में अल्लाह तआ़ला ने मुस्तफ़ा प्यारे ﷺ की खाके गुज़र की क़सम याद फ़रमाई है। जब मक़ामे इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मुसल्ला बनाने का हुक्म हुआ तो उस शहरे पाक की अ़ज़मत कौन बयान कर सकता है, जिसमें हबीबुल्लाह ﷺ ने कम व बेश दस बरस तक बुद व बाश, आमद व रफ़्त इख़्तेयार फ़रमाई। यहां तक कि अ़र्शे मुअ़ल्ला से भी आ़ज़म व अफ़ज़ल दाईमी आरामगाहे पाक में यक़ीनी हयाते पाक के साथ आराम फ़रमा हो गए। उस शहरे महबूब ﷺ को सिर्फ़ मदीना–मदीना कहना कहलवाना बारगाहे रिसालत व निस्बते बारगाहे रिसालत के तई भोले–भाले सुन्नियों को बेअदब बना कर फ़ज़्ले इलाही से महरूम करना है और यह सख़्त गुमराही है। जब कि अजमेर शरीफ़ की निस्बत एक सवाल के जवाब में हुज़ूर आ़ला हज़रत क़ुद्दसिर्रहु यह फ़रमाते हैं, ''अजमेर शरीफ़ के नामे पाक के साथ लफ़्ज़ 'शरीफ़' ना लिखना और तमाम मवाक़े में उस का इलतेज़ाम ना करना। अगर इस बिना पर है कि, हुज़ूर सैय्यदना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की जलवा अफ़रोज़ी हयाते ज़ाहिरी व मज़ारे पुर अनवार को (जिनके सबब मुसलमान 'अजमेर शरीफ़ कहते हैं) वजहेशराफ़त नहीं जानता। तो गुमराह है। सही बुख़ारीशरीफ़ में है, रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं अल‌लाह ﷻ फ़रमाता है, तर्जुमा : जिसने मेरे किसी वली से अ़दावत की तो उससे मेरा ऐलाने जंग है'' और अगर यह नापाक इल्तेज़ाम बरबनाए कस्ल व कोताह क़लमी है तो सख़्त बे बरकता और फ़ज़्ले अ़ज़ीम व ख़ैरे जसीम से महरूम है और मुहीब को महबूब की हर शए अ़ज़ीज़ होती है। यहां तक कि उसकी गली का कुत्ता भी।'' (मुतर्जम–जि. 24, स. 486) (फ़तावए रज़विया ग़ैर मुतर्जम–जि. 6, स. 187–रज़ा एकेडमी) और फ़रमाते हैं, ''जिसकी मुहब्बत नाक़िस उस का ईमान नाक़िस।'' (मुतर्जम–जि. 24, स. 488)

रज़ा किसी सगे तैबा के पाँव भी चूमे
तुम और आह कि इतना दिमाग़ लेके चले

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दोनों में कौन हक़ पर है, ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بینواتوجروا !

सवाल नं. ३ :

ज़ैद सुन्नी कहता है, किसी दीनदार मुसल‌मान अगरचे आ़लमे उलमाए इस्लामिया को काफ़िर कहने वाले पर कुफ़्र लौटेगा। वो कहने वाला खुद काफ़िर हो जाएगा। जैसा कि नामनेहाद दावते इस्लामी की तरफ़ से एक इश्तेहार शाए हुआ है, जिसका उन‌वान है ''पैग़ामे आ़म अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी गुस्ताख़े रसूल काफ़िर'' معاذالله इस नापाक इश्तेहार की नक़्ल मुंदर्जज़ैल हैं।

दावते इस्लामी की तरफ से ''पैग़ामे आ़म अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी गुस्ताख़े रसूल ﷺ काफ़िर'' मौलवी अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी की इबारत मुलाहिज़ा फ़रमाएं, ''अल्लाह का महबूब उम्मत का राई किस प्यार की नज़र से अपनी पाली हुई बकरियों को देखता और मुहब्बत भरे दिल से उन्हें हाफ़िज़े हक़ीक़ी के सुपुर्द कर रहा है।'' (जज़ा अल्लाह अ़दूह बाबाहे ख़त्मे नुबूवत–स. 71)

अ़रबी में बकरियां चराने वाले को ''राई'' कहते हैं और दावते इस्लामी की तरफ़ से इस तरह की गुस्ताख़ी करने वाले पर फ़तवए कुफ़्र सादिर फ़‌रमाया और उसे गुस्ताख़े रसूल ﷺ क़रार दिया। मुलाहिज़ा फ़रमाएं, ''हुज़ूर ﷺ के लिए बहरा होने की दुआ़ करना या तकब्बुर वाला कहना या बकरियां चराने वाला कहना, अगरचे कुफ़्र है। लेकिन यह अलफ़ाज़ इन गुस्ताख़ों के गुस्ताख़ाना कलमात से बहुत हलके हैं।'' (ईमान की पहचान हाशिया, तम्हीदे ईमान–स.100)

معاذالله رب العٰلمین ونعوذ بالله इस इश्तेहार के बारे में बकर कहता है, वैब साईट ग़ैरों की है।

ज़ैद सुन्नी कहता है, आपकी तंज़ीम नाम.

नेहाद दावते इस्लामी की मुकम्मिल वैब साईट है। जिस पर आपकी तंज़ीम नामनेहाद दावते इस्लामी की तरफ़ से रात व दिन, लम्हा ब लम्हा नए–नए पैग़ाम व एहकाम नश्र किए जाते है। आपकी वैब साईट पर इस भयानक, नापाक, मरदूद और कुफ्र आलूद तहरीर का रद क्यों नहीं हुआ? अगर रद ना हुआ तो शरीअ़त का हुक्म उर्फ़ पर होता है। जैसा कि फ़तावए रज़विया शरीफ़ मुतर्जम–जि. 21, स. 417 पर आ़ला हज़रत अ़ज़ीमुल बरकत फ़रमाते हैं, ''शरए मुतहरा का क़ाएदा कुल्लिया यह है, अलमअ़हूदे उर्फ़ा का लमशरूत लफ़्ज़ा उर्फ़ा मुक़र्रा चीज़ लफ़्ज़ा मशरूत की तरह है।''

दावते इस्लामी बोल कर इलयास अ़त्तार और उसके मुत्तबईन मुराद लिए जाएंगे। इस बुनियाद पर मज़कूरा तहरीर का अज़ खुद रद किए बग़ैर या शरई वज़ाहत किए बग़ैर अगर इल्यास मर गया तो उसे यक़ीनन काफ़िर व मुरतद कहा जाएगा। इसी तरह उसके जितने भी अ़क़ीदतमंद और उससे मुहब्बत करने वाले मुत्तबईन हैं, वो भी इस नापाक तहरीर पर मुतलअ़ और राज़ी होने की सूरत में काफ़िर कहे जाएंगे। इस लिए इलयास की तौबा की वकालत या किसी दूसरे की तावील व तश्रीह इलयास पाकिस्तानी बानिए नामनेहाद दावते इस्लामी की तरफ़ से जो उरफ़न दावते इस्लामी कही जाती है, उसके हक़ मे शरअ़न नाक़ाबिले क़ुबूल होगी।

हुज़ूर सैय्यदे आ़लम ﷺ फ़रमाते हैं, तर्जुमा : ''किसी कलमागो को काफ़िर कहे। इन दोनों में एक पर यह बला ज़रूर पड़ेगी। अगर जिसे कहा वो सच काफ़िर था, जब तो ख़ैर, वरना यह लफ़्ज़ उसी कहने वाले पर पलट आएगा।'' (सही बुख़ारी शरीफ़,स. 893, सही मुस्लिमशरीफ़–स. 57, बहवाला फ़तावए रज़विया शरीफ़ मुतर्जम– जि. 15, स. 230)

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, इस नापाक तहरीर का रद नामनेहाद दावते इस्लामी पर शरअ़न फ़र्ज़ व लाज़िम है या नहीं?

शरिअ़ते मुतहरा का हुक्म उर्फ़ पर होता है। जैसा कि फ़तावए रज़वियाशरीफ़ मुतर्जम–जि. 21, स. 417 पर आ़ला हज़रत अ़ज़ीमुल बरकत फ़रमाते हैं, ''शरअ़ मुतहरा का क़ाएदए कुल्लिया यह है, अल. मअ़हूद उर्फ़ा का लमशरूत लफ़्ज़न उर्फ़ा मुक़र्रा चीज़ लफ़्ज़न मशरूत की तरह है।'' जैसा कि मज़कूर हुआ कि, दावते इस्लामी बोल कर इलयास अ़त्तार और उसके मुत्तबईन मुराद लिए जाएंगे। ऐसी सूरत में अगर इलयास अ़त्तार इस तहरीर का रद और तौबा किए बग़ैर मर गया तो यह सूरते बेअ़एनेही वहाबिया दयाबना की तरह हो जाएगी। जैसा कि आ़ला हज़रत अ़ज़ीमुल बरकत तम्हीदे ईमान बआयाते क़ुरआन के स. 49 पर फ़रमाते हैं, ''उन लोगों की वो किताबें, जिनमें यह कलमाते कुफ्रीया हैं। मुद्दतों से उन्होंने खुद अपनी ज़िन्दगी में छाप–छाप कर शाए कीये और उनमें ब्अ़ज़ दो–दो बार छपीं। मुद्दत हा मुद्दत उलमाए अहले सुन्नत ने उनके रद छापे, मुवाख़िज़े किए। वो फ़तवे जिसमें अल्लाह ﷻ को साफ़–साफ़ काज़ीब झूटा माना है और जिस की अस्ल मोहरी व दस्तख़्ती इस वक़्त तक महफ़ूज़ है और उसके फ़ोटो भी लिए गए जिन में से एक फ़ोटो कि उलमाए हरमैन शरी. फ़ैन को दिखाने के लिए और दिगर कुतुब व गालियां नामा गया था। सरकार ﷺ मदीना तैय्यबा में भी मौजूद है। यह तकज़ीब खुदा का नापाक फ़तवा अटठारा बरस हुए, रबीउल आख़िर 1308 हि. में रिसाला 'स्यानतुन्नास' के मुत्बअ़ हदया–क़तुल उलूम, मेरठ में और रद के शाए हो चुका। फिर 1318 हि. में मुत्बअ़ गुलज़ारे हस्नी, मुम्बई तोहफ़ए हनफ़िया में इस का और क़ाहिर रद छपा और फ़तवा देने वाला जमादिल आख़िर 1323 हि. में मरा। मरते दम तक साकित रहा। ना यह कहा कि, वो फ़तवा मेरा नहीं है। हालांकि खुद छापी हुई किताब से फ़तवे का इंकार कर देना सहल था, ना यही मतलब बताया। वो नहीं जो उलमाए अहले सुन्नत बता रहे है बल्कि मेरा मतलब यह है। ना कुफ्रे सरीह की निस्बत कोई सहल बात थी, जिस पर इल्तेफ़ात ना किया।'' जैसा कि नूरे मुस्तफ़ा सुन्नी मुस्लिम कमेटी, राजकोट ने जब आ़ला हज़रत अ़ज़ीमुल बरकत के ख़िलाफ़ जाली पोस्टर शाए किया तो जानशीने मुफ़्तीए आ़ज़मे हिन्द नबीरए आ़ला हज़रत ताजुश्शरिआ़ मद्दज़िल्लाहुल आ़ली ने उस का रद पोस्टर की शक्ल में शाए किया। उस पोस्टर का इक़्तेबास मुलाहिज़ा फ़रमाएं, ''मैं ख़ानवादए आ़ला हज़रत और सिलसिलए रज़विया नूरिया से मुंसलीक तमाम हज़रात की जानिब से उस फ़र्ज़ी इश्तेहार की सख़्त मज़म्मत करता हूं और तमाम सुन्नी मुसलमानों से अपील करता हूं कि इस किस्म के गुमराहकुन और फ़ितना परवर पॉम्प्लेटों पर क़तअ़न इल्तेफ़ात ना करें और ऐसी नाज़ेबा हरकतों का सख़्ती से इस्तेसाल फ़रमाएं और तमाम सुन्नी मुसलमान आपस में इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ बरक़रार रखें। अपने को हमेशा ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के दर का सग व गदा ही गरदानें।''

दस्तख़्त (जानशीने हुज़ूर मुफ़्तीए आज़मे हिन्द)
बमक़ाम : बरेलीशरीफ़
मोरख़ा 9 रबीउल आख़िर 1426 हि.
बमुताबिक़ 18 मई 2005 बरोज़ जुमेरात

देखिए, एक जाली और गुमनाम इश्तेहार, जिससे खुद हुज़ूर आ़ला हज़रत व सरकार ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हुमा का तक़ाबिल करके भोले सुन्नियों को गुमराह करने की नापाक कोशिश की गई तो उस का फ़ौरी रद हुज़ूर ताजुश्शरिआ़ मद्दज़िल्लाहुल आ़ली ने फ़रमा दिया। ऐ काश ! इसी तरह इलयास को भी हक़गोई की तौफ़ीक़ मिल जाती कि वो तकफ़ीरे आ़ला हज़रत पर नामनेहाद दावते इस्लामी की तरफ़ से इस मल्ऊन फ़तवे का रद, जिस में सैय्यदी आ़ला हज़रत कुद्दसिर्रहु की معاذالله तक्फ़ीर की गई, का रद शाए कर के बरी हो जाता।

बकर कहता है, वो आ़शिक़े आ़ला हज़रत मुत्बअ़ सुन्नत और बिदअ़ते सईय्या और तमाम हराम से बचने वाले हैं। ऐसे हादी व महदी को काफ़िर कहना दरकिनार, गुमराह, गुमराहगर, बदमज़हब, फ़ासिक़ व फ़ाजिर, ज़ाल व मज़्ल भी नहीं कह सकते।

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है, दोनों में किस का क़ौल सही है, या ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بينواتوجروا!

सवाल न. ४ :

ज़ैद सुन्नी कहता है, जानदार और चहरे वालों की तस्वीर, जिसकी शिनाख़्त हो सके, फ़ोटोग्राफ़, दस्ती, अ़क्सी, क़लमी, काग़ज़ी, अलग़र्ज़ किसी भी तरह की हो। सैय्यदना आ़ला हज़रत रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो ने ''अ़ता या अल–क़दीर फ़ि हुक्मुल तस्वीर'' में बहुक्मेशरअ़ ''हराम–हराम–हराम'' फ़रमाया और तमाम तसावीर को ''बुत'' फ़रमा कर फ़रमाया, ''बुत मबग़ूज़े इलाही है। बुत बनाना, बनवाना हराम है और मोअ़ज़्ज़ेमाने दीनी के लिए अशद तर हराम'' फ़रमाया। हमारे ज़माने के ताजुश्शरिआ़, मलकुल फ़ुक़्हा वारिसे उलूमे आ़ला हज़रत हुज़ूर अश्शाह मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ान साहब अज़हरी दाम ज़िल्लहु अलैना की तस्नी. फ़े मुबारक बनाम ''टी.वी., व्ही.डी.ओ. का ऑप्रेशन'' में तस्वीर और फ़ोटो से मुत्अ़ल्लिक़ मुफ़स्सिल व मुदल्ललशरअ़शरीफ़ के एहकाम मौजूद हैं।

बकर दावती कहता है, यह सब फ़र्ज़ी बातें हैं। जदीद दौर में तबलीग़े दीन के लिए इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया का ज़रिअ़ए इख़्तेयार करना ज़रूरी है। जब तक फ़ोटो ना होगा, मुक़र्रिर या मुबल्लिग़, महररीया मुसन्निफ़ को कैसे पहचाना जाएगा। ख़ास. तौर पर इलयास अ़त्तार जैसे नेक लोगों की ज़ियारत बज़रिअ़ए टी.व्ही. (मदनी चैनल) दीदारे अ़त्तार के उनवान से करना और कराना एक बहुत बड़ा नेक काम है कि लोग टेलीफ़ोन, टेलीग्राफ़, ख़त, ई–मेल व मोबाईल के ज़रिए उनसे लाखों की तादाद में पूरी दुनिया में मुरीद हो चुके हैं, वो अपने पीर का दीदार कैसे करेंगे?

ज़ैद सुन्नी कहता है, हराम काम को नेक बताना ज़लालत व गुमराही है। जैसा कि आ़ला हज़रत अ़ज़ीमुल बरकत रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो फ़तावए रज़विया मुतर्जम–जि. 21, स. 439 में फ़रमाते हैं, ''बिलजुम्ला हुक्मे वाज़ेह है और मस्अ़ला मुस्तबीन और हरकाते मज़कूरा हराम बिलयक़ीन और उनमें ऐतेक़ाद सवाब ज़लाले मुबीन उस शख़्स पर फ़र्ज़ है कि इस हरकत से बाज़ आए और हराम में सवाब की उम्मीद से ना खुद गुमराह हो, ना जाहिल मुसलमानों को गुमराह बनाए। इन तस्वीरों को नाआबाद जंगल में राह से दूर नज़रे अ़व्वाम से बचा कर इस तरह दफ़न करदें कि जहाल को उन पर अस्लन इतल्लअ़ ना हो या किसी ऐसे दरिया में कि कभी पायाब ना होता हो। निगाहे जोहलां से खुफ़िया अ़मीक़ कंडे में यूं सुपुर्द करदें कि पानी की मौजों से कभी ज़ाहिर होने का एहतेमाल ना हो।'' وَاللّٰهُ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْم

हमारे ज़माने के मुस्तनद, मोअ़तेमद, मोअ़तबर, मअ़रूफ़ व मशहूर आ़लिमे अहले सुन्नत मुफ़्तीए दीन व मिल्लत क़ाज़ीएशरअ़,शहर मुम्बई हुज़ूर महमूदुल उलमा मद्दज़िल्लाहुल आ़ली का एक फ़तवए मुबारका जो दलाईलेशरीआ़ से मुबरहन है। हमारे हाथों में है औरशरअ़शरीफ़ का क़ायदए कुल्लिया है कि ग़ैर काफ़िर को काफ़िर कहने वाले पर कुफ़्र पलट जाता है। किसी शख़्स ने नामनेहाद दावते इस्लामी वाले को काफ़िर कहा। शरीअ़ते मुतहरा की रू से कहने वाले को معاذالله काफ़िर होना था। मगर हुज़ूर महमूदे मिल्लत मद्दज़िल्लाहुल आ़ली ने 17 जमादिल अवला 1423 हि. में फ़रमाया, ''कहने वाला काफ़िर नहीं है।''

''मुत्लक़न टी.व्ही., व्ही.डि.ओ. को देखने पर जाईज़ व सवाब कहने पर आपके वालिद के हुक्मे कुफ़्र लगाने पर कोई गिरफ़्त और ऐतेराज़ नहीं कि महरमाते क़तअ़ईय्या को जाईज़ व सवाब कहने वाले पर ज़रूर कुफ़्र का इलज़ाम है।'' (फ़तावए महमूदुल उलमा हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती महमूद अख़्तर साहब रज़वी, नबीरए हुज़ूर सदरूश्शरिआ़–16 जमादिल

औला 1432 हि., रज़वी अमजदी दारूल इफ़्ता ज़ेरे एहतेमाम बज़्मे मुहिब्बाने रज़ा, 50/ न्यू क़ाज़ी स्ट्रीट, मुम्बई–03)

नीज़ बकर दावती कहता है कि, टी.व्ही., व्ही.डी.ओ. में जो कुछ देखा व दिखाया जाता है, वो फ़ोटो नहीं अ़क्स है। जैसे पानी व आईना में अ़क्स का देखना व दिखाना हराम नहीं कि अ़क्स है ना के तस्वीर। इसलीए टी.व्ही., व्ही.डी.ओ. को तबलीग़े दीन का एक अहम ज़रिअ़ा जान कर उसके ज़रिए दीनी प्रोग्रामों को नश्र करना और देखना मुस्तहसन है। हमा. रे ज़माने के नामवर उलमाए किराम के फ़तावा मुद्दतों पहले शाए हो चुके हैं। अब टी.व्ही., व्ही.डी.ओ. का मस्अ़ला ज़्यादा से ज़्यादा इख़्तेलाफ़ी है। इख़्तेलाफ़ में उम्मत के लिए रहमत है। इस लिए दावते इस्लामी के मदनी चैनल, व्ही.डी.ओ. रिकॉर्डिंग के ज़रिए कोई भी दीनी प्रोग्राम नश्र किया जाए तो उस नाशिर व मुबल्लिग़ मुसव्विर व मुसव्विर को ज़ाल व मज़्ले फ़ासिक़ व फ़ाजिर, बदमज़हब, बद्दीन जैसे बुरे अलक़ाब से याद करना हराम है और याद करने वालों पर तौबा लाज़िम है।

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, आईना व पानी की मिसाल बातिल है कि आईना व पानी के सामने जब तक असल है। उस वक़्त तक अ़क्स है। असल के हट जाते ही अ़क्स नहीं रहता। इसके बरख़िलाफ़ टी. व्ही., व्ही.डी.ओ. में असल की फ़ना को ज़माना गुज़र जाता है। मगर यह उसकी अ़क्सी तस्वीर मन व अ़न बाक़ी रहती है। इस लिए उस को अ़क्स ना कहा जाए बल्कि अ़क्सी तस्वीर ही कहा जाना सही है। इस लिए सैय्यदना आ़ला हज़रत कुद्दस्सीर्रहु ने "अ़ताया अल–क़दीर फ़ि हुक्मुल तस्वीर" में बहुक्मेशरअ़ दस्ती, अ़क्सी, क़लमी, काग़ज़ी हर तरह की तस्वीर को हराम लीखा है। नामनेहाद दावते इस्लामी अपने मदनी चैनल को देखना–दिखाना और सवाब बताते हुए उसको जारी रखने के लिए अ़व्वामे अहले सुन्नत के सदक़ाते वाजबा मस्लन सदक़ए फ़ित्र, ज़कात, फ़िदयए सलात, फ़िदयए सियाम, कफ़्फ़ारए ज़ुहार व रमज़ान व कफ़्फ़ारए यमीन व चर्मे क़ुरबानी वग़ैरह से इमदाद व एआनात कम व बेश रोज़ मर्रह के ऐलानात से معاذاللہ हासिल करती रहती है। हमारे अ़हद के सुलतानुल फ़ुक़हा ताजुश्शरिअ़ा मद्दज़िल्लाहुल आ़ली ने टी.व्ही. और व्ही.डी.ओ. के फ़ोटोस्कोप को तस्वीर माना और हराम फ़रमाया। किसी हराम पर सवाब की उम्मीद रखना या उम्मीद दिलाना यह सब खुली गुमराही, बदमज़हबी है। जैसा कि सैय्यदना आ़ला हज़रत कुद्दसिर्रहु ने "शिफ़ा लवालेहि फ़ि सौरील हबीब व मज़ारेहि व नआ़लेहि" मैं वाज़ेह तौर से मस्अ़ला बयान फ़रमाया है, "बिल जुम्ला हुक्म वाज़ेह है और मस्अ़लए मुस्तबीन और हरकाते मज़कूरा हरामे बिलयक़ीन और इन में ऐतेक़ादे सवाब ज़लाले मुबीन उस शख़्स पर फ़र्ज़ है कि इस हरकत से बाज़ आए और हराम में सवाब किया। मैद से ना खुद गुमराह हो ना जाहिल, मुसलमानों को गुमराह बनाए, उन तस्वीरों को नाआबाद जंगल में, अल्ख़।"

इस बुनियाद पर यह नापाक तंज़ीम दावते ग़ैर इस्लामी में शामिल शुदा अफ़राद व अमीरे दावते ग़ैर इस्लामी ज़ाल व मुज़्ल ज़रूर हैं। उसकी इमदाद व अआ़नत हर तरह से हराम व गुनाहे अ़ज़ीम और फ़िस्क़ व फ़ुजूर है।

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, ज़ैद सुन्नी का क़ौल सही है या बकर दावती का? بینواتوجرو!

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, नामनेहाद दावते इस्लामी की ख़राबियों में से ख़तरनाक ईमान सोज़ ख़राबी यह भी है के शरिअ़ते मुत्हरा का हुक्म बताने और शरई फ़तवा देने के लिए अक्सर व बेश्तर जाहलान बेलगाम को मुक़र्रर कर रखा है कि उनकी मौजूदगी में बड़े से बड़ा आ़लिमे हक़, फ़क़ीह ए वक़्त शरई एहकाम अपने इस्लामी सुन्नी भाईयों के सामने बयान नहीं कर सकता है। अगर बयान करता है तो नामनेहाद दावते इस्लामी के मानने वालों के साथ मज़ाहमत का सामना है और यह शदीद गुमराही और ज़लाले मुबीन है। बकर दावती कहता है कि, यह आ़लिम तो लड़ाने का काम करते हैं और दावते इस्लामी का काम लोगों की इस्लाहे आ़माल और उनके दर्मियान मुहब्बत की बुनियाद डालने का है।

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, उलमाए अहले सुन्त के बारे में बकर दावती ने जो कहा है, वो दर हक़ीक़त बकर दावती के बानी अमीर दावते ग़ैर इस्लामी के मंशूर में मौजूद है। इस के अ़लावा भी जो ख़ुराफ़ात इस मंशूर में हैं, उनको भी मुलाहिज़ा करते चलें। जैसा कि नामनेहाद दावते इस्लामी के मंशूर व मदनी हिदायात से वाज़ेह है।

१. **मदीना :** उलमा मुक़द्दस पत्थर हैं। उनके हाथ चूमो और आगे बढ़ जाओ। उलमा ने ना दीन का काम किया है और ना करने देंगे।

२. **मदीना :** अपने मर्कज़, ख़ानक़ाहों से दूर बनाओ। वरना ख़ानक़ाहों से लोग बैत होते रहेंगे।

ख़ानक़ाहों से बैत होने वाले दीन के काम में दिलचस्पी नहीं रखते हैं

३. **मदीना :** हिन्दुस्तान के दौरे के दौरान मैंने कुछ तहरीरें दी हैं। वो हालात की मजबूरी थी, वो तहरीरें ज़रूरत पड़ने पर दिखाई जाएं। मगर उन पर अ़मल ना किया जाए। अ़मल अपने तहरीकी अंदाज़ में किया जाए।

४. **मदीना :** अपने पीर भाईयों को ही ज़िम्मेदारी के ओ़हदों पर रखें ताकि खुसूसी हिदायात आ़म ना होने पाएं।

५. **मदीना :** अपनी किताब ''नमाज़ का जाईज़ा'' का पहला एडिशन ''अल–मकतबतुल मदीना'' से उठा लिया जाए। उसे अ़व्वाम के सामने आने ना दिया जाए।

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, आपने इलयास साहब की इस जसारत पर ग़ौर किया? ग़ज़ब खुदा का ! यह हुक्मे मुत्लक़ है। इस में किसी ज़मानए ख़ास का ज़िक्र नहीं। इलयास साहब कह रहे हैं कि, ''इस्लाम की चौदह सौ साला तारीख़ में उलमाए किराम ने ना दीन का काम किया, ना करने देते है और यही हाल सूफ़ियाए किराम और ख़ानक़ाहों का रहा है। अब मैं इस्लाम की दावत ले कर उठा हूं। कम व बेश २०० साल उम्र वाली वहाबियत और देवबंदियत ही नहीं, तमाम बातिल जमाअ़तें यही परचार ले कर उठी थीं कि वो असल इस्लाम ले कर आई हैं। पहले जो कुछ था, शिर्क था, बिदअ़त थी।'' معاذالله

कोई मुसलमान नशे की हालत में भी अपने इस्लाफ़ (पिछले ज़माने के उलमाए किराम और औलियाए किराम) पर इलज़ाम तराशी की जुर्रत नहीं कर सकता। यह जुर्रत पहले मौदूदी कर गए। (पढ़िए ''जमाअ़ते इस्लामी'') और अब इलयास साहब ने यह जुर्रत की है। सच फ़रमाया जानशीने हुज़ूर मुफ़्तीए आ़ज़मे हिन्द क़ाज़ीउल क़ुज़ात फ़िल हिन्द हुज़ूर ताजुश्शरिआ़ दामत बरकातहुमुल क़ुदसिया ने जूनाग़ढ़, गुजरात के एक जलसए आ़म में के जिसके आज भी शाहिद व गवाह मौजूद हैं। जिन्होंने हुज़ूर के यह कलमात सुने कि, ''दावते इस्लामी का दूसरा नाम जमाअ़ते इस्लामी है। चूंकि जिस तरह मौदूदी ने सिनेमा को जाईज़ क़रार दिया, उसी तरह इलयास भी सिनेमा को जाईज़ कहता है और नासिख़ और मंसूख़ की बात करता है।''

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दोनों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بينواتواتوجرو!

सवाल नं. ५ :

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, दावते ग़ैर इस्लामी का रद व तरद्दुद हर अहले हक़ पर फ़र्ज़े आ़ज़म है। यह जमाअ़त गुमराहों, बदमज़हबों और मुब्तदिईन की है। जैसा कि उनकी और उनके अमीर से मुत्अ़ल्लिक़ लिखी हुई किताबों से ज़ाहिर है।

बकर दावती यह कहता है कि, दावते इस्लामी में शामिलशुदा अफ़राद व अमीर को कहीं किसी आ़लिम ने ना काफ़िर कहा ना लिखा।

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, किसी बदमज़हब के रद व तरद्दुद के लिए उस बदमज़हब की तक्फ़ीर होना लाज़िम नहीं बल्कि हर बदमज़हब और बेदीन और गुमराह का रद व तरद्दुद फ़र्ज़े आ़ज़म है। जैसा कि सैय्यदी सरकार आ़ला हज़रत क़ुद्दस्सीर्रहु ने फ़तावए रज़विया ग़ैर मुतर्जम–स. 286 पर तहरीर फ़रमाया है।

यही पाक दर्स अपने सच्चे ग़ुलामों को सैय्यदी आ़ला हज़रत क़ुद्दस्सीर्रहु ने अपने अ़मल के ज़रिए अ़ता फ़रमाया। जैसा कि, तम्हीदे ईमान बआयाते क़ु. रआन, सुब्हानस्सुब्बूह अ़न ऐबे कज़्ब मक़्बूह, अल. –कौकबतुश–शहाबिया, सललस्यफ़ुल हिन्दया अ़ला कुफ़्रीयाते बाबुन्नजदिया, अज़ान मिनल्लाह,शमाएतुल अ़बर, सद्दुल फ़रार अ़लल सैदुल फ़रार, मुब्हसुल अज़ान, मफ़ावज़ाते तैय्यबा वग़ैरहा कुतुबे मुबारका देखी जा सकती हैं। जिसमें बिदअ़ते सय्याह का शिद्दत से रद किया गया। जबकि अज़ाने सानी का इख़्तेलाफ़ फ़ुरूई था ना कि ज़रूरयाते दीन का।

खुसूसियत के साथ हर उस किताब के मुतालआ़ को जिस से ईमान जाने का अंदेशा हो। ज़िना व शराब से ब–दरजहा बदतर हराम फ़रमाया गया, मस्लन तक़वियतुल ईमान।

सवाल :क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन के, ''तक़वियतुल ईमान का पढ़ना ब्अ़ज़ लोग बुरा बताते हैं और ब्अ़ज़ अच्छा कहते हैं। बुरा बताने वाले हुज़ूर का हवाला देते हैं।'' हम मशकूक है, जवाब से मुतलअ़ फ़रमाएं।بينواتوجروا

अल-जवाब : ''यह नापाक किताब सख़्त ज़लालत व बेदीनी और कलमाते कुफ़्र पर मुश्तमिल है। इस का पढ़ना ज़िना और शराबख़ोरी से बदतर हराम है कि इन से ईमान नहीं जाता और यह ईमान ज़ाईल करने वाली है।والعياذباللهتعالى वो जो इस का पढ़ना अच्छा बताते हैं गुमराह, बद्दीन बल्कि कुफ़्फ़ार व मुर्तदीन है। इसकी तफ़्सील देखनी हो तो फ़क़ीर की किताब 'सललस्यूफ़ुलहिन्दया और अल–कौकबतुलशह.

ाबिया, अल–अस्तेमाद अ़ला अजयालुलइरतेदाद और कशफ़ ज़लाल देवबंदिया वगै़रहा ईमान व इंसाफ़ की निगाह से देखी जाएं। मुसलमान का ईमान खुद ही गवाही देगा। वो मरदूद किताब तक़वियतुल ईमान नहीं तफ़यतुल ईमान है। यानी ईमान फ़ौत करने वाली।'' والعياذبالله‌تعالیٰ،والله‌اعلم दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दोनों में कौन हक़ पर है, ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بینواتوجروا!

सवाल नं. ६ :

ज़ैद कहता है, तस्वीर खींचना, खिंचवाना, देखना, दिखाना बिलाज़रूरत व बिला हाजतेशरई अशद हरामे मोअज्जबुल्लअ़नते खुदा और रसूल ﷻ व ﷺ व मलाईकए मासूमीन है और उस पर सवाब की उम्मीद रखना ज़लाले मुबीन है। हुज़ूर आ़ला हज़रत क़ुद्दसिर्रहु ने अ़ताया अल–क़दीर फ़ि हुक्मुल तस्वीर, शिफ़ा अल–वाला फ़ि सौरिलहबीब व मज़ारा व नआ़लेहि व दिगर कुतुब व फ़तावए मुबारका में हुरमते तस्वीर की अहादीसे करीमा को मुतवातिर या मुतवातिरूल मानी या हदे तवातुर तक फ़रमाया है।

यह दावते गै़र इस्लामी फ़ोटोग्राफ़ी करने करवाने, देखने–दिखाने को जाईज़ व सवाब, हुसूले बरकाते दीन व दुनिया का सबब अ़मलन व क़ौलन बताती है। इस नापाक तंज़ीम म शामिल अफ़राद व अमीर का यह क़ौल व अ़मल हुरमते तस्वीर के मुतवातिरूल मअनी हदीस का इंकार है। बकर दावती कहता है, यह सब इत्तहामात है। हमारे किसी भी क़ौल व अ़मल से हिल्लत तस्वीर का कोई सुबूत फ़राहम नहीं किया जा सकता। हमारी यह तंज़ीम दावते इस्लामी ख़ालिस किताब व सुन्नत के आईने मे शरीअ़ते मुतहरा के दाएरे में काम कर रही हें दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि दोनों में से किस का क़ौल हक़ व सवाब है? ज़ैद सुन्नी का या बकर दावती का? بینواتوجروا !

सवाल नं. ७ :

ज़ैद सुन्नी कहता है, टी.व्ही., व्ही.डी.ओ. की तसावीर यक़ीनी शरई हुरमत रखती हैं और इसके हराम होने में किसी भी आ़लिमे हक़ को ना आज तक कोई शक हुआ ना انشاءالله ताक़यामे क़यामत होगा। ऐसे हराम को बाईसे सवाब बताना और अज्रे अख़्रवी का ज़रिआ़ क़रार देना हराम पर हलाल का मोअ़तक़द बनना व बनाना है। बहुक्मे शरअ़शरीफ़ व बाइरशादे आ़ला हज़रत।

''हलाल को हराम, हराम को हलाल ठहराना अईम्मए हंफ़िया के मज़हबे राजेह में मुत्लक़न कुफ़्र है कि उनकी हिल्लत व हुरमत क़तई हो। जिसने किसी हराम को हलाल या हलाल को हराम मान लिया तो वो काफ़िर हो जाएगा। यह इस सूरत में है कि, वो हरामे लिज़ातेहि हो और उसकी हुरमते दलील क़तई से साबित हो। अगर साबित ख़बर वाहिद से हो तो काफ़िर नहीं होगा।'' (फ़तावए रज़वियाशरीफ़ मुतर्जम जि. 14, स. 147)

वो अफ़राद या जमाअ़त या तंज़ीम हर हाल में नाक़ाबिले इत्तबाअ़ है, जो معاذالله हराम को हलाल करने की पैहम कोशिश करती रहती है और अपनी इस नापाक कोशिश करती रहती है और अपनी इस नापाक कोशिश की ताईद में उलमा के ज़ाती,शख़्सी आ़माल को हुज्जत क़रार देती है। जबकि ख़िलाफ़े शरअ़ किसी का अ़मल किसी मुसलमान के लिए हुज्जतेशरई नहीं। जैसा कि फ़तावए रज़वियाशरीफ़ में हुज़ूर पुरनूर आ़ला हज़रत क़ुद्दस्सीर्रहु का यह फ़ैस्लाकुन इरशादे आ़ली है, ''शरअ़ सब पर हुज्जत है, वो कौन है जोशरअ़ पर हुज्जत हो सके?''

''यह–वो से हमें मुवाफ़िकत उसी वक़्त तक है, जब तक वो दीने हक़ से जुदा नहीं और उसके बाद عیاذبالله (तर्जुमा : अल्लाह की पनाह) जिसका क़ौल हम इस्लाम व सुन्नियत के मुवाफ़िक़ पाएंगे, तस्लीम करेंगे। ना इस लिए कि उस का क़ौल है बल्कि इस लिए कि सिराते मुस्तक़ीम से मुताबिक़ है। जिसकी बात ख़िलाफ़ पाएंगे। ज़ैद हो या उमरो, ख़ालिद हो या बकर दीवार से मार कर रसूले अकरम ﷺ की रिकाब से लपट जाएंगे। अल्लाह उन का दामन हम से ना छुड़ाए, दुनिया में ना उक़बा में। (आमीन)'' (फ़तावए रज़विया मुतर्जम–जि.27, स. 188)

बकर दावती कहता है, टी.व्ही., व्ही.डी.ओ. के ज़रिए बहुत सारे दीनी फ़ाएदे अ़व्वाम व ख़्वास को हासिल हुआ करते हैं इस बुनियाद पर दक़्यानूसी लोग पुराने ख़्यालात पर चलने वाले हज़रात अगर टी.व्ही., व्ही.डी.ओ. पर दीनी प्रोग्राम देखने से क़ौम को रोक देंगे। तो यह क़ौम बेदीन हो जाएगी। इन मुनाक़ए दीनी के पेशे नज़र इस ज़माने में मदनी चैनल का देखना मस्लके आ़ला हज़रत के मुत्बईन, उम्मते इजाबत के लिए ज़रूरी है।

ज़ैद सुन्नी कहता है कि किसी भी नफ़अ़ के पेशे नज़र हरामे शरई को हलाल व जाईज़ नहीं किया जा सकता। वरना सब से पहले معاذالله शराब व जुव्वाही(जुव्वा) को हलाल किया जाता, जिसके कुछ

ना कुछ मुनाफ़ा नसे क़तई में हैं।

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दोनो में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بينواتوجروا!

सवाल नं. ८ :

ज़ैद सुन्नी कहता है, दावते ग़ैर इस्लामी के मानने वालों ने अपने अमीर के तअ़ल्लुक़ से ऐसे ख़्वाब छापे और लिखे। जिसकी बुनियाद पर कहीं इल्मे ग़ैबे मुस्तफ़ा ﷺ मशकूक होता है। कहीं हुज़ूर ﷺ तआरूफ़ अमीरे अहले दावत के लिए तशरीफ़ लाते हुए नज़र आते हैं। कहीं औलियाए अकाबिर मस्लन हुज़ूर ग़ौसे आ़ज़म रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की शान में गुस्ताख़ी होती हुई नज़र आती है, कहीं हुज़ूर आ़ला हज़रत की तौहीन होती हुई नज़र आती है, कहीं अमीरे अहले दावत मिस्टर इलयास की फ़ैज़ रसानी और उनके इज्तेमाअ़ में शरीक होने वाले की फ़ज़ीलत, ख़्वाब में ज़ियारते हबीब ﷺ से ज़्यादा मालूम होती है। हर पढ़ने वाला معاذالله एक उम्मती को अपने ख़्याल में नबी ﷺ से अफ़ज़ल या कम अज़ कम नबी ﷺ के बराबर जानने लगे। जब तो यह सरीह कुफ़्र है। मुख़्तसर ऐसे लायानी ख़्वाबों का छापना, लिखना, पढ़ना, पढ़वाना यक़ीनन गुमराही व गुमराहगरी है।

नामनेहाद फ़ैज़ाने सुन्नत के स. 27 पर उनवान "मदीने के धूल की बरकत" के तहत एक इस्लामी बहन का ख़्वाब तहरीर किया गया। जिस का खुलासा यह है कि, हैदराबाद की एक इस्लमी बहन का हलफ़िया बयान है कि, "मेरी फूफी जान, जो हमारे साथ ही रहती हैं और अमीरे अहले सुन्नत मुहम्मद इलयास क़ादरी साहब से बैत हैं। जब उन्हें मालूम हुआ टी.व्ही., व्ही.सी.आर. के सख़्त मुख़ालिफ़ हैं। लेहाज़ा उन्होंने टी.व्ही. के सब तार वग़ैरह काट डाले, उसको स्टोर रूम में डाल दिया। उसी रोज़ दोपहर को जब मैं लेटी तो मेरी आंख लग गई। मैं मदनी सरकार ﷺ के दीदार फ़ैज़े आसार से मुशर्रफ़ हुई। सरकारे दो आ़लम ﷺ खुश हो कर फ़रमा रहे थे, आज मैं बेहद खुश हूं कि तुमने मेरे बहुत बड़े दुश्मन टी.व्ही. को निकाल दिया है। लेहाज़ा मैं तुम्हारे घर आया हूं। सुनो ! मेरे ग़ुलाम इलयास क़ादरी को मेरा सलाम कहना और उनको इस तरह की तहरीर भेजना اهلاوسهلامرحبامحمدالياس قادری लेहाज़ा इलयास को मेरा पैग़ाम पहुंचा देना कि किसी जुमेरात को हैदरा. बाद में इज्तेमाअ़ करें और उसमें औ़रतों का भी ख़ास एहतेमाम करें। तो उस इज्तेमाअ़ में पर्दे की अहमियत और टी.व्ही., व्ही.डी.ओ. की तबाह कारियों से मुतअ़ल्लिक़ बयान करें।" (फ़ैज़ाने सुन्नत–स. 27/28, मक्तबतुल मदीना)

मक़ामे हैरत है कि कल तक वो टी.व्ही. जो सरकारे दो आ़लम ﷺ का बहुत बड़ा दुश्मन था, वो आज معاذالله जाईज़ व मुबाह ही नहीं बल्कि बाईसे सवाब बन कर हुज़ूर ﷺ का दोस्त कैसे हो गया? और किसने बना दिया? नीज़ नासिख़ व मंसूख़ का इख़्तेयार किसे है?

आ़ला हज़रत सरकार "मरूजुलनिजा अल खुरूजुन्निसा" रिसाला में तहरीर फ़रमाते हैं, तर्जुमा : "निगह रख ऐ होशियार आदमी। जेब में मोती वाले क्योंकि जेब कतरे हर एक को जानते हैं।"

सालेह व तालेह किसी के मूंह पर नहीं लिखा होता। ज़ाहिर हज़ार जगह खुसूसन इस ज़म्ने फ़ितन में बातिन के ख़िलाफ़ होता है और मुताबिक़ भी हो तो सालेहीन व सालेहात मासूम नहीं और इल्मे बातिन व इदराके ग़ैब की तरफ़ राह कहां? और सब से दरगुज़रे तो आज कल आ़म्मएनास खुसूसन निसा में बड़ा हुनर आन हुई, जोड़ लेना तूफ़ान लगा देना है। काजल की कोठरी के पास ही क्यों जाईए कि धब्बा खाईए। लाजुर्मे सबील यही है कि बिल्कुल दरबाही जला दिया जाए।

वो सिर ही हम नहीं रखते जिसे सौदा हो सामां का

श्रअ़ मुत्हरे हकीम है और मोमिनीन और मोमिनात पर रऊफ़ व रहीम, उसकी आ़दते करीमा है कि ऐसे मवाज़ेअ़ अहतियात में माबाबास के अंदेशे से मालाबाएंस बह कह कर मना फ़रमाती है। जब शराब हराम फ़रमाई उस सूरत के बर्तनों में नबीज़ डालनी मना फ़रमा दी, जिन म शराब उठाया करते थे। ज़ैद कहे बारहा ऐसे मजामअ़ होते हैं। कभी फ़ितना ना हुअ. ा। तुर्जमा : "मटका हर मर्तबा सालिम नहीं पहुंचता।" तुर्जमा : "भरा मटका हर बार कुंएं से सालिम नहीं पहुंचता।"

आ़ला हज़रत कुद्दस्सीर्रहु एक सवाल के जवाब में तहरीर फ़रमाते हैं, "औ़रत की आवाज़ भी औ़रत है।"

फ़तावए रज़वियाशरीफ़ मुतर्जम–जि. 22, स. 240 में आ़ला हज़रत कुद्दस्सीर्रहु एक और सवाल के जवाब में तहरीर फ़रमाते हैं, "औ़रतों का इस तरह पढ़ना कि उनकी आवाज़ नामहरम सुनें, बाईसे सवाब नहीं बल्कि गुनाह है।" (ऐज़न–स. 245)

معاذالله औ़रतों का एहतेमाम करना और उनके

बाहमी इज्तेमाअ की तरग़ीब वो ज़ाते पाक क्योंकर दे सकती, जिसकी पाक शरीअत ने कनीज़ाने बारगाहे रिसालत ﷺ को सरापा पर्दे का हुक्म दिया हो। यहां तक कि अजनबिया औरत का अजनबिया औरत से पर्दे का हुक्मशरीअते मुत्हरा में मौजूद है। जिसके सुबूत में हुज़ूर सैय्यदना आला हज़रत अज़ीमुलबरकत ने "मरवेजुन्नीजा खुरूजुन्निसा" जैसे लाजवाब किताब हिदायत हम जैसे गुलामों को अता फ़रमाई।

बकर दावती कहता है, औरतों का इज्तेमाअ रोकना दक्यानूसी, पुराने ख़्यालात की बातें हैं। अमीरे अहले सुन्नत के बारे में जो कुछ ख़्वाब में एहकाम सादिर होते हैं, वो बेदारी से भी ज़्यादा यक़ीनी होते हैं।

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, सरकार आला हज़रत कुद्दस्सीर्रहु तहरीर फ़रमाते हैं, "**अगर ख़्वाब में कोई शख़्स इरशादे अक़्दस से ऐसी बात सुने जो हुज़ूरे अक़्दस ﷺ कीशरीअते साबिता के ख़िलाफ़ है, वो हरगिज़ ना मानी जाएगी और उस ख़्वाब देखने वाले की सुनने की ख़ता समझी जाएगी। सैय्यदना ईमाम जाफ़र सादिक़ रज़िअल्लाहो तआला अन्हो के ज़माने में किसी शख़्स ने हुज़ूरे अक़्दस ﷺ को ख़्वाब में देखा और उसको समझ में यह फरमाना आया कि,"शराब पी" जागा तो उस ख़्वाब से मुत्हैय्यर था। बहुत लोगों से पूछा, किसी से शाफ़ी जवाब ना पाया। बिलआख़िर ईमाम रज़िअल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया, इरशाद यह हुआ कि कि, शराब ना पी , तेरे सुन्ने की ग़लती है। बाद को मालूम हुवा वाक़इ मे वह श्ख़स श्राब पीता था और उसे तर्क की तरफ़ हिदायत फ़रमाई। बिलजुम्ला मस्अला वाज़ेह है और किताबें इसके बयान से लबरेज़।**" (फ़तावए रज़विया शरीफ़–जि. 11, ग़ैर मुतर्जम–स. 30/31)

बकर दावती यह कहता है यह ख़्वाब है ख़्वाब का देखना मुमकीन है और आलामे बेदारी में जो कुछ देखा, सूना, यह देखने वाले कि क़ीसमत है।

ज़ेद सून्नी कहता है के ख़्वाब का देखना तो बस में नहीं कि वो कैसा ख़्वाब देखे और क्या ख़्वाब देखे। मगर ऐसे ख़्वाबों का छापना नश्र करना, पढ़ना, पढ़वाना और उस पर राज़ी रहना जिसमें **معاذالله** तंक़ीस शाने रिसालत ﷺ का पहलू हो, वो यक़ीनन गुमराही, गुमराहगिरी, मंजरे बकुफ़्र व ज़लाल व निकाल है कि यह सब कुछ इंसान के लिए बस में है कि यह सब अपने नाम नेहाद दावते इस्लामी के अमीर की झूटी शान दिखाने के लिए एक सोची–समझी साज़िश के तहत किए जा रहे हैं। यही वजह है कि हमारे ज़माने के मोअतमद मुफ़्तीयाने दीन व मिल्लत ने अपनी मुस्तनद किताब "वक़ारूलफ़तावा" में ताहिरूल पादरी पर शरई हुक्म नाफ़िज़ किया और अमीरे अहले दावत पर भी शरई एहकाम नाफ़िज़ फ़रमाए। ताहिरूल क़ादरी का यह ख़्वाब "नवाए वक़्त, लाहौर" में छपा। उसके अलावा दिगर मुख़्तलिफ़ रसाईल ने और खुसूसन "तकबीर" ने तफ़्सील से छापा।

"हक़ीक़त यह है कि ख़्वाब इंसान के इख़्तेयार में नहीं और इंसान ख़्वाब में अजीब व ग़रीब उमूर भी देखता है। मगर किसी ख़्वाब को अपनी फ़ज़ीलत के लिए छापना और बयान करना, यह इंसान का इख़्तेयारी फ़ेअल है। लेहाज़ा ताहिरूल क़ादरी का ख़्वाब बयान करना और यह कहना कि, "हुज़ूर ﷺ ने पाकिस्तान में मुझे मुस्तक़िल अपना मेज़बान मुक़र्रर कर दिया है।" इस के अलावा भी इस ख़्वाब की बहुत सी बातें बयान कीं। जिनमें हुज़ूर ﷺ के मोहताज होने और ताहिरूल क़ादरी से मदद तलब करने, ठहराने, खाने–पीने का इंतेज़ाम करने और वापसी के टिकट का इंतेज़ाम करने का भी मुतालबा है। इन सब बातों से एक उम्मती के मुक़ाबले में नबीए करीम ﷺ की मोहताजी का इज़्हार होता है। लेहाज़ा यह तौहीने नबी ﷺ है और तौहीन करने वालों की जो सज़ा है, ताहिरूल क़ादरी उसी सज़ा का मुस्तहक़ है।" (वक़ारूलफ़तावा–स. 325, नाशिर : बज़्म वक़ारूद्दीन, गुलफ़शां लाईब्रेरी, ब्लॉक 4, गुलिस्ताने मुस्तफ़ा, कराची, पाकिस्तान)

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दानों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بینواتوجروا!

सवान नं. 9 :

ज़ैद कहता है, किसी हराम चीज़ को किसी मअज़म दीनी से मंसूब करना, उस हराम की **معاذالله** अज़मत ज़ाहिर करना है और यह गुमराही, गुमराहगिरी, बेदीनी है। दावते ग़ैर इस्लामी की सख़्त गुमराही, गुमराहगिरी यह भी है कि, इस नापाक तंज़ीम ने दुनियावी दिगर चैनलों की तरह टी.व्ही. पर एक चैनल शुरू किया। **معاذالله** उस का नाम "मदनी चैनल" रखा। ताकि लोग उस चैनल पर अम्रे बिलमअरूफ़ न्ही अन अल–मुंकिर के मुदियान की तस्वीरों को अज़मत की निगाह से देखें और इस नामनेहाद मदनी और अस्ल में शैतानी चैनल से क़रीब हो जाएं। जिस तरह "ज़द्दलताहिर" अपने "मिन्हाजुश्शैतान" को मिन्हाजुल क़ुरआन का नाम दे कर भोले–भाले सुन्नियों को अपनी तरफ़ माईल करके गुमराही व गुमराहगिरी का काम करता है।

बकर दावती कहता है कि, हमारे अमीरे अहले सुन्नत का कोई काम सुन्नत के ख़िलाफ़ नहीं। लेहाज़ा उन का मदनी चैनल पर आना, फ़ोटो दिखाना एक मस्नून तरीक़ा होगा। हमारे इल्म में हो या नहीं, लेकिन हमारे अमीरे अहले सुन्नत ख़ूब जानते होंगे और हम अपने अमीरे अहले सुन्नत ही की इत्बाअ़ को लाज़िम जानते हैं बाक़ी रद करने वालों के दलाईल और एहकामे हुरमत तसावीरे मोहमल हैं।

ज़ैद कहता है, यह बकर की हटधरमी और शरीअ़ते मुत्हरा के ख़िलाफ़ उसकी ज़िद है और हराम अशिया को मदीना तैय्यबा से निस्बत दे कर उसकी अ़ज़मत का एहसास दिलाना सख़्त बेदीनी, गुमराही व गुमराहगिरी है। (معاذالله)والعاذباللهتعالیٰबकर की तरह कोई हटधरम, हराम और हराम कारियों की जगह को मदीना तैय्यबा से निस्बत दे कर मदनी शराब ख़ाना, मदनी जुवा ख़ाना, अ़ला हाज़लक़ियास कहने लगे तो उलमाए दीन पर इस का रद व तरद्दुद फ़र्ज़ होगा।

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि दानों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بینواتوجروا !

सवाल नं. १० :

ज़ैद कहता है कि, ग़ैर आ़लिम को तबलीग़ पर मामूर करना और क़ौमे मुस्लिम पर जोहला को मुसल्लत करना और बग़ैर इल्मे फ़िक़ह। معاذالله ! क़ौमे मुस्लिम को फ़तवे देना जबकि उसूले फ़िक़ह चार हैं। किताब, सुन्नत, इज्माअ़, क़ियास। मगर फ़ैज़ाने सुन्त नामी किता (जो अमीरे अहले दावत जनाब इलयास साहब की तालीफ़ व तस्नीफ़ है) को वहाबियों की तबलीग़ी जमाअ़त के नापाक तर्ज़ पर फ़ज़ाईले आ़माल व तबलीग़ी निसाब की तरह हर मजलिस में दर्स के लिए मख़्सूस कर देना और एक ही रंग का हरा साफ़ा दावतियों के लिए ख़ास कर देना ''दीनदार'' नामी एक तंज़ीम जो कि पाकिस्तान ही की है। इस से और देवबंदियों से तशबीह की बुनियाद पर दावते ग़ैर इस्लमी मोहलक तंज़ीम से भोले–भाले अ़व्वामे मुस्लिमीन को बचाना अहले इल्म व अहले हक़ हज़रात के लिए ज़रूरी है।

बकर दावती कहता है कि, इतने आ़लिम कहां, जो गली–गली जा कर घर–घर पहुंच कर एक–एक फ़र्द को सुन्नत की तालीम दें।

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, बग़ैर इल्मदे दीन के फ़तवे देना, मसाईले शरईया बताना, किताबुल्लाह और इज्माए उम्मत व क़ियासे शरई को बालाए ताक़ रख कर ग़ैर मुक़ल्लिदों की नापाक रविश पर तालीमे सुन्नत बता कर गोया नामनेहाद अहले हदीस के रूप में दावती बनाकर ग़ैर मुक़ल्लिद बनाना है, जो हराम और अशद हराम है। जैसा कि वक़ारूलफ़तावा में है।

अ़मामा के बारे में ''ख़ुलासतुल फ़तावा–जि. सालिस'' के आख़िरी में फ़ारसी में एक रिसाला '' ज़ियाउलक़ुलूब फ़ि लिबासुल महबूब'' लगा हुआ है। ग़ालेबनशैख़ मुहद्दिसे दहेलवी अलैहिर्रहमा का है। उसमें इबारत यह है, तर्जुमा : ''पगड़ी बांधने में सुन्नत यह है कि बिल्कुल सफ़ेद हो, बग़ैर दूसरे रंग की आमेज़श के और हुज़ूरे अकरम ﷺ की पगड़ी मुबारक अकसर औक़ात सफ़ेद होती थी और कभी काली और कभी –कभी हरी।'' (ख़ुलासतुल फ़तावा–जि. 3, स. 153)

इसके अ़लावा सहाह की अकसर अहादीस में इस मज़मून की रिवायात हैं कि, हुज़ूर ﷺ को सफ़ेद लिबास पसंद था और सफ़ेद लिबास पहनने का हुक्म फ़रमाया और मुर्दों को सफ़ेद कफ़न देने की हिदायत फ़रमाई। (इब्ने माजा, किताबुल लिबास, बाबुलबयाज़ मिनलसियाब–स. 255)

लेहाज़ा अ़मामे में सुन्नत तो सफ़ेद रंग है। सियाह और हरा सुन्नत नहीं बल्कि जाईज़ हैं और इन रंगों में अगर किसी बदमज़हब से मुशाबहत पैदा हो जाए तो यह नाजाईज़ हो जाएगा। जैसा कि सदरूश्शरिआ़ हकीम अबुलउला मुहम्मद अमजद अ़ली आ़ज़मी मुत्वफ़्फ़ी 1376 हि. ने बहारेशरिअ़त में लिखा, **''मुहर्रम के ज़माने में काले रंग के कपड़े पहनना शिअ़ओं की मुशाबेहत की वजह से नाजाईज़ हैं और सुर्ख़ रंग के कपड़े ख़्वारिज की मुशाबेहत की वजह से नाजाईज़ हैं और सब्ज़ रंग के कपड़े जाहिल ताज़िया बनाने वालों की मुशाबेहत की वजह नाजाईज़ हैं।''** (लिबास का बयान–हि. 16, स. 62)

इस वक़्त दीददार के नाम से एक जमाअ़त काम कर रही है। उस का हर मम्बर सब्ज़ रंग का अ़मामा बांधता है। वो क़ादयानियत और दूसरे गुमराह फ़िरक़ों का मजमुआ़ है। उन पर सब ने कुफ़्र का हुक्म लगाया है। सब्ज़ रंग का अ़मामा बांधना, उनसे मुशाबेहत होगी। लेहाज़ा यह नाजाईज़ है। हदीस में फ़रमाया, तर्जुमा : ''जो किसी क़ौम से मुशाबेहत इख़्तेयार करे, वो उन्हीं में से है।'' लेहाज़ा अहले सुन्नत को उन बेदीनों की मुशाबेहत से बचना चाहिए। वरना उन बेदीनों को अपने मज़हब की इशाअ़त के लिए बहाना मिल जाएगा कि वो जाहिलों को दिखा कर यह बताएंगे कि, ''हमारे मज़हब के मानने वाले इतने हो गए।'' इस लिए इस रंग के अ़मामा से बचना चाहिए। दीनदार जमाअ़त वाले अपना मज़हब फैलाने

में दिन–रात मसरूफ़ हैं और अपनी मस्जिदें भी बना रहे हैं। न्यू कराची में अभी हाल ही में एक नई अ़लैहदा मस्जिद बनाली है। (वक़ारूल फ़तावा–जि. 2, स. 253/254)

लेहाज़ा एक ही हरे रंग का साफ़ा अपने और अपने मानने वालों को बांधना और बंधवाना पूरी ज़िन्दगी के लिए ज़रूरी कर देना कहां की इंसानियत है और कैसी दीनदारी है?

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दोनों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بینواتوجروا !

सवाल नं. ११ :

ज़ैद सुन्नी कहता है, तोहमत से बचने का हुक्मे शरअ़ शरीफ़ में मौजूद है। हदीस करीम का मफ़्हूम "तोहमत की जगह से बचो" आज तक दावते ग़ैर इस्लामी ने अपने आपको तोहमते शरई से ना बचाया, ना बचाने की कोई तदबीर की।

معاذاللہ ! सैय्यदना आ़ला हज़रत रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की तक्फ़ीर की तोहमत दावते ग़ैर इस्लामी पर सालहा साल से एक कुफ़्री तहरीर छपी हुई होने की सूरत में बाक़ी है। यह नामनेहाद दावते इस्लामी इस वईद से आज तक नहीं डरी कि कुफ़्र पलटता है और यह तो यक़ीनी अम्र है कि आ़ला हज़रत कुद्दस्सीर्रहु जैसी अ़ज़ीमुल मरतबत, मुक़्तेदाए अहले इस्लाम, जलीलुलक़द्र शख़्सियत का काफ़िर कहने वाला काफ़िर हो जाएगा। दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि दोनों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती?

सवाल नं. १२ :

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, दावते ग़ैर इस्लामी के इफ़्कार व नज़रयात महज़ डरामाई और अफ़सानवी हैं। इन के मक्तबतुल मदीना से छपी हुई अकसर वो किताबें जिन का तअ़ल्लुक़ अमीरे अहले दावत जनाब इलयास साहब से है। वो ज़्यादातर किताबें फ़र्ज़ी, अफ़सानवी, ग़ैर तहक़ीक़ी रिवायात व वाक़ियात से भरी हुई हैं। या अमीरे दावते ग़ैर इस्लामी के फ़ज़ाईल बयान करने में इस क़द्र मुबालग़ा आमेज़ ख़्वाब छापे गए हैं कि अमीरे अहले दावत की बड़ाई معاذاللہ अकाबिर औ. लियाए किराम जैसे सैय्यदना ग़ौसे आ़ज़म रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो तो दरकिनार, यहां तक कि हुज़ूर صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم पर ज़ाहिर करना चाहते हैं।

बकर दावती यह कहता है कि, दावते इस्ल. ामी को शुरू से आज तक उलमाए अहले सुन्नत के अकाबिर व अआ़ज़म की हिमायत हासिल रही। इस लिए यह जमाअ़त मुत्तबे मज़हबे अहले सुन्नत बमअ़रूफ़ मस्लके आ़ला हज़रत है।

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, जिन अकाबिर व अआ़ज़म की हिमायत दावते ग़ैर इस्लामी को हासिल हुई थी, वो खुश गुमानी की बुनियाद पर थी। लेकिन जब अमीरे दावते ग़ैर इस्लामी की वो तमाम कारगुज़ारियां जो ख़िलाफ़े शरिअ़त यानी "मस्लके आ़ला हज़रत हैं"। तो الحمدللہ رب العٰلمین अकाबिर व अआ़ज़मे अहले सुन्नत ने बक़द्रे कुदरत इस नामनेहाद दावते इस्लामी का रद व तरद्दुद शुरू फ़रमा दिया। शुरू ही नहीं फ़. रमा दिया बल्कि काफ़ी अर्से पहले से ही कर रहे हैं। ताकि उम्मते मुस्तफ़ा صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم की भोली भेड़ें इन ख़ूंख़्वार इबलीसी भेड़ियों का शिकार हो कर सक़्र में ना गिरें। सुबूत के लिए यह किताबें देखी जा सकती हैं। फ़ैज़ाने सुन्नत, मुग़ीलाने मदीना, बदला हुआ नाम वसाईले बख़्शिश, तआ़रूफ़े अमीरे अहले सुन्नत, चमकती आंखों वाले बुज़ुर्ग, आ़ला हज़रत की इंफ़ेरादी कोशिशें, सरकार का पैग़ाम अ़त्तार के नाम, मुख़ालेफ़त मुहब्बत में कैसे बदली, रसाईले अ़त्तारिया वग़ैरह–वग़ैरह।

ज़ैद सुननी कहता है कि, बिला उज़्रेशरई किसी हरामेशरई को हलाल मानना या किसी हलालशरई को हराम मानना अ़क़ाईदे अहले सुन्नत में कुफ़्र है। हुज़ूर आ़ला हज़रत कुद्दस्सीर्रहु इस मस्अ़ले की वज़ाहत जाबजा फ़रमाते हैं, "तस्वीर, फ़ोटोग्राफ़ी ऐसा ही हराम है, जिस का हलाल मानना अ़क़ाईदे अहले सुन्नत में कुफ़्र है या कुछ और?"

बकर दावती कहता है कि, तस्वीर, फ़ोटाग्राफ़ी की हुरमत मुख़्तलिफ़ फ़िह है। इस हराम को हलाल माने और इस हराम पर सवाब की उम्मीद रखने वाले पर इंदश्शरअ़ कोई मुवाख़िज़ा नहीं।

ज़ैद सुन्नी कहता है, सरकार आ़ला हज़रत एक सवाल के जवाब में तहरीर फ़रमाते हैं, कुतुबे अ़क़ाईद में तसरीह है कि, "तहलीले हराम व तहरीमे हलाल दोनों कुफ़्र हैं।" यानी जोशए मुबाह हो। जिसे अल्लाह جل جلالہ और रसूल صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم ने मना ना फ़रमाया, उसे मम्नू जानने वाला काफ़िर है जबकि उसकी अबा. हत व हिल्लत ज़रूरयाते दीन से हो या कम अज़ कम हंफ़िया के तौर पर क़तई हो। वरना इस में शक नहीं कि बेमना खुदा جل جلالہ और रसूल صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم मना करने वाला शरीअ़ते मुतहरा पर इफ़्तेरा करता है और अल्लाह جل جلالہ पर बोहतान उठाता है और इस का अदना दर्जा फ़िस्क़शदीद व कबीरा ख़बीसा है। (फ़तावए रज़विया मुतर्जम–जि. 21, स. 175)

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दोनों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती?بينعاتوجروا !

सवाल नं. १३ :

ज़ैद सुन्नी कहता है, नामनेहाद दावते इस्लामी के मुबल्लिग़ों के पीछे उस वक़्त तक नमाज़े पंजगाना, जुमअ़ व ईदैन का अदा करना नाजाईज़ व हराम है। जब तक यह लोग शरई तौबा करके इस नामनेहाद दावते इस्लामी से हर तरह से बरअत का ऐलान व इज़्हार ना करलें। सुबूत में मरकज़ी दारूल इफ़्ता बरेली शरीफ़ का फ़तवा पेश करता है। जिसकी तस्दीक़ करने वालों में हुज़ूर ताजुश्शरिआ़ दामतबरकातहुमुल कुदसिया और व दिगर हज़रात की तस्दीक़ात हैं।

"टी.व्ही., व्ही.डी.ओ. को जाईज़ समझना, खुली गुमराही शैतान की हमराही है।" मुहम्मद मुनाफ़ रज़वी, मरकज़ी दारूलइफ़्ता, 82, सौदागरान रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, 1 जमादिल औला 1435 हि. (अज़ फ़तवा—मुहम्मद मुनाफ़ रज़वी, मरकज़ी दारूल. इफ़्ता, बरेली शरीफ़) (मुसद्दक़ अज़— हुज़ूर ताजुश्शरिआ़ दामतबरकातहुमुल कुदसिया)

बकर दावती इस जवाब में यूं कहता है कि, मुबल्लिग़े मस्लके आ़ला हज़रत, दावते इस्लामी के मदनी चैनल को शैतान की हमराही और गुमराही बताना गुमराहों का काम है कि यह फ़तवा उन्हीं मुफ़्तीयों पर लौट जाएगा।

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दोनों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بينواتوجروا!

सवाल नं. १४ :

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, दावते ग़ैर इस्लामी को फ़रोग़ देने वाले अफ़राद ख़्वाबों का सहारा ले कर जिस क़द्र अमीरे अहले दावत की मद्दाही और ग़ैर शरई उमूर की निस्बत सरवरे कौनैन ﷺ की तरफ़ करते हैं, उनका हाल उन्हीं के मक्तबों में छपने वाली किताबों में बकसरत मौजूद है। मस्लन एक इस्लामी बहन का ख़्वाब तहरीर किया गया, जो पर्दे की एहमियत और टी.व्ही. की तबाह कारियों से मुत्अ़ल्लिक़ है। जैसा कि सवाल नं. १० के तहत गुज़रा। उस के मुत्अ़ल्लिक़ ज़ैद सुन्नी का कहना है कि, अल्लाह के हबीब ﷺ किसी वक़्त भी والعياذباللهتعالى शरीअ़ते साबेता के ख़िलाफ़ किसी ग़ुलाम व कनीज़ को कोई हुक्म ख़्वाब वग़ैरह में नहीं दे सकते।

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, "फ़ैज़ाने सुन्नत" नामी किताब जो दावते ग़ैर इस्लामी के मुबल्लिग़ों के लिए लाज़िम व ज़रूरी है और इसी एक किताब का दर्स दुनिया और इसी किताब से हिदायत की राह ढूंडना हर दावती के लिए दावते ग़ैर इस्लामी की तरफ़ से ज़रूरी है। जब कि फ़ैज़ाने सुन्नत में किसी भी बाब या फ़सल का मुस्तक़िल बयान, ईमानियात व अ़क़ाईदे अहले सुन्नत से मुत्अ़ल्लिक़ नहीं। जिस किताब में बाबुल ईमान या बाबुल अ़क़ाईद जैसे अहम फ़राईज़ का सबक़ ना हो, उस किताब का पढ़ना—पढ़ाना और उसी किताब तक महदूद कर देना सरासर गुमराही व बेदीनी है, मंजरे बकुफ़्र है। इस नापाक किताब में कुफ़्र व इरतेदाद की तालीमेशहद दिखाए, ज़हर पिलाए के पैराए में मौजूद है। मस्लन "हम ईद क्यों ना मनाएं? देखिए ना ! जब कोई मुल्क किसी ज़ालिम हुकूमत के चंगुल से आज़ादी पाता है तो हर साल उसी माह की उसी तारीख़ को उसकी यादगार के तौर पर जश्न मनाया जाता है।" इस कुफ़्री इबारत को सैय्यदना आ़ला हज़रत रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो के मुबारक फ़तवे की रौशनी में ज़ैद सुन्नी ने कुफ़्र ही समझा है और इसके सुबूत में यह फ़तवा पेश करता है।

मस्अ़ला नं. १ :

अगर कोई मुसलमान क़ब्ल शुरूए रमज़ान यह लफ़्ज़ इस्तेमाल करे कि, "हिन्दू होते तो बेहतर था। यह तीस रोज़े तो ना रखना पड़ते।"

मस्अ़ला नं. २ :

दूसरा शख़्स ऐसे लफ़्ज़ बसराहत यह बयान करे कि, "अल्लाह पाक ने तीस रोज़े बनाए हैं। पूरी क़ैद है, भूक—प्यास ले कर आए हैं, बड़ा ज़ुल्म है, रमज़ान के रोज़े बड़े ज़ालिम हैं। लेकिन जो ज़ुल्म करता है, थोड़े दिन रहता है।"

अल-जवाब :

यह दोनों शख़्स यक़ीनन काफ़िर व मुर्तद हैं और औ़रत रखते हों तो उनकी औ़रतें उनके निकाह से निकल गईं। औ़रतों को इख़्तेयार है कि बाद इद्दत जिस से चाहें निकाह करलें। यह काफ़िर अगर तौबा ना करे, अज़ सरे नौ इस्लाम ना लाए तो मुसलमानों को उनसे मेल—जोल हराम, सलाम—कलाम हराम, बीमार पड़े तो उन्हें पूछने जाना हराम, मर जाएं तो उनके जनाज़े में शिरकत हराम, उन्हें ग़ुस्ल देना हराम, उन पर नमाज़ पढ़ाना हराम, उनका जनाज़ा कंधे पर रखना हराम, जनाज़े के साथ जाना हराम, मुसलमानों के क़ब्रस्तान में दफ़न करना हराम, उनके अक़ारिब अगर हुक्मे शरीअ़त मानें तो उनकी मौत पर उनकी लाशें दफ़्ए उफ़ूनियत के लिए भंगी—चमारों से ठेले पर डलवा कर मुसलमनों और काफ़िरों सब के मुक़ाबिर

से जुदा किसी तंग गढ़े में कुत्ते की तरह फिकवा कर ऊपर से पाट दें।وذالک جزاء الظلمین (फ़तावए रज़वियाशरीफ़–जि. 14, स. 636 मुतर्जम)

हमारे ज़माने के मलकुल फुक़्हा हुज़ूर ताजुश्शरिआ दामत बरकातहुमुल कुदसिया ने इसी कुफ़्री इबारत जो फ़ैज़ाने सुन्नत में मत्बूअ़ है, के तअ़ल्लुक़ से किए गए एक सवाल के जवाब में रेकॉर्डिंग में इरशाद फ़रमाया, ''अगर वाक़ई यही है जो साईल कह रहा है कि, ईदुल फ़ित्र का ज़िक्र करने के बाद उस पैराए में यह लिखी गई। इस से यह मुतबादिर और इस से यहीं मफ़्हूम निकलता है तो तबादुर की बिना पर हुक्मे कुफ़्र जो है, तबादुर की बिना पर लजूम का हुक्म होगा और उसकी वही मानिए मोईन हैं तो हुक्मे कुफ़्र इल्तेज़ामी होगा।'' (रेकॉर्डिंग)

हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती ग़ुलाम मुहम्मद साहब क़िबला, नागपूर ने भी शरई गिरफ़्त करते हुए बहुत पहले बानिए दावते गै़र इस्लामी पर हुक्मे कुफ़्र साबित किया था। नीज़ हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती शमशाद साहब बदायूनी और हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती अय्यूब साहब, जामेआ़ नईमिया, मुरादाबाद ने इसी मज़कूरए कुफ़्री ईबारत के तहत फ़तवए कुफ़्र सादिर फ़रमाया।

बकर दावती कहता है कि, ऐसे मुफ़्तीयों को जो किसी मुसलमान को काफ़िर कहे, उस पर तौबा व रूजू लाज़िम है और उनकी ताज़ीम व तकरीम और उनसे मिलना–जुलना, उनके जलसों में शिरकत करना सब नाजाईज़ व हराम हैं

ज़ैद सुन्नी कहता है, الحمدﷲ رب العلمین इन मुफ़्तीयाने किराम से ख़लत–मलत जलसे–जुलूस वगै़रह में हमारे अकाबिरे अहले सुन्नत ने बिला किसी चूं व चिरा के शिरकत व तअ़ल्लुक़ात रखने को रवा रखा है।

लेहाज़ा दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि इन दोनों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بینواتواجروا!

सवाल नं. १५ :

ज़ैद सुन्नी कहता है, कोई ऐसा अ़मल जो सुन्नते मोअक्केदा या गै़र मोअक्केदा हो, उस पर दूसरों को ताकीद करना या अ़मल करवाना अगर अंदेशए इस्तेहज़ा हो तो शरअ़न ऐसी सुन्नत की तबलीग़ मम्नू है। जैसे कितने दाढ़ी मुंडे हैं, जो नाम नेहाद दावते इस्लामी के मुबल्लिग़ों की तबलीग़ पर फ़ौरन एक ही सब्ज़ रंग के अ़मामे को सुन्नत समझ कर हरा साफ़ा बांध लेते हैं। बांधते ही नहीं, अपनी टोपियों पर सिलवा कर या पिन कर के معاذاﷲ हेल्मेट की तरह पहन लेते हैं यह सुन्नते करीमा का इस्तख़फ़ाफ़ और इस्तेहज़ा का सबब है। जबकि अ़मामा शरीफ़ से मुज़य्यन होने की सुन्नत यह है कि, जब भी बांधा जाए, पेंच दर पेंच बांधा जाए और जब किसी ज़रूरत के तहत सिर से जुदा किया जाए तो पेंच–पेंच खोला जाए। यह दावते गै़र इस्लामी सुन्नतों की मुबल्लिग़ नहीं बल्कि सुन्नतों का इस्तेहज़ा और मज़ाक़ उड़ाने के लिए तशकील दी गई है। यूंही मुग़ीलाने मदीना में टोटी, बल्ब, पंखा, स्वीच, बटन, ढक्कन, चमचा, यहां तक कि सिर पर तरबूज़ रख कर सलाम कहना वगै़रह –वगै़रह। क्या यह खुला हुआ इस्तेहज़ा व तमस्ख़ुर है या नहीं? और जैसा कि हुज़ूर पुर नूर सैय्यदी आ़ला हज़रत रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की खुली हुई करामत है कि आज के नए फ़ितने और انشاءاﷲ क़ियामे क़ियामत तक हर उठने वाले नित नए फ़ितनों का रद और अबताले बातील मुक़द्दस मुबारक तहरीरों से होता रहेगा। जैसा कि एक सवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं, ''मगर यहां एक दक़ीक़ा भी वाजिबुललेहाज़ है जो सुन्नते मोअक्केदा ना हो या उस का एक तरीक़ा मुतैय्यन ना हो और ब्अ़ज़ तर्क़ अ़व्वाम में ऐसे ऊपरी हो गए हों कि उस के बजा लाने से सुन्नत पर हंसेंगे। तो वहां उस गै़र मोअक्केदा और मोअक्केदा के इस तरीक़ए ख़ास का तर्क ही मस्लेहत होता है कि एक इस्तहबाब के लिए लोगों का दीन क्यों फ़ासिद हो? सुन्नत पर हंसना معاذاﷲ कुफ़्र तक ले जाता है और मुसलमानों को कुफ़्र से बचाना फ़र्ज़ है।'' नीज़ ''शम्ला अ़मामा'' में फ़रमाया कि, ''जहां–जहां उस पर हंसते हैं और दुम से तशबीह देते हों, वहां 'शम्ला ना छोड़ा जाए।'' (फ़तावए रज़वियाशरीफ गै़र मुतर्जम–जि. 9, हि. ब, स. 110)

बकर दावती कहता है कि, हमारे अमीरे अहले सुन्नत दीन से ऐसे बेख़बर नहीं जो सुन्नतों की तबलीग़ की एहमियत से वाक़िफ़ ना हों।

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दोनों में कौन हक़ पर है? या ज़ैद सुन्नत या बकर दावती? بینواتوجروا!

सवाल नं. १६

ज़ैद सुन्नी कहता है, हमारे अहले सुन्नत व जमाअ़त के अकाबिर उलमाए किराम तक़रीर व तहरीर से शयातीने वहाबिया के इसी तरह छपे हुए ख़्वाबों का रद व तरद्दुद व अबताल फ़रमाते रहे और अ़ववामे अहले सुन्नत उन दज्जालों के दामे फ़रेब में

आने से बचाते रहे। अल–इमदाद, तज़किरतुल रशीद, बराहीने क़ातेआ और दिगर किताब दुश्नामियां में छपे हुए ख़्वाबों को पढ़ा जा सकता है। अगर दावतियों के ख़्वाब क़ाबिले रद व तरद्दुद नही तो फिर معاذالله उन वहाबिया के भी ख़्वाबों के रद व तरद्दुद की कोई ज़रूरत नहीं? यहां ''सरकार का पैग़ाम अ़त्तार के नाम, फ़ैज़ाने सुन्नत, तआरुफ़ अमीरे अहले सुन्नत'' किताबों में से मुछ ख़्वाब तहरीर किए जाते हैं ताकि उलमाए हक़ शरई हुक्म सादिर फ़रमा सकें।

सरकार का पैग़ाम अ़त्तार के नाम के स. ६ से १० पर एक ख़्वाब तहरीर करते हैं, बाबुल मदीना, कराची के इलाक़े के गार्डन वेस्ट के मुक़ीम ३७ साला इस्लामी भाई का हलफ़िया बयान का खुलासा है कि, १४१८ हि., बमुताबिक़ १६६६ ई. में मुझे वालिदे मोहतरम के साथ हज्जे बैतुल्लाह की सआदत नसीब हुई। बरोज़ जुमेरात बाद नमाज़े अ़स्र मस्जिदे नबवी शरीफ़ के अंदर बारगाहे रिसालत ﷺ में क़दमैन शरीफ़ैन की तरफ़ हाज़िर हो कर सर झुकाए दुरूद व सलाम के नज़राने पेश कर रहा था। तो यकायक मेरी क़िस्मत का सितारा चमक उठा। मैंने ऐन जागती हालत में देखा कि, मेरे प्यारे–प्यारे, जान से भी प्यारे आक़ा, हम बेकसों के मददगार, बेइज़्ने परवरदिगार, दो आ़लम के मालिक व मुख़्तार ﷺ तशरीफ़ ले आए। सरकार ﷺ के लबे मुबारक को जुंबिश हुई, रहमत के फूल झड़ने लगे। अलफ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए, ''मेरे अ़त्तार इस बार मदीना क्यों नहीं आए? उन्हें मेरा सलाम कहना और कहना, वो मदीना आएं। चाहे कुछ लम्हात के लिए ही आएं।'' मैंने बेसाख़्ता बढ़ कर दस्त बोसी की सआदत हासिल की। देखते ही देखते प्यारे आक़ा ﷺ तशरीफ़ ले गए।

''तसव्वुरे मुर्शिद की बरकत'' में है कि, दावते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना (हैद्राबाद बाबुल इस्लाम, सिंध) के एक तालिबे इल्म के हलफ़िया बयान का खुलासा है कि, दावते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना, हैद्राबाद (बाबुल इस्लाम, सिंध) ने 15 ज़िक़ाद 1428 हि. बमुताबिक़ 4 दिसम्बर 2006 ई. बरोज़ पीर, सुबह कम व बेश 03:11 बजे जामेअ़तुल मदीना के इम्तिहानात के नताईज के सिलसिले में होने वाले सुन्नतों भरे इज्तेमाअ़ ज़िक्र व नात में मुबल्लिग़े दावते इस्लामी का बयान था। बादे बयान शुरकाए इज्तेमाअ़ तसव्वुरे मुर्शिद के लिए मंक़बते अ़त्तार सुन रहे थे। शुरका पर अ़जीब कैफ़ियत तारी थी। मैं भी आंखें बंद किए अपने पीर व मुर्शिद शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत के तसव्वुर में गुम था कि यकायक मुझ पर रक़्क़त तारी हो गई और ग़मे मुर्शिद में रोने लगा। यहां तक रोते–रोते मेरी हिचकियां बंध गईं इतने में मेरी क़िस्मत का सितारा चमक उठा। क्या देखता हूं कि पैकरेशर्म व हया, मक्की–मदनी मुस्तफ़ा ﷺ निगाहें नीची किए, फ़ैज़ाने मदीना (हैद्राबाद) में तशरीफ़ ले आए। उनके हमराह ग़ौसे पाक रज़िअल्ला. हो तआला अन्हो और अमीरे अहले सुन्नत भी थे। प्यारे आक़ा ﷺ मदनी तरबियतगाह के क़रीब तशरीफ़ फ़रमा हो गए और अपना दस्तेशफ़क़्क़त ग़ौसे आ़ज़म रज़िअल्लाहो तअ़ला अन्हो के कंधे पर रख दिया। क़िबला अमीरे अहले सुन्नत पर रक़्क़त तारी थी। आपने रोते हुए ग़ौसे पाक रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो की गोद में सिर रख दिया। ग़ौसे पाक रज़िअल्लाहो तआला अन्हो ने बड़ी शफ़क़्क़त व मुहब्बत के साथ अमीरे अहले सुन्नत की पीठ सहलाने लगे। सरकारे मदीना ﷺ मेरी जानिब मुतवज्जा हुए और अमीरे अहले सुन्नत की तरफ़ इशारा करते हुए जो कुछ फ़रमाया, उसका मफ़्हूम कुछ यूं है, ''इस ज़माने के तमाम औलिया में इलयास क़ादरी से मुझे सब से ज़्यादा मुहब्बत है। हमेशा इन की इताअ़त करते रहना और इन के दामन को कभी मत छोड़ना। इन के दिए हुए मदनी इनामात के मुताबिक़ अ़मल करते रहना, मदनी इनामात मेरे इस प्यारे की तरफ़ से उम्मत के लिए तोहफ़ा हैं। इल्मे दीन हासिल करने में कोताही मत करना, असातेज़ए किराम और वालदैन की इताअ़त करते रहना, दुनिया और आख़ेरत में हर जगह कामियाब रहोगे।''

इसी किताब के स. 29 से 31 पर एक और ख़्वाब लिखा कि, हैद्रबाद, बाबुल इस्लाम, सिंध के मशहूर शहर अहमदाबाद के मुक़ीम इस्लामी भाई ने हलफ़िया यानी खुदा की क़सम खा कर बयान किया कि, मुझे 4 रमज़ानुल मुबारक 1429 हि. में मदीना शरीफ़ हाज़री की सआदत नसीब हुई। ५ शव्वालुल मुकर्रम 1429 बरोज़ पीर या मंगल दोपहर तक़रीबन ढाई बजे अलविदाई हाज़री के लिए बारगाहे रिसालत ﷺ में ऐन सुंहरी जालियों के सामने अपना और दिगर हज़रात का सलाम पेश कर रहा था। उसी दौरान जब मैंने अपने पीर व मुर्शिद, शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानीए दावते इस्लामी हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबुलबिलाल मुहम्मद इलयास अ़त्तार क़ादरी का सलाम बारगाहे रिसालत ﷺ में पेश किया तो जालीए मुबारक के पीछे से आवाज़ आई,

मेरे इलयास को भी सलाम कहना।'' मैं एकदम चौंका और इधर–उधर देखा तो हर तरफ़ माहौल पुरसुकून था। ईद गुज़र जाने के बाईस वहां बहुत कम लोग थे। मैंने एक बार फिर अपने पीर व मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत का सलाम बारगाहे रिसालत ﷺ में पेश किया। दोबारा जालीए मुबारक के पीछे से आवाज़ आई, ''मेरे इलयास को भी मेरा सलाम कहना।'' यह सुन कर मुझ पर रक़्क़त तारी हो गई और बेइख़्तेयार मैंने एक बार फिर अपने पीर व मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत का सलाम बारगाहे रिसालत ﷺ में पेश किया। तो खुदा की क़सम मैंने बेदारी के आ़लम में फिर यह सुना, ''मेरे इलयास को भी मेरा सलाम कहना।'' मैं काफ़ी देर खड़ा रोता रहा। कुछ दिनों के बाद मैं पाकिस्तान लौट आया। चूंकि अमीरे अहले सुन्नत उन दिनों मुल्क से बाहर थे। लेहाज़ा मैं आप को सरकार ﷺ का सलाम ना पहुंचा सका। अमीरे अहले सुन्न्त की वतन वापसी के बाद भी मैं काफ़ी अर्से सरकार ﷺ का सलाम आप को ना पहुंचा सका। 30 सफ़रूल मुज़फ़्फ़र बरोज़ जुमेरात जब मैंने मदनी चैनल पर सुंहरी–सुंहरी जालियों का रूह परवर मंज़र देखा तो यकायक वही आवाज़ मुझे फिर सुनाई दी। अलफ़ाज़ कुछ यूं थे, ''मेरे इलयास को तुमने अभी तक मेरा पैग़ाम नहीं पहुंचाया?'' मैं बेक़रार हो गया और आख़िरकार ३ रबीउन्नूर शरीफ़ बरोज़ इतवार बाद नमाज़े ईशा वालिद साहब के हमराह आ़लमी मदनी मरकज़ फ़ैज़ाने मदीना, बाबुल मदीना, कराची में होने वाले मदनी मुज़ाकरा में शिरकत के लिए पहुंचा।

बकर दावती कहता है, ख़्वाब देखने पर कोई पाबंदी नहीं। ख़्वाब छापने का मक़सद यह है कि लोग अमीरे अहले सुन्न्त के दर्जाते आ़लिया से वाक़िफ़ हो जाएं और जो लोग ऐसे ख़्वाबों का रद व अबताल करते हैं, वो अपनी दुनिया व आख़ेरत को ख़राब कर के अमीरे अहले सुन्नत के फ़ैज़ से महरूम होते हैं।

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दोनों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بينواتوجروا!

सवाल नं. १७ :

ज़ैद सुन्नी कहता है, तस्वीरकशी हर हाल में हराम है। हराम से किसी भी तरह की मुंफ़अ़त हासिल नहीं की जा सकती और सवाब की नीय्यत तो معاذالله सख़्ततरीन गुमराही है।

बकर दावती कहता है कि, तस्वीर का मस्अ़ला मुख़्तलिफ़ है। इख़्तेलाफ़ी मस्अ़ला पर अ़मल करने में कोई गुमराही नहीं और ना ही معاذالله मुख़्तलिफ़ मस्अ़ले पर अ़मल करने वाले को गुमराह या गुमराहगर कहा जा सकता है।

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, तस्वीर का मस्अ़ला यहां तक मुख़्तलिफ़ कहा जा सकता है। जहां तक हुज़ूर पुरनूर सैय्यदना आ़ला हज़रत कुद्दस्सीर्रहु ने एक सवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाया, ''मुख़्तलिफ़े फ़ीह का यह मानी हरगिज़ नहीं कि, हरामे शरई को معاذالله बिलाख़ौफ़े आख़ेरत हलाल करके बिला नकीर जाईज़ कर लिया जाए।'' (फ़तावए रज़विया शरीफ़ मुतर्जम–जि. 21, स. 196 से 200)

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दोनों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بينواتواجروا!

सवाल नं. १८ (अ) :

एक किताब जिस का नाम ''रसाईले अ़त्तारिया, एहकामे ग़ुस्ल, वज़ू और नमाज़'' जिस के मुअल्लिफ़ नामनेहाद दावते इस्लामी के अमीर जनाब इलयास साहब हैं। नाशिर मकतबतुल मदीना, 124, मटिया महल, उर्दू मार्केट, जामअ़ मस्जिद, दहली–06 इस ज़िक्र की हुई किताब के स. 9 पर यह इबारत लिखी हुई है। जिसका अंदाज़े किताबत और तहरीर इस तरह है।

१. ''पेशाब, पाख़ाना, वदी, मज़ी, मनी, कीड़ा या पत्थरी मर्द या औ़रत के पीछे से निकलें तो वज़ू जाता रहेगा।''

और स. 28 पर इस तरह है,

एहतेलाम के पाँच ज़रूरी एहकाम :

(मदीना) : मनी,शहवत के साथ अपनी जगह से जुदा,
(मदीना) : अगर मनी पतली पड़ गई,
(मदीना) : अगर एहतेलाम होना,
(मदीना) : अपने हाथों से माद्दा ख़ारिज करने से,

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, मदनी फूल तो यह हैं, जैसा कि हुज़ूर पुरनूर सरकार आ़ला हज़रत कुद्दस्सीर्रहु यूं फ़रमाते हैं,

क्या बात रज़ा उस चमनिस्ताने करम की
ज़ोहरा है कली जिसमें हुसैन और हसन फूल

और जिस मक़ाम व महल पर लफ़्ज़ ''मदीना'' का इस्तेमाल किया गया है, वो इंतेहाई बेअदबी और गुस्ताख़ी का हामिल है।

बकर दावती यह कहता है कि, हमारे अमीरे अहले सुन्नत को मदीना से इतनी मुहब्बत और इश्क़ है कि हर मौक़े, हर जगह मदीना का इस्तेमाल करते हैं, इससे उनके मदीने से इश्क़ का अंदाज़ा किया जा सकता हे कि उनको मदीना से कितना इश्क़ है और

इस के ऊपर जो कोई हुक्म लगाए, वो पूरा जाहिल है।

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दोनों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بينواتوجروا!

(ब) :

ज़ैद सुन्नी कहता है कि, इन वजू तोड़ने वाली नजासतों को मदनी फूल कहना, मदीना तैय्यबा की सख़्त तौहीन है और मदीना तैय्यबा की अ़ज़मत को घटाना है। जबकि सैय्यदना आ़ला हज़रत अ़ज़ीमुलबरकत अलैहिर्रहमा ने सैय्यदुल आ़लमीन ﷺ के रौज़ए अनवर को काबा बताते हुए गुज़रगाहे सरवरे आ़लम ﷺ मस्लन मक्का मुअ़ज़्ज़मा, मदीनए तैय्यबा, बदर शरीफ़, उहद शरीफ़, हुनैन शरीफ़, ताईफ़ शरीफ़ वअ़लला हज़ाअलक़यास की अ़ज़मत के गीत इस तरह गाए,

खाई क़ुरआं ने ख़ाके गुज़र की क़सम
उस कफ़े पाकी हुरमत पे लाखों सलाम

सैय्यदी सरकार आ़ला हज़रत क़ुद्दस्सीर्रहु की तालीमे एहतियात का यह आ़लम कि तर्जुमा करते वक़्त आदाबे शरअ़ का किस क़द्र पास व लिहाज़ रखने का हुक्म है। जैसा कि फ़रमाते हैं, ''एक ही बात इख़्तेलाफ़े तर्ज़े बयान से ताज़ीम से तौहीन तक बदल जाती है। जैसे नोश फ़रमाईए, तनावुल फ़रमाईए, नोश जान फ़रमाईए, खाओ, निंगलो, थोरो, ज़हरमार करो और ताज़ीम व तौहीन में किस क़द्र मुख़्तलिफ़ हैं। तो सिर्फ़ इतना उज़्र कि हमने तर्जुमा किया है, काफ़ी नहीं हो सकता।'' (फ़तावए रज़विया शरीफ़ मुतर्जम–जि. 29, स. 60)

बकर दावती यह कहता है, यह हमारा मोनोग्राम है। हमें इससे कुछ मतलब नहीं, क्या ताज़ीम है और क्या तौहीन है।

ज़ैद सुन्नी यह कहता है कि, इस ''रसाईले अ़त्तारिया'' की मज़कूरा इबारत से मदीना तैय्यबा की तौहीन व बेहुरमती व बेअदबी है या नहीं? अगर है तो तौहीन करने वालों के लिए क्या हुक्म है? और अगर नहीं तो क्यों नहीं? क्या इस में शरई तावील है? या हो सकती है? बकर दावती कहता है कि, इस में कोई तौहीन नहीं।

दरयाफ़्त लतब अम्र यह है कि, दोनों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بينواتوجروا!

ज़ैद सुन्नी यह कहता है कि, बफ़र्ज़ ग़लत इस किताब ''रसाईले अ़त्तारिया'' मज़कूरा को पढ़ने के बाद कोई शख़्स ख़्वाह मर्द हो या औ़रत, रफ़ए हाजत के लिए इस्तंजाख़ाना में हो और दरवाज़ा ख़टख़टाने वाले से यूं कहे, ''ठहरो ! معاذالله मैं अभी मदनी फूल कर रहा हूं।'' معاذالله शहवत के साथ अख़राजे मज़ी पर कोई यूं कहे कि, ''मदनी फूल से मेरा वजू टूट गया, कपड़े नापाक हो गए।'' या कोई शख़्स बाहोश व हवास अपनी बीवी के साथ जिमाअ़ करते वक़्त यूं कहे कि, ''معاذالله मदनी फूल निकल रहा है।'' या हवा निकालते वक़्त कोई معاذالله यूं कहे कि, ''मदनी फूल निकल जाए तो पेट हलका हो जाए।'' इन मज़कूरा तौहीन आमीज़ लफ़्ज़ों के कहने या कहलवाने पर क्या शरई एहकाम जारी होते हैं?

(क) :

अगर इन बातों के कहने में मज़कूरा किताब ''चालीस मुतफ़र्रिक़ मदनी फूल'' की सुर्ख़ी के साथ जिन नवाक़िज़े वजू और नजासतों का ज़िक्र किया गया है। معاذالله मदीना तैय्यबा की तौहीन ना हो तो काई अनपढ़ या हासिद व बेअदब इस किताब को देख कर पढ़ कर यह सुर्ख़ी लगादे कि, معاذالله चालीस मुतफ़र्रिक़ चिश्ती फूल या معاذالله चालीस मुतफ़र्रिक़ क़ादरी फूल, चालीस मुतफ़र्रिक नक़्शबंदीफूल, चालिस मुतफ़र्रिक़ सहरवरदी फूल, चालीस मुतफ़र्रिक रज़वी फूल, चालीस मुतफ़र्रिक बरकाती फूल, चालीस मुतफ़र्रिक़ अशरफ़ी फूल, चाल. ीस मुतफ़र्रिक हशमती फूल, वारसी फूल, निया. ज़ी फूल, मिस्बाही फूल, अ़ज़ीज़ी फूल, अज़हरी फूल, निज़ामी फूल, साबरी फूल, वग़ैरह–वग़ैरह। चालीस मुतफ़र्रिक़ बरेलवी, अजमेरी, किछौछवी, कलयरी, सरि. हन्दी, पीलीभीती, मारहरवी, कालपवी, बिलग्रामी, गुल. बरगवी फूल वग़ैरह–वग़ैरह। इन मुबारक सलासिले तैय्यबा और मक़ामाते मुक़द्देसा के साथ इन नवाक़िज़े वजू और नजासतों का इसी नामनेहाद दावते इस्लामी के तौर पर लिखे तो इस में इन सलासिले तैय्यबा और मक़ामाते मुक़द्देसा की तौहीन होगी या नहीं? या नाम. नेहाद दावते इस्लामी की तौहीन चालीस मुतफ़र्रिक़ अ़त्तारी फूल, पेशाब, पाख़ाना, वदी, मज़ी, मनी, कीड़ा या पत्थरी मर्द या औ़रत के आगे या पीछे से निकलें तो वजू जाता रहेगा। लिखने से अ़त्तारियों की तौहीन होगी या नहीं? जबकि तौहीन का मदार उर्फ़ पर है।

(ख) :

या इन नजासतों यानी नवाक़िज़े वजू को معاذالله मदनी फूल कहना या कहलवाना, अज़रूए शरअ़ मदीना तैय्यबा की तौहीन व बेअदबी है या नहीं? और ऐसे लोगों के लिए अज़रूए शरअ़ क्या हुक्म है?

जबकि सरकार आ़ला हज़रत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो, ताज़ीम व अदब का यह सबक़ अपने गुलामों को देते हैं। चुनांचे फ़तावए रज़विया मुतर्जम–जि. 21, स. 415 से 416 पर यह इरशादात आफ़्ताबे नीम रोज़ से ज़्यादा रौशन व ताबनाक हैं। (بدر الانوار فی آداب الآثار)

तस्रीहाते आईम्मा से मालूम हो गया कि, ताज़ीम के लिए ना यक़ीन दरकार है। ना कोई ख़ास सनद बल्कि सिर्फ़ नामे पाक से इस शए का इश्तेहार काफ़ी है। ऐसी जगह बेइदराक सनद ताज़ीम से बाज़ ना रहेगा। मगर बीमार दिल पुर आज़ार दिल, जिस में ना अ़ज़मते शाने मुहम्मद ﷺ बरवजह काफ़ी ना ईमाने कामिल। ज़ैद के इन सब ईरादात पर बकर दावती कमाले बेहयाई से कहता है, معاذاللہ इस तरह कहने में किसी की कोई तौहीन नहीं, कहीं की कोई तंक़ीस नहीं।

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दोनों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بینواتوجروا!

सवाल नं. १९ :

ज़ैद सुन्नी कहता है, फ़ैज़ाने सुन्नत जैसी ग़ैर मोअ़तबर और ग़ैर मोअ़तमद किताब का मुताल्आ़ सख़्त क़बिह और बुरा है। बकर दावती कहता है कि, हमारी तंज़ीम और तहरीक दावते इस्लामी का यह बुनियादी दस्तूर है। हम इस किताब को नहीं छोड़ सकते।

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि दोनों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بینواتوجروا!

सवाब नं. २० :

ज़ैद सुन्नी कहता है, मीलाद शरीफ़ यानी जश्ने ईद मीलादुन्नबी ﷺ जैसे पसंदीदा और मक़बूल बारगाहे इलाही दीनी पहचान को छोड़ कर معاذاللہ ख़ालिस इज्तेमाअ़ कह कर, कहलवा कर वहाबियों, बेदीनों के दिल को ठंडक पहुंचाना है। والعاذباللہتعالیٰ

बकर दावती कहता है, इज्तेमाअ़ के मानी इकट्ठा होना और इकट्ठा हो कर किसी भी उनवान के तहत बाहमी तबादलए ख़्याल करना है। हमारी तहरीक दावते इस्लामी इसी लिए दीनी सुन्न्त भरा इज्तेमाअ़ कहती है। ताकि लोग यह समझें कि इस में दीनी गुफ़्तगू होगी।

ज़ैद सुन्नी कहता है, मीलादुन्नबी ﷺ को छोड़ कर सच्चे सुन्नियों को कोई भी ऐसा लफ़्ज़ या ऐसा उनवान जान–बूझ कर इख़्तेयार नहीं करना चाहिए, जिससे सुन्नी और वहाबी की पहचान معاذاللہ ना रह जाए। सरकार आ़ला हज़रत क़ुद्दस्सीर्रहु ने क़यामे क़ियामत तक अपने गुलामों को यह सबक़ अ़ता फ़रमा दिया।

हश्र तक डालेंगे हम पैदाईशे मौला की धूम
मिस्ले फ़ारस नज्द के क़िल्ले गिराते जाएंगे

बकर दावती कहता है, ज़माने को देख कर चलो, तुम उधर को हवा हो जिधर की।

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दोनों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بینواتواجروا!

सवाल नं. २१ :

ज़ैद सुननी यह कहता है कि, दावते ग़ैर इस्लामी का सुन्नतों भरा इज्तेमाअ़ पूरी दुनिया में कर रही है। फ़र्ज़ों भरा इज्तेमाअ़ कब करेगी? कौन करेगा? ऐ काश ! यह मस्लके आ़ला हज़रत की मुबल्लिग़ होती तो आ़ला हज़रत सरकार के इस क़ौले मुबारक की इत्तेबाअ़ ज़रूर करती। जैसा कि फ़तावए रज़विया शरीफ़ में है,

''जब कोई गुमराह बद्दीन राफ़ज़ी हो या मिर्ज़ाई, वहाबी हो या देवबंदी वग़ैरहम خذلھم اللہ تعالیٰ اجمعین मुसलमानों को बहकाए, फ़ितना व फ़िसाद पैदा करे, तो इस का दिफ़अ़ और क़ुलूबे मुस्लिमीन से शुबहाते शयातीन का रफ़अ़ फ़र्ज़े आ़ज़म है। जो इससे रोकता है, یسدون عن سبیل اللہ ویبغونھا عوجاً में दाख़िल है कि अल्लाह की राह से रोकते हैं, उसमें कुजी चाहते हैं।''

इसी में फ़रमाते हैं, ''शैतान के मक्र को दिफ़अ़ करने से रोकना, शैतान के सिवा किसी मुसलमान का काम हो सकता है। जो ऐसा कहते हैं, अल्लाह ﷻ और शरीअ़ते मुतहरा पर इफ़्तरा करते हैं। मुस्तहिक़ अ़ज़ाबे नार व ग़ज़बे जब्बार होते हैं।''

इसी में फ़रमाते हैं, ''मुसलमानों पर फ़र्ज़ है कि, ऐसे गुमराहों, गुमराहगरों, बेदीनों की बात पर कान ना रखें। उनपर फ़र्ज़ है कि रवाफ़िज़ व मिर्ज़ाईया और ख़ुद उन बेदीनों या जिस का फ़ितना उठता देखें, सद्देबाब करें। वअ़ज़ उलमा की ज़रूरत हो, वअ़ज़ कहलवाएं। इशाअ़ते रसाईल की हाजत हो, इशाअ़त कराएं। हस्बे इस्तेताअ़त उस फ़र्ज़े अ़ज़ीम में रूपया सर्फ़ करना मुसलमानों पर फ़र्ज़ है।'' हदीस शरीफ़ में है, रसूले अकरम ﷺ फ़रमाते हैं, ''जब ज़ाहिर हों फ़ितने या फ़िसाद या बदमजहबियां और आ़लिम अपना इल्म उस वक़्त ज़ाहिर ना करे तो उस पर अल्लाह ﷻ और फ़रिश्तों और आदमियों सब की लअ़नत है। अल्लाह ﷻ ना उस का फ़र्ज़ क़ुबूल करे, ना नफ़िल।'' जब बदमज़हबों के दिफ़अ़ ना करने

वाले पर यह लअ़नतनियान हैं तो जो ख़बीस उन के दिफ़अ़ करने से रोके, उस पर किस क़द्र अशद ग़ज़ब व लअ़नते अकबर होगी। وسیعلم الذین ظلموا ای منقلب ینقلبون

इस मुफ़स्सिल, मुकम्मल हुक्मे शरअ़ और क़ौले फ़ैसल की रौशनी में दावते ग़ैर इस्लामी या उसके हामी व मददगार और नामनेहाद मुबल्लिग़ीन अ़मलन–तहरीरन इस फ़र्ज़े आ़ज़म से खुलेतौर पर ऐराज़ व इंहेराफ़ करके इन वईदों के मुस्तहिक़ हुए।

बकर दावती कहता है कि, हम अपने अमीर के तरीक़े पर काम करते हैं और हमारा तरीक़ा काम करने का अलग है।

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दोनों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بینواتوجروا!

सवाल नं. २२ :

ज़ैद सुन्नी कहता है, अल्लाह ﷻ के महबूब ﷺ से जिस चीज़ को भी निस्बत हो जाए, उसके अदब में मुबालग़ा की कोई इंतेहा नहीं। अगरचे कि मदीना तैय्यबा की बेअदबी की जाए। मगर अफ़सोस कि, नामनेहाद दावते इस्लामी और उसके साथियों ने मदीना तैय्यबा का गुस्ताख़ व बेअदब معاذ اللہ आ़म्माए मुस्लिमीन को बना दिया। निस्बत की ताज़ीम व अदब में मुबालग़ए शरई की इंतेहा यह है, जो हुज़ूर सैय्यदना आ़ला हज़रत "अल–मोअ़तमदुल मुस्तनद हाशिया अल–मोअ़तक़िदुल मुत्तफ़िद" में यह ईमान अफ़रोज़, वहाबियत व सुलहकुल्लियत सोज़ वाक़िआ़ तहरीर फ़रमाते हैं, "एक वली अपने बेटे के साथ खाना खा रहे थे कि दस्तरख़्वान पर लौकी आई और यह ज़िक्र चला कि, हुज़ूर ﷺ को लौकी पसंद थी। तो गोया बेटे ने खुद को लौकी नापसंद होने का ज़िक्र किया तो वली ने तलवार खींच ली और इस पर वार किया। यहां तक कि उस का सिर ज़मीन पर गिरा दिया।" तो अल्लाह ﷻ उस पर रहमत करे, जिसकी खुशी और नाखुशी अल्लाह ﷻ व रसूल ﷺ के लिए है और अल्लाह ﷻ उनके वसीले से हम पर रहमत नाज़िल फ़रमाए। (मुतर्जम : हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ हज़रत अ़ल्लामा अलहाज मुफ़्ती मुहम्मद अख़तर रज़ा क़ादरी बरकाती अज़हरी मद्दज़िल्लाहुल आ़ली, अज़ : हुज़ूर सैय्यदना आ़ला हज़रत)

बकर दावती कहता है कि, हम अपने अमीर के तरीक़े पर काम करते हैं और हमारा तरीक़ा काम करने का अलग है।

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दानों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بینواتوجروا!

सवाल नं. २३ :

ज़ैद सुन्नी कहता है, नामनेहाद दावते इस्लामी के क़ाफ़िले शहर–बशहर, क़रया ब क़रया वहाबियों की मशहूर तबलीग़ी जमाअ़त की रविश पर कारबंद हैं। वहाबियों की तबलीग़ी जमाअ़त और नामनेहाद दावते इस्लामी के क़ाफ़िले में सिवाए नाम की तबदीली के और कोई फ़र्क़ नहीं। नामनेहाद दावते इस्लामी भी अपने क़याम व तआ़म से अल्लाह ﷻ की मस्जिदों की बेहुरमती करती है और अल्लाह वालों का बेअदब बनाती है। معاذ اللہ رب العٰلمین

तबलीग़ी जमाअ़त के मंशूर और काम करने के तरीक़े और नामनेहाद दावते इस्लामी के तरीक़ए कार एक जैसे हैं। शआ़रे वहाबियत को अपना लेना यह किसी सहीउल मज़हब व मस्लक सुन्नी का काम नहीं हो सकता।

बकर दावती कहता है कि, इसके बग़ैर मुसलमानों में दीन का काम करना मुश्किल है। हमारे अमीर का ऐसा ही हुक्म है और यही तरीक़ा है।

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दानों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بینواتوجروا!

सवाल नं. २४ :

ज़ैद सुन्नी कहता है, नामनेहाद दावते इस्लामी अपने मानने वालों के साथ रमज़ानुल मुबारक जैसे महिने में बहालते ऐतेकाफ़ टी.व्ही. वग़ैरह के ज़रिए मदनी चैनल अपने अमीर मिस्टर इलयास कतयानवी, सुम्मा कराचवी, पाकिस्तानी के प्रोग्रामों की कैसेट देखते और दिखाते हैं। तस्वीर की नुमाईश वो भी इज़्ज़त वाले घर में और वो भी ऐतेकाफ़ की हालत में हराम पर हराम है। ऐतेकाफ़ नफ़्से अम्मारा की हर ख़्वाहिशे बद से रोकना और गुनाहे कबाईर व सग़ाईर से बचने का नाम है। इन हराम कामों से ऐतेकाफ़ टूट जाता है और बजाए सवाब के गुनाह का इरतेकाब होता है। अल्लाह ﷻ फ़रमाता है, "औरतों को हाथ ना लगाओ, जब तुम मस्जिदों में ऐतेकाफ़ से हो।" (तर्जुमए रज़विया : सूरए बक़र, आ. 187)

और फ़रमाता है, "ऐ ईमान वालों ! जिनहोंने तुम्हारे दीन को हंसी खेल बना लिया है। वो जो तुम से पहले किताब दिए गए और काफ़िर उनमें किसी को अपना दोस्त ना बनाओ और अल्लाह से डरते रहो। अगर ईमान रखते हो और जब तुम नमाज़ के लिए अज़ान दो तो उसे हंसी–खेल बनाते हैं। यह इस लिए कि वो नीरे बेअ़क़्ल लोग हैं।" (तर्जुमए रज़विया : सूरए माएदा, आ. 57,58)

और फ़रमाता है, "और छोड़ दे उन को, जिन्होंने अपना दीन हंसी–खेल बना लिया और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने फ़रेब दिया और कुरआन से नसीहत दो कि कहीं कोई जान अपने किए पर पकड़ी ना जावे।" (तर्जुमए रज़विया–सूरए ईनाम–आ. 70)

आ़लमे उलमाए अहले सुन्नत शहज़ादए सरकार आ़ला हज़रत हुजूर मुफ़्तीए आ़ज़मे हिन्द अलैहिर्रहमतुर्रिज़वान ने मुफ़स्सिल, मदल्लल फ़तवए मुबारका एक सवाल के जवाब में दीन को खेल–तमाशा बनाना और बनाने वालों पर इरशाद फ़रमाया, "दीन को तमाशा बनाना, हराम अशद हराम।" फिर उस हराम को मस्जिद में वो भी हालत ऐतेकाफ़ा में वो भी माहे करम रमज़ानुल मुबारक में हराम पर हराम, फिर उस पर यह दावए ऐतेकाफ़। لاحول ولاقوۃ الاباللہ العلی العظیم

बकर दावती कहता है, हमें तो दीन का काम करना है और यह हमारा अपना तरीक़ए कार है।

मस्अला :

अज़–पोस्ट : बाली, ज़ि. होड़ा, मुरासिला ईमाम बख़्श साहब क़व्वाल।

फ़िल्म यानी बास्कोप देखना जाईज़ है या नाजाईज़? क्योंकि इन दिनों एक हज की फ़िल्म तैय्यार हो कर कलकत्ता में आया हुआ है। जिस को बताया गया है कि, "उलमाए अ़रब व मिस्र ने जाइज़ क़रार दिया है और शाहाने अ़रब व मिस्र ने खुद देखा है और पसंद किया है।" दुनियाए इस्लाम को बड़ी एहमियत के साथ देखने का शौक़ दिलाया है। इस लिए आ़म मुसलमानों में इस की शोरिश पैदा है कि जब उलमाए अ़रब व मिस्र ने जाईज़ किया है, तो फ़िर इस फ़िल्म का देखना कैसे नाजाईज़ हो सकता है? उम्मीदवार हैं कि एहकामे खुदावंद ﷻ व फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ से हम मुसलमानों को आगाह फ़रमा कर फ़ेअ़ले नामेशुरू से बचाएं।

अल-जवाब :

अल्लाह–अल्लाह क्या ज़माना है, किसे आज यह वहम कि, मुसलमानों को सिनेमा जैसी चीज़े के हराम व गुनाह होने में शक होगा। किसे ख़तरा था कि, इस तमाशे के जवाज़ का ख़्वाब उन्हें नज़र आएगा, यह वहम जागेगा। किसे अंदेशा था कि, ऐसे बदकाम जिसे ख़्वास व अ़व्वाम मुतलक़न गुनाह व हराम जानते–मानते हैं, कभी उसे अगरचे इस में कहीं के ख़्वास भी मुब्तेला हो जाएं जिन्हें मुब्तेला सुनें ही नहीं, खुद अपनी आंखों देखीं जाईज़ समझा जाएगा। किसे यह ख़्याल था कि, कोई बदलगाम इस गाने–बजाने और तसावीर नचाने का तमाशा देखने दिखाने को जाईज़ समझे–समझाएगा। वो भी इस दलीले ज़लील से कि, फ़लां जगह के अ़व्वाम ही नहीं ख़्वास भी इस में मुब्तेला बताए जाते हैं। किसे यह गुमान था कि, कोई अदना से अदना समझ वाला भी शरीअ़त कहें कि, "मौलवी कहलाने वाले हाकिमों, बादशाहों के क़ौले फ़ेअ़ल का नाम रखेगा कि वो जो कहें, करें जाईज़ व हलाल होगा। कैसे नाजाईज़ व हराम होगा?"

अब तक तो मुसलमान यही समझते थे कि, जाहिल से ज़्यादा आ़लिम व अ़व्वाम से ज़्यादा ख़्वास पर इरतेकाबे गुनाह से अशद इलज़ाम होता है। रज़ील से ज़्यादा शरीफ़ इरतेकाबे गुनाह पर मुवर्रिदे इलज़ाम, मतऊन व मलाम हुआ करता था। यह ना जानते थे कि, अब ज़माना ऐसा आ गया कि लोग मौलवी कहलाने वालों और बादशाहों के ऐसे नाजाईज़ क़ौल व फ़ेअ़ल को सुन कर बजाए इसके कि उन्हें अशद मुलज़िम समझें, उन पर अशद तअ़न करें, उन्हें सख़्त मतऊने मलाम ठहराएं, उनके इस क़ौल व फ़अ़ल को दलीले जवाज़ बना लेंगे। والعیاذ باللہ تعالیٰ वो भी ऐसा नजस क़ौल, जिस से मुसलमानों के दीन को हंसी–खेल बना लेने वालों की इमदाद व अआ़नत हो। हज मुसलमानों के दीने मुक़द्दस का रूक्न है। इस का तमाशा बनाना, दीन को हंसी–खेल बना लेना नही तो क्या है? فانا للہ وانا الیہ راجعون۔ ولاحول ولاقوۃ الاباللہ العلی العظیم सिनेमा देखना तो वैसे भी हराम है और हज की फ़िल्म का तमाशा देखना, हराम दर हराम, अशद हराम, अशद अख़बस काम है। हज की फ़िल्म के साथ राज़ी होना, अपने दीन को हंसी–खेल बना लेने पर राज़ी होना है। इस से अख़बस और अशद नजस बदतर काम और क्या होगा? गाने–बजाने की हुरमत और तसावीर की नाजवाज़ी के मुत्अ़ल्लिक़ अगर तफ़सील देखना हो तो "अ़ताया अल–क़दीर" और "अल–तजीर" रसाईले आ़ला हज़रत कुद्दस्सीर्रहु मुलाहिज़ा करें।

बअ़ज़ लोग खुशामद में बादशाहों, हाकिमों के सामने ऐसे हो जाते हैं कि, वो दिन को रात कहें तो यह भी उनकी हां में हां मिलाना ज़रूरी ख़्याल करते हैं। जो वो करें, उनके खुशामद में यह भी वैसा ही कर गुज़रते हैं। जिन्हें फ़रमाया गया, "बादशाह के दीन का लोगों पर असर होता है।" लोग बादशाह के दीन के रंग में रंग जाते हैं। मगर यह आज तक ग़ालेबन ना हुआ था कि महज़ उनके क़ौल व फ़अ़ल को दलीले जवाज़ ठहराया गया हो और शरीअ़त

उनके हाथ में या उनके क़ौल व फेअ़ल के ताबेअ़ समझी गई हो। अब जो ना हो कम है। फिर अख़बा. री–इश्तेहारी प्रोपगंडे किसे मालूम नहीं अ़रब व मिस्र के उलमा का नाम बदनाम किया जाता है। हरगिज़ उलमा ऐसी ख़बीस बात नहीं कह सकते। हरगिज़ ऐसी शनी अम्र से राज़ी नहीं हो सकते। हरगिज़ ऐसे नजस काम को पसंद नहीं कर सकते। उलमा को बदनाम करने वाले बदनाम कुनिंदए नाम चन्द हिन्द. ुस्तान ही में नहीं हैं, हर जगह हैं। यहां हिन्दुस्तान ही में देखो, ऐसे लोग बरसाती हश्रातुल अर्ज़ की तरह फैले हुए हैं। कैसे–कैसे अजहल आज–कल मौलाना और अ़ल्लामा बने हुए हैं। हिंग लगे ना फिटकरी, रंग भी चोखा। पहले तो फ़रेबदही को बड़े–बड़े अ़मामे और लाम्बे–चौड़े जुब्बे दरकार होते थे, अब तो चूरन वालों की तरह ज़बान खोल ली या ठेठरों में नौकरी करली और वहां से तक़रीर में कुछ महारत और गाने की मश्क़ पैदा करली और मौलाना हुआ और बड़े से बड़ा मौलाना हो तो जेल की हवा खाली और अ़ल्लामा की डिग्री के लिए तो इतना भी नहीं घर बैठे अ़ल्लामा बन जाता है। अख़बारों में औंधे–सीधे मज़मून लिखे और अपने नाम के साथ अ़ल्लामा का लफ़्ज़ खुद ही लिख दे। अपने आदमी से लिखवाया करे। दो–चार आदमी ऐसे बना लिए, जो अ़ल्लामा–अ़ल्लामा कहा करें, हिन्दुस्तान भर में अ़ल्लामा मशहूर हो जाएगा। ولاحول ولاقوۃ الاباللہ

अगर यह वाक़िआ है कि, मिस्र के कुछ लोगों ने हज की फ़िल्म के साथ इज़्हारे रज़ा किया, उसे जाईज़ बताया है, तो वो ऐसे ही मौलाना और ऐसे ही अ़ल्लामा हैं। हरगिज़ किसी आ़लिमे दीन की यह नापाक हरकत यह नजस कौल नहीं हो सकता। यहां दहली के एक मशहूर आ़म रूसवाबीन अल–ख़्वास वलअ़व्वाम हस्ती भी तो सिनेमा की फ़िल्मों को देखती और उसकी तारीफ़ें लिखती और छापती है। ऐसे ही मिस्र के बअ़ज़ अ़ब्दुल दुनिया वल–दिरहमे दीन से आज़ाद जाहिलों ने हज की फ़िल्म को पसंद किया और देखा–दिखाया होगा और बिलफ़र्ज़ अगर दुनिया भर के ख़्वास व अ़व्वाम किसी ऐसे हराम का इरतेकाब और उसे पसंद करें तो क्या उससे वो हराम जाईज़ हो जाएगा? हरगिज़ नहीं। ولاحول ولاقوۃ الاباللہ۔ واللہ تعالیٰ اعلم

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दानों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بینوا توجروا!

सवाल नं. २५ :

ज़ैद सुन्नी कहता है, दावते ग़ैर इस्लामी का गुमराहकुन धरम ख़्वाबों पर है और मुसलमनाने अहले सुन्नत हक़ीक़त पसंद हक़ीक़तेशनास हैं। शरीअ़ते मुतहरा का हर जुज़ व कुल हक़ीक़त ही हक़ीक़त है, ना कि मनघड़त ख़्वाब।

अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलात उनकी अ़ता से सालेहीने रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अजमईन के ख़्वाब यक़ीनन सच्चे हैं। वो शरअ़ शरीफ़ में हुज्जत का मक़ाम रखते हैं। नमूने के तौर पर इस नामनेहाद दावते इस्लामी के तंख़्वाह ख़्वार मुक़ल्लीदीन व मुत्तबईन के गढ़े हुए कुछ ख़्वाब गुज़िश्ता औराक़ में आपने मुलाहिज़ा फ़रमाए।

बकर दावती कहता है कि, ख़्वाब देखना किसी के बस में नहीं। ख़्वाब के लिए और उस की सच्चाई के लिए हर–हर ख़्वाब में दो–दो गवाहानेशरई कहां से लाए जाएं।

ज़ैद सुन्नी कहता है, ख़्वाबों का देखना तो बस में नहीं, लेकिन अपने नामनेहाद अमीर की तअ़ल्ली के पेशे नज़र और معاذاللہ तौहीने अम्बिया अलैहिमुस्सलाम से बचने के लिए ख़्वाबों को शाए ना करना तो बस में था।

दरयाफ़्त तलब अम्र यह है कि, दानों में कौन हक़ पर है? ज़ैद सुन्नी या बकर दावती? بینوا توجروا!

अल–मुस्तफ़्तीयान :

साहबज़ादगाने वाला तबार दरगाहे मअ़ल्लअ़ हुज़ूर सुलतानुल हिन्द
कारसाज़ ग़रीब नवाज़ रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो,
अजमेरशरीफ़, राजस्थान–100503, इंडिया
सैय्यद फ़रीदुल हसन चिश्ती,
रज़ा महल, हश्मती चिश्ती मरकज़ के सामने
सैय्यद हम्मादुल हसन चिश्ती,
सैय्यद हस्सानुल हसन चिश्ती,
सैय्यदना दारूज़्ज़मां चिश्ती, हसन मंज़िल
सैय्यद नदीमुल हसन चिश्ती, चिश्तीया मरकज़
अलहाज हाफ़िज़ सैय्यद फैय्याज़ हुसैन मोईनी चिश्ती, फ़ज़ील मंज़िल
6 सफ़रूलमुज़फ़्फ़र 1436 हि.
बमुताबिक़ २६ नोव्हेम्बर 2014 ई.

क़िस्त. ४

मुशरिक कौन ?

अज़ : मौलाना मुहम्मद आक़िब खरबे क़ादरी सक़ाफ़ीशाफ़ई

मुश्रिकीने अ़रब और सुन्नीयों के अ़क़ीदे का फ़र्क़ :

क़ारईने किराम ! आपने देख लिया कि अपनी ख़ुदसाख़्ता तौहीद के यह झूटे अ़लमबरदार किस तरह कुरआने करीम की मानवी तहरीफ़ के संगीन जुर्म के मुरतकब हैं। अब रहा यह सवाल कि कुफ़्फ़ारे अ़रब भी बुतों से इसी अ़क़ीदे के साथ मदद मांगते थे, जिस अ़क़ीदे के साथ हम अहले सुन्नत अम्बिया व औलिया से मदद मांगते हैं। यानी ख़ालिक़े हक़ीक़ी अल्लाह جل جلاله ही को मानते थे और बुतों में अ़ताई कूव्वत तस्लीम करते हुए उन्हें अल्लाह جل جلاله की बारगाह में वसीला और सिफ़रशी बनाते थे।

तो अब इस का जवाब यह है कि, कुफ़्फ़ारे अ़रब और हम सुन्नी मुसलमानों के अ़क़ीदे में ज़मीन व आसमान से भी ज़्यादा फ़र्क़ है। इस लिए कि कुफ़्फ़ारे अ़रब सिरे से कलमए तैय्यबा لا اله الا الله محمد رسول الله ही का इंकार करते थे और अल्लाह के साथ बुतों को भी ख़ुदा और मअ़बूद कहते थे। चुनांचे इरशादे बारी तआ़ला है, तुर्जमा : "**बेशक जब उनसे कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा किसी की बंदगी नहीं, तो ऊंचे खींचते थे और कहते थे, क्या हम अपने ख़ुदाओं को छोड़ दें, एक दीवाना शाअ़र के कहने से?**" (पा. 23, स. 35, 36)

जब कि हम अहले सुन्नत لا اله الا الله محمد رسول الله (جل جلاله व صلى الله عليه وآله وسلم) का इक़रार करते हैं। अल्लाह के सिवा और किसी को भी ख़ुदा या इबादत का मुस्तहिक नहीं समझते और नबी और वली को अल्लाह का बंदा ही समझते हैं।

मुश्रिकीने अ़रब अपने बुतों को अल्लाह का शरीक ठहराते थे। तर्जुमा : "**और शिर्क करने वाले जब अपने शरीकों को देखेंगे, कहेंगे, ऐ हमारे रब ! यह हैं हमारे शरीक, कि हम तेरे सिवा पूजते थे, तो वो उन पर बात फेंकेंगे कि तुम बेशक झूटे हो।**" (पा. 14, अल–नहल–86)

तर्जुमा : "**हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारशियों को नहीं देखते जिनका तुम अपने में साझाा बताते थे।**" (पा. 7, अल–ईनाम 94)

जब कि हम अहले सुन्नत यह कहते हैं कि, "**अल्लाह का कोई शरीक हो ही नहीं सकता, ना कोई नबी, ना कोई वली और ना कोई और।**"

मुश्रिकीने अ़रब दौराने हज यह तलबीया पुकारते, तर्जुमा : "**ऐ अल्लाह ! हम तेरे हुज़ूर हाज़िर हैं। तेरा कोई शरीक नहीं, सिवाए उस शरीक के जो तेरा ही है। तू उस का मालिक है और जिन पर उसकी मिल्कीयत है, उसका भी मालिक है।**" (सही मुस्लिम शरीफ़, किताबुल हज, ह.नं. 2857)

इन कलमात में मुश्रिकीन ने सराहतन अल्लाह के साथ किसी शरीक के वजूद का इक़रार किया है। जब कि हर कोई जानता है कि, हम अहले सुन्नत का हरगिज़ ऐसा अ़क़ीदा नहीं और हम भी इन अलफ़ाज़ को शिर्क कहते हैं। मगर अशफ़ाक़ सनाबली ने बड़ी बेशर्मी के साथ मुश्रिकीन के इन कलमात

को नक़्ल कर के उन्हें हम अहले सुन्नत पर चस्पां किया है। (मुर्दों से तवस्सुल और इस्तेआनत शिर्क है—स. 10)

अल्लाह ﷻ इरशाद फ़रमाता है, तर्जुमा : ''**हां ! ख़ालिस अल्लाह ही की बंदगी है और वो जिन्हों ने इसके सिवा और वाली बना लिए। कहते हैं, हम तो उन्हें सिर्फ़ इतनी बात के लिए पूजते हैं कि, यह हमें अल्लाह के पास नज़दीक करदें। अल्लाह उनमें फ़ैस्ला कर देगा, उस बात का, जिस में इख़्तेलाफ़ कर रहे हैं। बेशक अल्लाह राह नहीं देता, उसे जो झूटा, बड़ा, नाशुक्रा हो।**'' (पा. 23, अल–ज़मर–3)

इस आयत की तफ़्सीर में हाफ़िज़ इब्ने कसीर दमशक़ी ने कहा, तर्जुमा : ''**मुश्रिकीन ने बुतों की पूजा इस लिए की, ताकि वो झूटे खुदा मदद करने में, रिज़्क़ देने में और इसी तरह के दुनियावी मआ़मलात में अल्लाह के हुज़ूर उनकी सिफ़ारिश करें और रही आख़ेरत, तो यह लोग इस को झुटलाते और इंकार करते थे।**'' (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

इस मक़ाम पर दो बातें क़ाबिले ग़ौर हैं, (१) मुश्रिकीन ने बुतों को अपने दुनियावी मआ़मलात में वसीला और सिफ़ारशरी बनाया, (२) सिफ़ारशी और वसीला बनाने के सिलसिले में मुश्रिकीन ने बुतों की पूजा की। जैसा कि आयत में उन लोगों का यह इक़रार मौजूद है कि, ''**हम तो उन्हें सिर्फ़ इतनी बात के लिए पूजते हैं कि यह हमें अल्लाह के पास नज़दीक कर दें।**''

अब सवाल यह पैदा होता है कि, उन मुश्रिकों का शिर्क इन दोनों बातों में से कौनसा है? रही पहली बात यानी किसी ग़ैरूल्लाह को अल्लाह की बारगाह में वसीला और सिफ़ारशी बनाना। तो यह अ़मल अगरचे इंतेहाई दर्जे की जहालत और हिमाक़त पर मुबनी है कि मिट्टी और पत्थर के बेजान और हक़ीर बुत जिन की अल्लाह की बारगाह में कोई वक़्अ़त नहीं, उन्हें सिफ़ारिश और वसीले के क़ाबिल समझा जाए। मगर यह अ़मल हरगिज़ शिर्क नहीं। इस लिए कि जो मआ़मला अल्लाह के साथ ख़ास है। उसे किसी ग़ैरूल्लाह के साथ करना शिर्क है और अल्लाह इस बात से पाक है कि ख़ुद उस की ज़ात को किसी की बारगाह में वसीला या सिफ़ारशी बनाया जाए। रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया, तर्जुमा : ''**अल्लाह को उसकी मख़लूक़ में से किसी की बारगाह में सिफ़ारशी नहीं बनाया जा सकता। अल. लाह की शान इससे बुलंद है।**'' (अबूदाऊद शरीफ़– रक़म 4728)

नीज़ जो अ़मल शिर्क होता है, वो हर हाल, हर दौर, हर ज़माने में और हर किसी के साथ शिर्क होता है। जब कि इस बात को वहाबिया भी तस्लीम करते हैं कि ज़िन्दा शख़्स को अल्लाह की बारगाह में वसीला और सिफ़ारशी बनाना जाईज़ है। जैसा कि अशफ़ाक़ सनाबली ने भी इस का इक़रार किया है, सूरए निसा की आयत नं. ६४ की मनघड़त तफ़्सीर करते हुए लिखा, ''**यहां**'' **''जाऊक'' से मुराद दुनियावी ज़िन्दगी में आपके पास आना है। ना कि आपकी क़ब्रे मुबारक के पास।**'' (स. ३) और बरोज़े क़यामत अल्लाह के रसूल ﷺ के हुक्म से उम्मत की शिफ़ाअ़त फ़रमाएंगे।

और रही दूसरी बात यानी मुश्रिकीन का बुतों की पूजा करना। तो बिलाशुबह उन का यह अ़मल शिर्क है। उन लोगों ने वसीले और सिफ़ारिश के नाम पर बुतों की पूजा की, जिस की वजह से यह लोग मुश्रिक हुए। मगर इसके बरख़िलाफ़ हम अहले सुन्नत अगरचे अम्बिया व औलिया को अल्लाह की बारगाह में वसीला बनाते हैं और अपने नबीए करीम ﷺ से शिफ़ाअ़त तलब करते हैं, मगर

उन बरगुज़ीदा हज़रात को ख़ुदा या मअ़बूद नहीं बल्कि अल्लाह के बंदे ही मानते हैं और हरगिज़ उनको इबादत के लाएक़ नहीं समझते बल्कि इबादत के लाएक़ तो सिर्फ़ अल्लाह ही को जानते हैं। लेहाज़ा यह और इस जैसी दिगर आयतों का ग़लत मतलब ले कर अहले सुन्नत को मुश्रिक क़रार देना सरासर ज़ुल्म है।

मुश्रिकीने अ़रब बुतों में माफ़ूकुल असबाब कामों की कूव्वत अगर अल्लाह की अ़ता से मानते थे तो अगरचे यह उनकी जहालत और हिमाक़त थी। मगर उनका यह अ़मल शिर्क नहीं था। इस लिए कि माफ़ूकुल असबाब कामों की अ़ताई कूव्वत तो फ़रिशतों के लिए भी साबित है, जिसके वहाबिया भी क़ाएल हैं। मस्लन मलकुलमौत अलैहिस्सलाम बग़ैर किसी ज़ाहिरी सबब के महज़ अल्लाह की अ़ता से जानदारों की रूह क़ब्ज़ फ़रमाते हैं। हमल ठहरने के चार महिने और दस दिन बाद फ़रिशता, अल्लाह तआ़ला के हुक्म से बग़ैर किसी ज़ाहिरी सबब के मां के पेट में मौजूद बच्चे के जिस्म में जान डालता है, वग़ैरह–वग़ैरह और ऐसा नहीं हो सकता कि, किसी सिफ़त को किसी एक मख़लूक़ में मानना शिर्क हो और उसी सिफ़त को दूसरी मख़लूक़ में मानना इस्लाम हो।

जो सिफ़त मख़लूक़ की है, वो हरगिज़ ख़ालिक़ की नहीं हो सकती और जो सिफ़त ख़ालिक़ की है, वो हरगिज़ मख़लूक़ में नहीं पाई जा सकती। चुनांचे इब्ने तैमिया ने अपने एक फ़तवे में लिखा, तर्जुमा : ''वो तमाम मशाईख़, जिनकी दीन में इक़्तेदा की जाती है, इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं, जिस पर उम्मत के इस्लाफ़ और अईम्मा मुत्तफ़िक़ हैं कि ख़ालि. क़े सुब्हानहु मख़लूक़ात से मुबायन है और उसकी मख़लूक़ात में उसकी ज़ात की कोई सिफ़त नहीं और ना ही उसकी ज़ात में उसकी मख़लूक़ात की कोई सिफ़त है।'' (मजमूअ़ अल फ़तावा–जि. १०, स. २२३, मत्बूआ़ : मिनल सऊदिया)

इसी लिए हम ने अपने रिसाले ''तवस्सुल व इस्तेआ़नत का सही मफ़्हूम'' में शिर्क की यह तारीफ़ की, ''अल्लाह की उलूहियत और उसके ख़्वास में किसी को शरीक ठहराना शिर्क है।'' (स. ४) अल्लाह की उलूहियत में किसी को शरीक करने का मतलब है कि, किसी ग़ैरूल्लाह की इबादत की जाए या उसे इबादत का मुस्तहिक़ समझा जाए। जैसा कि अ़रब के बुत परस्त अल्लाह के साथ अपने बुतों को भी इबादत का मुस्तहिक़ समझते थे और उनकी पूजा किया करते थे और अल्लाह के ख़्वास में किसी को शरीक ठहराने का मतलब यह है कि, जो ख़ूबियां व कमालात अल्लाह के लिए साबित हैं, उन्हें किसी ग़ैर के लिए भी तस्लीम करना और अल्लाह की हर ख़ूबी उसकी अपनी ज़ाती है। जबकि मख़लूक़ की हर ख़ूबी उसकी उपनी ज़ती है। जबकि मख़्लूक़ की हर ख़ूबी अल्लाह की अ़ता से है, लेहाज़ा अ़ताई है। इसी तरह अल्लाह की हर सिफ़त ग़ैर मख़लूक़ और क़दीम यानी ग़ैर फ़ानी है। जबकि मख़लूक़ात की तमाम सिफ़ात मख़लूक़ और हादिस यानी फ़ानी हैं।

इसी लिए हम अहले सुन्नत अम्बिया और औलिया में माफ़ूकुल असबाब कामों के इख़्तेयार को अल्लाह की अ़ता से मानते हैं और हमारा अ़क़ीदा है कि अम्बिया और औलिया का यह इख़्तेयार मख़लूक़ और हादिस व फ़ानी है। जिस तरह फ़रिशतों में माफ़ूकुल असबाब कामों की ताक़त अ़ताई, मख़लूक़ और हादिस व फ़ानी है। मगर मुसलमानों को मुश्रिक बनाने के शौक़ में वहाबियों ने मख़लूक़ की सिफ़त में

शरीक ठहराने को भी शिर्क कह डाला। चुनांचे अशफ़ाक़ सनाबली ने अपने किताबचा (स. ६) में लिखा, ''क़ादरी साहब ने शिर्क की यह तारीफ़ की है कि, अल्लाह की उलूहियत और उसके ख़्वास में किसी को शरीक ठहराना। इस तारीफ़ से क़ादरी साहब ने शिर्क से मुसलमानों को बिल्कुल्लीया पाक व साफ़ कर दिया। अब मुसलमान जिस की दुहाई दे, उसे मुश्रिक नहीं कहा जा सकता। العیاذباللہ जब कि मआमला इस के बरअ़क्स है।''

जी हां ! इस फ़क़ीर ने मुसलमानों को वहाबियों के मनघड़त शिर्क के इलज़ाम से ज़रूर पाक व साफ़ किया है। जबकि वहाबिया, अल्लाह के नहीं बल्कि मख़लूक़ के ख़्वास में नबीयों और वलियों को शरीक करने की वजह से करोड़ों मुसलमानों को मुश्रिक और इस्लाम से ख़ारिज ठहराते हैं। ولاحول ولاقوۃ الاباللہ العلی العظیم

मुश्रिकीने अ़रब का असल शिर्क यह था कि, वो अल्लाह के अ़लावा अपने बुतों को भी इबादत का मुस्तहिक़ मानते थे। बल्कि इस मआमले में वो अपने बुतों को अल्लाह के बराबर ठहराते थे। चुनांचे क़यामत के दिन इक़रार करेंगे, तर्जुमा : ''**ख़ुदा की क़सम ! बेशक हम खुली गुमराही में थे। जबकि तुम्हें रब्बुल आ़लमीन के बराबर ठहराते थे।**'' (पा. 19, सूरएशोअ़रा–97, 98)

जबकि हमारा अ़क़ीदा यह है कि, अल्लाह के बराबर कोई नहीं, वही इबादत का मुस्तहिक़ है, उसके सिवा कोई भी इबादत का मुस्तहिक़ नहीं, ना कोई नबी, ना वली और ना कोई और।

मुश्रिकीने अ़रब अपनी ज़बान से अल्लाह की ख़ालक़ियत और हाक. मियत का इक़रार करते थे। तर्जुमा : ''**और अगर तुम उन से पूछो, आसमान और ज़मीन किसने बनाए? तो ज़रूर कहेंगे, अल्लाह ने।**'' (ज़ुमर–३८)

मगर यह इक़रार महज़ ज़बानी था। वरना उनके दिल अल्लाह की मुहब्बत से ख़ाली थे और ना ही वो दिल से अल्लाह को मअ़बूदे बरहक़ तस्लीम करते थे। इस लिए कि अगर वो दिल से अल्लाह की रज़ा और उसका कुर्ब चाहते तो जब मुसलमानों ने उनके बुतों को बुरा कहा तो उसके बदले में वो अल्लाह को बुरा–भला ना कहते। इसी लिए अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को कुफ़्फ़ार के बुतों को सब्बा व शतम करने से मना फ़रमाया। तर्जुमा : ''**और उन्हें बुरा ना कहो, जिनको वो अल. लाह के सिवा पूजते हैं कि वो अल्लाह की शान में बेअदबी करेंगे, ज़्यादती और जहालत से।**'' (पा. 7, अल–ईनाम–108)

ईसाले सवाब

ईसाले सवाब के मानी :

मस्अ़ला :

ईसाले सवाब यानी कुरआन मजीद या दुरूद शरीफ़ का कलमए तैय्यबा या किसी नेक अ़मल का सवाब दूसरे को पहुंचाना जाईज़ है।

हर क़िस्म की इबादत का सवाब दूसरे को पहुंचाया जा सकता है :

इबादते मालिया या बदनिया फ़र्ज़ व नफ़िल सब का सवाब दूसरों को पहुंचाया जा सकता है। ज़िन्दों के ईसाले सवाब से मुर्दों को फ़ाएदा पहुंचता है। किताबे फ़िक़ह व अ़काईद में इस की तसरीह मज़कूरा है। हिदाया और षरहे अ़क़ाईदे नस्फ़ी में इस का बयान मौजूद है। इस को बिदअ़त कहना हटधरमी और जहालत है। हदीस से भी इस का जाईज़ होना साबित है।